हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 303, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 27 अप्रैल, 2023 दिन गुरुवार | गाजीपुर/वाराणसी

भारत विविधता को विशेषता के रूप में जीने वाला देश : मोदी

सौराष्ट्र तमिल संगमम समारोह में वर्चुअली शामिल हुए प्रधानमंत्री

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सौराष्ट्र तमिल संगमम के समापन समारोह को संबोधित किया। साथ ही उन्होंने श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित सौराष्ट्र तमिल संगम प्रशस्ति पुस्तक का विमोचन किया। गुजरात में आयोजित किए गए इस 10 दिवसीय सम्मेलन में 3000 से अधिक लोग एक विशेष ट्रेन सौराष्ट्री इन तमिल से सोमनाथ आए थे। सौराष्ट्र तमिल संगमम का आयोजन 17 अप्रैल से शुरू हुआ था जिस का समापन आज 26 अप्रैल को सोमनाथ में हुआ है।

कार्यक्रम में वर्चुअली उपस्थित हुए पीएम- पीएम मोदी ने अपने संबोधन के दौरान कहा, ह्यमैं गद-गद हृदय से आज तमिलनाडु से आए अपनों के बीच वर्चुअली उपस्थित हूं। इतनी बड़ी संख्या में आप सब अपने पूर्वजों की धरती पर आए हैं, अपने घर आए हैं। आपके चेहरों की खुशी को देखकर मैं कह सकता हूं कि आप अनेक यादें और भावुक अनुभव यहां से लेकर जाएंगे। इस महान सौराष्ट्र-तमिल संगमम के माध्यम से, हम अतीत की अमूल्य स्मृतियों को फिर से देख रहे हैं, वर्तमान की आत्मीयता और अनुभवों को देख रहे हैं, और भविष्य के लिए संकल्प और प्रेरणा ले रहे हैं।

भारत है विविधता को विशेषता के रूप में जीने वाला देश- वहीं, पीएम ने यह भी कहा कि भारत विविधता को विशेषता के रूप में जीने वाला देश है। हम विविधता को मनाने वाले लोग हैं। हम अलग-अलग भाषाओं और बोलियों को, कलाओं और विधाओं को मनाते हैं। हमारी आस्था से लेकर आध्यात्म तक, हर जगह विविधता है। हमारी ये विविधता हमें बांटती नहीं है बल्कि हमारे बंधन को मजबूत बनाती है। ऐसी है हमारे देश की खूबसूरती है। भारत विविधता को विशिष्टता के रूप में जीने वाला देश है।

सांस्कृतिक टकराव नहीं तालमेल पर दें बल- पीएम ने कहा कि हमें सांस्कृतिक टकराव नहीं तालमेल पर बल देना है। हमें संघर्षों को नहीं संगमों और समागमों को आगे बढ़ाना है। हमें भेद नहीं खोजने... भावनात्मक संबंध बनाने हैं। यही भारत की वो अमर परंपरा है जो सबको साथ लेकर समावेश के साथ आगे बढ़ती है, सबको स्वीकार कर आगे बढ़ती है।

सौराष्ट्र में दिखा दो प्राचीन धाराओं का संगम- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यक्रम के समर्थन में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के अमृतकाल में हम सौराष्ट्र तमिल संगमम जैसे सांस्कृतिक आयोजनों की एक नई परंपरा के गवाह बन रहे हैं। कुछ महीने पहले बनारस में काशी तमिल संगमम का आयोजन हुआ था जिसकी पूरे देश में चर्चा हुई थी। आज सौराष्ट्र की धरती पर एक बार फिर हम भारत की दो प्राचीन धाराओं का संगम होता देख रहें हैं।

तुष्टिकरण का काम करती है कांग्रेस, धर्म के आधार पर आरक्षण देना असंवैधानिक : योगी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज कर्नाटक में भाजपा के लिए चुनाव प्रचार करने पहुंचे हैं। उन्होंने मांड्या में अपने संबोधन के दौरान कांग्रेस पर जबरदस्त तरीके से निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस विकास की बात कर बड़े-बड़े दावे कर रही है लेकिन उनकी विकास की हकीकत क्या थी, पंचवर्षीय योजना। एक प्रोजेक्ट बनता था एक पंचवर्षीय योजना लग जाती थी। उन्होंने कहा कि अगली पंचवर्षीय योजना में उसका शिलान्यास होता था, तीसरी में कायार्वंटन होता था। चौथी पंचवर्षीय योजना के शुरू होते ही वह प्रोजेक्ट दम तोड़ देता था और प्रोजेक्ट कभी पूरा नहीं होता था। योगी ने कहा कि एक ओर डबल इंजन की सरकार PFI को बैन करती है और दूसरी ओर कांग्रेस तुष्टिकरण का काम करती है, उन्हें धर्म के आधार पर आरक्षण देने का काम करती है। उन्होंने कहा कि धर्म के आधार पर आरक्षण भारत के संविधान के विपरीत है, असंवैधानिक है। आपको बता दें कि कर्नाटक में मुस्लिम आरक्षण का मुद्दा काफी गर्म है। गृह मंत्री अमित शाह भी मुस्लिम आरक्षण को गलत बता चुके हैं। शाह ने कर्नाटक में मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के 2बी श्रेणी में मुसलमानों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण को खत्म करने के फैसले को भी सही ठहराया। अमित शाह ने साफ तौर पर कहा कि हमने आरक्षण के अंदर बड़ा बदलाव किया। संविधान धर्म के आधार पर किसी को आरक्षण की अनुमति नहीं देता। अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने वोट बैंक प्राप्त करने के लिए मुस्लिम आरक्षण दिया था, भाजपा की सरकार ने 4% मुस्लिम आरक्षण को खत्म करके लिंगायत और दलित समाज और सभी के आरक्षण में बढ़ोत्तरी की। कर्नाटक में बसवराज बोम्मई नीत सरकार ने विधानसभा चुनाव से ठीक पहले मुसलमानों के लिए आरक्षण खत्म करने का फैसला किया था। कर्नाटक सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग के मुसलमानों के लिए चार फीसदी कोटा समाप्त करते हुए सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में आरक्षण की दो नयी श्रेणियों की घोषणा की थी।

दंतेवाड़ा के अरनपुर में आईईडी ब्लास्ट, 10 जवान शहीद, एक नागरिक की भी मौत

दंतेवाड़ा। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में बुधवार को नक्सली हमले में 10 जवान शहीद हो गए। वहीं एक नागरिक भी मारा गया है। सभी जवान डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) के हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के अनुसार, नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना पर जवान सर्चिंग के लिए निकले थे। इसी दौरान नक्सलियों ने आईईडी ब्लास्ट कर दिया। इसकी चपेट में जवानों का वाहन भी गया। इसमें 10 जवान शहीद हो गए। दूसरी ओर गृहमंत्री अमित शाह ने भी नक्सली हमले को लेकर मुख्यमंत्री से बात की है। उन्होंने हर संभव मदद का आश्वासन दिया है। वारदात अरनपुर थाना क्षेत्र में हुई है। बताया जा रहा है कि जवान एक प्राइवेट वाहन से निकले थे। हमले में एक नागरिक की भी मौत हुई है। हमले के बाद जवानों की ओर से भी जवाबी कार्रवाई की गई। इसमें कुछ नक्सली भी घायल हुए हैं। हालांकि अभी तक वारदात को लेकर अफसरों की ओर से कुछ नहीं कहा गया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने वारदात की पुष्टि करते हुए शोक जताया है। उन्होंने कहा है कि, इस प्रकार की जानकारी है और यह दुखद है। जो जवान शहीद हुए हैं उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। यह लड़ाई अंतिम दौर में चल रही है और नक्सलियों को किसी कीमत पर छोड़ा नहीं जाएगा। हम योजनाबद्ध तरीके से नक्सलवाद को खत्म करेंगे।

सड़कों से कूड़ा हटा न सांड... हर सवाल के जवाब में भाजपा कहती है तमंचा : अखिलेश

गाजियाबाद। सड़कों से कूड़ा और सांड न हटा पाने वाली भारतीय जनता पार्टी निकाय चुनाव में क्या हुंकार भरेगी। उनसे (भाजपा) महंगाई पर सवाल करो, बेरोजगारी पर सवाल करो या किसी अन्य मुद्दे पर सवाल करो, सबके जवाब में वह सिर्फ तमंचा कहकर मुद्दे को भटकाने का काम करते हैं। जनता अब परिवर्तन चाहती है, परिवर्तन होगा। निकाय चुनाव के लिए नामांकन की तिथि खत्म हो चुकी है, प्रत्याशी मैदान में उतर चुके हैं। प्रत्याशियों के समर्थन में रजनीतिक दल के नेता भी प्रचार-प्रसार में जुट गए हैं। इसी क्रम में बुधवार को उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव गाजियाबाद में महापौर पद पर चुनाव लड़ रहीं सपा प्रत्याशी पूनम यादव के घर पहुंचे। जहां उन्होंने मीडिया से बातचीत करते हुए भाजपा पर निशाना साधा, आरोप लगाया कि भाजपा बुनियादी सुविधाएं ही दुरुस्त नहीं कर सकी है, स्मार्ट सिटी का सपना दिखाकर पूरा नहीं किया है। इससे पहले वह शास्त्री नगर में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव के समधी जितेंद्र यादव के भाई रवि यादव के घर आयोजित एक कार्यक्रम में शोक व्यक्त करने पहुंचे थे। सपा रालोद गठबंधन के बीच दरार को लेकर जब अखिलेश यादव से सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि गठबंधन ठीक है, मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। लोकतंत्र में हर किसी को चुनाव लड़ने का अधिकार है, हम अपने कार्यकर्ता को निराश नही करेंगे। सपा प्रत्याशी के घर अखिलेश यादव के पहुंचने पर पत्रकारों से धक्का मुक्की भी हुई। सपा कार्यकताओं को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। इस पर सवाल करने पर महापौर प्रत्याशी पूनम यादव के पति सिकंदर यादव ने कहा कि अखिलेश यादव के आने की सूचना पर कार्यकताओं की भीड़ अधिक हो गयी थी। हर कोई अखिलेश यादव से मिलना चाहता था, जिस कारण समस्या हुई।

अतीक-अशरफ हत्या मामले में यूपी सरकार भी पहुंची सुप्रीम कोर्ट, जांच की मांग के मुद्दे पर दायर की कैविएट

नई दिल्ली। माफिया अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की पुलिस की मौजूदगी में हत्या को लेकर सुप्रीम कोर्ट में पहले ही याचिकाएं दायर हो चुकी हैं। इनमें मामले की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज की अध्यक्षता में कमेटी बनाने की मांग की गई है। अब इस मामले में यूपी सरकार ने एक कैविएट दाखिल की है। योगी सरकार ने इस कैविएट के जरिए मांग की है कि बिना उसका पक्ष सुने इस मामले में कोई आदेश पास न किया जाए। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट में अतीक और अशरफ की हत्या की जांच के लिए सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व जज की अध्यक्षता में एक कमेटी के गठन की मांग की गई थी। कोर्ट ने इस मामले को 28 अप्रैल के लिए लिस्ट करने का निर्देश दिया है। यह याचिका वकील विशाल तिवारी ने दायर की है, जिन्होंने यूपी में 2017 के बाद से हुए 183 एनकाउंटरों की जांच की मांग की है। तिवारी ने चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस पीएस नरसिम्हा की बेंच के सामने इस मामले में तत्काल सुनवाई की मांग की थी। हालांकि, कोर्ट ने इस मामले को 28 अप्रैल को लिस्ट करने के निर्देश दिए। पूर्व आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर ने भी सुप्रीम कोर्ट में लेटर पिटिशन दाखिल करके अतीक

अहमद और उसके भाई की हत्या मामले की सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट की निगरानी में सीबीआई जांच कराने की मांग की है। अमिताभ ठाकुर ने याचिका में कहा है कि 'भले ही अतीक अहमद और उसका भाई अपराधी हों मगर जिस तरह से उनकी हत्या हुई, उससे इस घटना के राज्य पोषित होने की पर्याप्त संभावना दिखती है।'

शरद पवार ने निकाली संजय राउत के दावों की हवा? अजीत पवार के पोस्टर और मुख्यमंत्री बदलने की चर्चाओं पर दिया बयान

नई दिल्ली। महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे की सरकार को लेकर तमाम दावे किए जा रहे हैं। शिवेसना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने हाल ही में कहा था कि एकनाथ शिंदे सरकार कुछ ही दिनों की मेहमान है। राज्य की शिंदे सरकार जाएगी और राज्य में जल्द ही विधानसभा चुनाव होंगे। वहीं, इसी बीच संजय राउत के दावे को लेकर एनसीपी प्रमुख शरद पवार की प्रतिक्रिया सामने आई है।

शरद पवार ने बुधवार को संजय राउत के दावे पर अपनी प्रतिक्रिया दी। संजय राउत ने कहा कि मुझे इसकी जानकारी नहीं है। पवार ने कहा, "संजय राउत ने सीएम बदलने के बारे में जो भी कहा है, वह उनके खुद के सूत्रों से कहा होगा। सीएम को लेकर मुझे पता नहीं है।" हाल ही में महाराष्ट्र में एनसीपी नेता और पूर्व डिप्टी सीएम अजीत पवार के पोस्टर लगाए गए थे। इन पोस्टरों में लिखा था कि महाराष्ट्र के अगले सीएम अजीत दादा पवार होंगे। इसको लेकर शरद पवार ने प्रतिक्रिया दी है। शरद पवार ने इस पर कहा, "खुद अजीत पवार ने कहा है कि उन्हें भविष्य का सीएम बताने वाले पोस्टर लगाना पागलपन है।" गौरतलब है कि शिवेसना (यूबीटी) के मुखपत्र सामना में लिखा गया है कि बीजेपी आलाकमान की ओर से मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से इस्तीफा तैयार करने को कहा गया है। मुखपत्र 'सामना' में छपे एक लेख में कहा गया कि इस वजह सीएम शिंदे बीजेपी से नाराज चल रहे हैं। नाराजगी के चलते ही शिंदे अपने गांव चले गए हैं। शिंदे वहां तीन दिन छुट्टियां मनाएंगे। सामना में ये भी लिखा गया कि अजीत पवार कुछ विधायकों के साथ भाजपा को समर्थन देंगे, ऐसी चर्चा शुरू थी। हालांकि, अजीत पवार ने मीडिया के सामने स्पष्ट किया था कि मैं आजीवन एनसीपी में रहूंगा और शरद पवार के मार्गदर्शन में काम करूंगा।

सरकार सभी भ्रष्ट नेताओं की जांच करेगी चाहे कितने भी प्रमुख क्यों न हों : राजनाथ सिंह

बेलगावी (कर्नाटक)। कर्नाटक विधानसभा चुनाव के लिए मतदान में दो सप्ताह से भी कम समय बचा है। भाजपा और कांग्रेस के नेताओं ने चुनाव प्रचार अभियान में पूरा जोर लगा रखा है। दोनों पार्टियों के बीच परस्पर विरोधी बयानबाजी का दौर भी चरम पर है। इसी बीच रक्षा मंत्री और भाजपा नेता राजनाथ सिंह ने बुधवार को कर्नाटक के धारवाड़ में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। राजनाथ सिंह ने कहा कि आज भ्रष्टाचार पर हमला हो रहा है, बड़े नेता जेल जा रहे हैं... वे (विपक्ष) दावा करते हैं कि यह जांच जानबूझकर की गई है। यह सरकार सभी भ्रष्ट नेताओं की जांच करेगी, चाहे वे कितने भी प्रमुख क्यों न हों। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने धर्म के आधार पर आरक्षण देकर भारत के संविधान की अवमानन की। 1975 में मनमाने तरीके से संविधान में संशोधन कर आपातकाल लगाकर लाखों की संख्या में लोगों को जेल में डाल दिया। भाजपा कभी ऐसा पाप नहीं कर सकती चाहे सत्ता मिले या न मिले। रक्षा मंत्री ने कहा कि

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि भ्रष्टाचार इतना है कि अगर मैं 100 पैसा भेजता हूं तो लोगों को 14 पैसा मिलता है लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में हम अगर किसानों के खाते में 10 हजार रुपये भेजते हैं तो उन्हें 10 हजार ही मिलते हैं।

प्रकाश सिंह बादल को चंडीगढ़ में प्रधानमंत्री मोदी ने दी श्रद्धांजलि, पार्थिव शरीर के दर्शन के लिए उमड़ा जनसैलाब

पंजाब। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को अंतिम श्रद्धांजलि दी। पीएम के साथ मनोहर लाल खट्टर भी श्रद्धांजलि देने पहुंचे। बादल का पार्थिव शरीर शिरोमणि अकाली दल के मुख्य दफ्तर सेक्टर 28 चंडीगढ़ में रखा गया है। बादल के पार्थिव शरीर को अकाली दल के झंडे में लपेटा गया है। दोपहर में उनके पार्थिव शरीर को उनके पैतृक गांव ले जाया जाएगा। वीरवार को उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री के निधन के चलते पंजाब सरकार ने 27 अप्रैल को सामूहिक अवकाश की घोषणा की है। बादल के पार्थिव शरीर के दर्शन लिए देश की जानी-मानी हस्तियां पहुंची हैं। पंजाब सरकार की तरफ से वित्त मंत्री हरपाल चीमा और शिक्षा मंत्री हरजोत बैंस आए हैं। बसपा के प्रधान जसबीर सिंह गड़ी, एचएस हंसपाल, पूर्व वित्त मंत्री उपिंदर जीत कौर, भाजपा के विधायक केडी भंडारी समेत कई करीबी दोस्त और रिश्तेदारों ने उनके दर्शन किए और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रकाश सिंह बादल पहली बार वर्ष 1970 में पंजाब के सीएम बने थे। वर्ष 2017 में वह आखिरी बार इस पद पर थे। वह सिख-केंद्रित पार्टी शिरोमणि अकाली

दल के संरक्षक भी थे। बादल 12 फरवरी 1997 से 26 फरवरी 2002 की अवधि के बीच भी प्रदेश के सीएम बने थे। 30 मार्च, 2015 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उन्हें देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया था। हालांकि उन्होंने 3 दिसंबर 2020 को भारतीय किसानों के विरोध का समर्थन करने के लिए इस सम्मान को वापस कर दिया था। वह 1957 में पहली बार शिरोमणि अकाली दल से पंजाब विधानसभा के लिए चुने गए थे। वह 1969 में फिर से चुन कर आये और तत्कालीन पंजाब सरकार में सामुदायिक विकास, पंचायती राज, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन मंत्री का पद संभाला। बादल कुल 10 बार विधान सभा के लिए चुने गए थे. वह 1972, 1980 और 2002 में विपक्ष के नेता थे। वर्ष 1997 के चुनावों में वे लंबी विधानसभा क्षेत्र से जीतकर विधानसभा पहुंचे थे। वर्ष 2007 के पंजाब विधान सभा चुनाव में शिरोमणि अकाली दल-भारतीय जनता पार्टी गठबंधन सरकार ने 117 में से 67 सीटें जीतीं और प्रकाश सिंह बादल ने चौथी बार मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश की बागडोर संभाली थी।

मस्क को आशंका- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हो सकता है परमाणु हथियारों से ज्यादा खतरनाक

नई दिल्ली। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (एजीआई) और समाज के लिए इसके संभावित खतरों की आलोचना करने से कभी परहेज नहीं किया है। अपने हालिया ट्वीट में उन्होंने इसकी तुलना परमाणु हथियारों से की है। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कई तकनीकों को विकसित होते देखा है, लेकिन इनमें से कोई भी एजीआई जितना खतरनाक नहीं। एजीआई विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य की कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणाली किसी भी बौद्धिक कार्य को समझने या सीखने में सक्षम होगी जो एक इंसान कर सकता है। मस्क ने अपने ट्वीट में कहा, "मैंने कुछ प्रौद्योगिकियों को विकसित होते देखा है, लेकिन इस स्तर का जोखिम किसी में नहीं रहा। मेरी राय में, परमाणु हथियारों की तुलना में एजीआई काफी अधिक जोखिम भरा है। सुपर स्मार्ट मनुष्यों से भी ज्यादा कोई चीज स्मार्ट होगी यह कल्पना करने में परेशानी होती है। मस्क अपनी पूर्व पत्नी और वेस्टवर्ल्ड की अभिनेत्री तालुलाह रिले के एक ट्वीट का जवाब दे रहे थे। तालुलाह ने एमआईटी के प्रोफेसर मैक्स टेगमार्क की एक पोस्ट साझा की, जिसमें वे एआई के प्रभाव और प्रौद्योगिकी के आसन्न खतरे की आशंका जता रहे हैं जिसे मनुष्य जानबूझकर अनदेखा कर रहे हैं। टेगमार्क ने इस स्थिति की तुलना जेनिफर लॉरेंस और लियोनार्डो डिकैप्रियो अभिनीत फिल्म "डोंट लुक अप" के कथानक से की है। उनका दावा है कि यह दुनिया के खत्म होने के फिल्म में दिखाए गए उस खतरे की तरह है जहां एक एस्टेरॉयड पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है।" फिल्म जलवायु परिवर्तन के लिए मनुष्य की प्रतिक्रिया पर एक व्यंग्य की तरह था। हालांकि, टेगमार्क का दावा है कि यह एआई का विकास इस फिल्म की कथानक पर और सही बैठता है। टेगमार्क ने दावा किया कि एक सर्वेक्षण से पता चला है कि एआई शोधकताओं में से आधे एआई को मानव जीवन के विलुप्त होने के मामले में कम से कम 10 प्रतिशत आशंका जताते हैं।

संपादकीय

राहत के बरक्स

हाल ही में जब बाघों की संख्या में अच्छी-खासी बढ़ोतरी की खबर आई थी, तब इसे राहत की तरह देखा गया, क्योंकि इस संरक्षित पशु को बचाने के लिए पिछले कई दशक से व्यापक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। लेकिन अब बाघों की मौत की लगातार घटनाओं ने एक नई चिंता पैदा कर दी है कि आखिर रखरखाव और संरक्षण के किन मोर्चों पर चल रही योजनाओं में सुधार की जरूरत है। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण ने अपने ताजा आंकडो में जो जानकारी दी है, उसके मुताबिक इस साल अब तक अलग-अलग वजहों से छप्पन बाघों की जान जा चुकी है। अकेले अप्रैल में आठ बाघों की मौत हो गई। इनमें ज्यादा संख्या मादा बाघों की है। हालांकि बाघों के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव पर नजर रखने वालों का मानना है कि आमतौर पर जनवरी से लेकर मार्च महीने के बीच इस पशु की मौतों की ज्यादा संख्या दर्ज की जाती है। लेकिन जब करीब दो महीने पहले इस तरह की खबरें आई थीं तब यह सवाल उठाया गया था कि क्या इस संरक्षित पशु के जीवन को बचाने के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों को लेकर उत्साह में कमी आ रही है! बाघों को बचाने के लिए चलाई जा रही विशेष परियोजना और उसके तहत अक्सर जैसी सक्रियता देखी जाती रही है, उसमें यह उम्मीद स्वाभाविक है कि इस पशु को विलुप्ति के खतरे की जद से दूर रखा जा सकेगा। यही वजह है कि कुछ समय पहले बीते चार साल में बाघों की गिनती में दो सौ की बढ़ोतरी का आंकड़ा आया, तो इसे संरक्षण के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की कामयाबी के तौर पर देखा गया। लेकिन अगर इस आंकड़े के बरक्स बाघों के मरने की खबरें भी समांतर आ रही हों तो उसे कैसे देखा जाएगा? तादाद में बढ़ोतरी के मुकाबले अगर बाघों की मौतों को नहीं थामा जा सका तो संख्या में संतुलन का सुरक्षित अनुपात कैसे कायम किया जा सकेगा? निश्चित रूप से एक संरक्षित पशु के रूप में बाघों को बचाने के लिए बाकायदा संगठित रूप से अभियान चलाए गए, अभयारण्यों को सुरक्षित बनाने और इनके जीवन के लिए जरूरी आबोहवा उपलब्ध कराने को लेकर लिए व्यापक कार्यक्रम भी अमल में लाए गए। मगर यह समझना मुश्किल है कि बचाने की तमाम महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के अमल में अक्सर सक्रियता दिखने के बावजूद बाघों के जीवन पर यह कैसा खतरा मंडरा रहा है! दरअसल, इंसानी आबादी के साथ-साथ रिहाइशी इलाकों के विस्तार के बीच जैसी चुनौतियां खड़ी हो रही हैं, उसमें एक गंभीर असर वन्यजीवों के सामान्य जीवन पर भी पड़ रहा है। कहीं जंगल में रहने वाले पशुओं के पयार्वास का क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं तो कहीं मनुष्य और पशुओं के बीच टकराव की स्थितियां बन रही हैं। आए दिन ऐसी खबरें आती रहती हैं कि बाघ या इसी वर्ग के किसी पशु ने इंसान पर हमला कर दिया। इसकी वजह जितनी जानवरों के भीतर उपजी आक्रामकता है, उससे ज्यादा उनके सामान्य जीवन में खड़ी हो रही बाधाएं कई बार संकट की जड़ बन रही हैं। इसके बावजूद बाघ संरक्षण की परियोजना पर हुए काम का ही यह हासिल रहा कि बाघों की गिनती में बढ़ोतरी दर्ज की गई। लेकिन अब अगर इसके समांतर बाघों की मौतों की रफ्तार भी इस कदर तेज है तो यह बेशक चिंता की बात है। ऐसे में न सिर्फ बाघों के प्राकृतिक जीवन-क्षेत्र को पूरी तरह सहज और सुरक्षित बनाए जाने की जरूरत है, बल्कि उनके खानपान, रहन-सहन, पर्यावरण आदि को लेकर भी हर स्तर पर सजगता बरतनी पड़ेगी।

जा रही है जान !

हो रहे हैं हमले ।
जा रही है जान ।।
नक्सलियों ने फिर से ।
हाथ ली कमान ।।
होगा जाना जड़ में ।
हुआ नहीं सुधार ।।
हुई बातें लाख ।
बाकी पर उपचार ।।
दर्द भरी कहानी ।
बीते दशक साल ।।
बीतता है जिन पर ।
जानते वो हाल ।।
होगी कड़ी कार्रवाई ।
आते रहे बयान ।।
पतन का संकल्प था ।
हो रहा उत्थान ।।

–कृष्णेन्द्र राय

राजस्थान में भाजपा के पास नहीं है चुनाव जिताने लायक कोई कद्दावर चेहरा

राजस्थान में दिसम्बर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव को लेकर राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियां प्रारंभ कर चुके हैं। भाजपा भी प्रदेश में अपने सांगठनिक ढांचे को मजबूत करने में जुटी है। इसी के तहत प्रदेश अध्यक्ष के पद पर सांसद सीपी जोशी व विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के पद पर राजेंद्र सिंह राठौड़ को नियुक्त किया है। प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए गए सतीश पूनिया को उपनेता प्रतिपक्ष बनाया गया है। भाजपा अपने चुनावी गणित में सोशल इंजीनियरिंग का फामूर्ला फिट कर रही है। इतना सब करने के बाद भी भाजपा आलाकमान राजस्थान को लेकर संतुष्ट नहीं लग रहा है। इसीलिए पार्टी के बड़े नेता लगातार राजस्थान का दौरा कर खेमेबंदी को रोकने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन भाजपा में व्याप्त खेमेबंदी रुक नहीं रही है।

राजस्थान में भाजपा की सबसे बड़ी समस्या चुनावी चेहरे की है। जिसके सहारे पार्टी चुनावी मैदान में उतर सके। राजस्थान में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सबसे बड़ी नेता मानी जाती रही हैं। मगर भाजपा आलाकमान उन्हें चुनाव में चेहरा बनाना नहीं चाहता है। भाजपा आलाकमान चाहता है कि वसुंधरा राजे के स्थान पर नए लोगों को आगे बढ़ाया जाए। इसी सोच के तहत जोधपुर के सांसद गजेंद्र सिंह शेखावत को केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। राजपूत समाज से आने वाले गजेंद्र सिंह शेखावत को पार्टी आलाकमान राजस्थान में प्रमुख चेहरा बनाना चाहता था। मगर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गजेंद्र सिंह शेखावत को संजीवनी क्रेडिट कोआपरेटिव सोसाइटी घोटाले में लपेटकर विवादास्पद बना दिया है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि गिरफ्तारी से बचने के लिए केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को राजस्थान उच्च न्यायालय से अपनी अग्रिम जमानत तक करवानी पड़ी है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत को लोकसभा चुनाव में हराकर गजेंद्र सिंह शेखावत जोधपुर से सांसद बने थे। इस कारण मुख्यमंत्री गहलोत गजेंद्र सिंह को लपेटने का कोई भी मौका नहीं छोड़ते हैं। इन दिनों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

खुलकर गजेंद्र सिंह शेखावत पर प्रदेश के लाखों गरीब परिवारों से 900 करोड़ रुपए ठगने का आरोप लगा रहे हैं। मुख्यमंत्री गहलोत तो सार्वजनिक रूप से इतना तक कह रहे हैं कि गजेंद्र सिंह शेखावत को आमजन से ठगी कर एकत्रित कर विदेशों में जमा करवाए गए धन को वापस लाकर गरीब लोगों को लौटाना चाहिए। गहलोत के आरोपों से गजेंद्र सिंह शेखावत की छवि सार्वजनिक रूप से खराब हुई है और वह बैकफुट पर आ गए हैं। गजेंद्र सिंह को लेकर मुख्यमंत्री गहलोत के आक्रामक रूप को देखते हुए भाजपा आलाकमान भी उन्हें फ्रंट फुट पर उतारने से कन्नी काटने लगा है। भाजपा आलाकमान को पता है कि यदि गजेंद्र सिंह शेखावत को चेहरा बनाकर पार्टी विधानसभा चुनाव में उतरती है तो मुख्यमंत्री गहलोत का मुख्य निशाना उन्हीं पर होगा और इसका खामियाजा भाजपा को उठाना पड़ेगा। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी नहीं चाहती हैं कि राजपूत समाज के किसी अन्य नेता को उनके स्थान पर प्रोजेक्ट कर चुनाव लड़ा जाए। इसके लिए वसुंधरा राजे अपने समर्थकों से अंदर खाने गजेंद्र सिंह का विरोध करवा रही हैं। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए चित्तौड़गढ़ के सांसद सीपी जोशी प्रदेश में कोई पॉपुलर फेस नहीं रहे हैं। प्रदेश स्तर पर उनका कोई बड़ा जनाधार भी नहीं है। दोनों लोकसभा चुनाव भी वह मोदी के चेहरे पर जीते हैं। जातिगत समीकरण के हिसाब से उनको प्रदेश अध्यक्ष तो बना दिया गया है। मगर उन्हे चुनावी चेहरा बनाकर पार्टी को शायद ही कोई फायदा मिले। सीपी जोशी खुद भी लगातार बोल रहे हैं कि वह मुख्यमंत्री पद की रेस में शामिल नहीं हैं। उनका काम संगठन को मजबूत करना है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाए गए राजेंद्र राठौड़ लगातार सातवीं बार विधायक बने हैं। मगर उनका भी प्रभाव अपने क्षेत्र तक ही सीमित है। वह पार्टी का प्रदेश स्तर पर नेतृत्व कर सकें इतना प्रभाव उनका नहीं रहा है। कोटा के सांसद ओम बिरला दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह की पहली पसंद हैं। हो सकता है यदि चुनाव में पार्टी को बहुमत मिले तो उन्हें मुख्यमंत्री भी बना दिया जाए। राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए सीपी जोशी उनके आशीर्वाद से ही अध्यक्ष बन पाए हैं। लोकसभा अध्यक्ष के संवैधानिक पद पर होने के कारण ओम बिरला खुलकर पार्टी की राजनीति नहीं कर सकते हैं। ना ही वह पार्टी पदाधिकारी बन सकते हैं।

जाट नेता सतीश पूनियां के रूखे व्यवहार व वसुंधरा राजे से सीधे टकराव के चलते ही उन्हें पद से हटाया गया था। ऐसे में उनकी भूमिका सीमित ही रखी जाएगी। केंद्र सरकार में राज्य मंत्री व बीकानेर के सांसद अर्जुन राम मेघवाल अपने विवादास्पद व्यक्तित्व के चलते सर्वमान्य नेता के रूप में स्वीकार नहीं किए जा सकते हैं। उनके पुत्र से जुड़े विवादों के चलते पिछले दिनों उन्हें बचाव की मुद्रा में आना पड़ा था। बीकानेर के दिग्गज नेता देवी सिंह भाटी से अनबन के चलते ही उनका पुत्र जिला परिषद का चुनाव हार गया था। भाजपा के राज्यसभा सदस्य डॉ. किरोड़ी लाल मीणा जुझारू छवि के नेता हैं तथा आए दिन जनआन्दोलन करते रहते हैं। मगर बढ़ती उम्र व विवादों में रहने के चलते पिछले विधानसभा चुनाव में उनका समर्थक एक भी प्रत्याशी विधानसभा चुनाव में नहीं जीत पाया था। उनकी स्वयं की दौसा संसदीय सीट पर भी उनकी विरोधी रही जसकौर मीणा को प्रत्याशी बनाया गया था। राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत खुलकर फ्रंट फुट पर खेल रहे हैं। पिछले दिनों सचिन पायलट के अनशन के दौरान पार्टी आलाकमान ने स्पष्ट रूप से उनके ही नेतृत्व में अगला चुनाव लड़े जाने की घोषणा कर दी थी। उसके बाद से गहलोत विपक्ष सहित पायलट के खिलाफ भी आक्रामक रुख अपनाए हुए हैं। अगले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की चुनाव की कमान पूरी तरह अशोक गहलोत के हाथ में रहेगी। वहीं भाजपा को मजबूरी में बिना चेहरे के ही चुनाव मैदान में उतरना पड़ेगा। उस पर वसुंधरा की उपेक्षा भी भाजपा को भारी पड़ सकती है। कर्नाटक चुनाव में टिकट काटने पर बहुत से वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी छोड़ कर भाजपा को तगड़ा झटका दिया है। राजस्थान में भी यदि वसुंधरा राजे व उनके समर्थकों की उपेक्षा की गई वही स्थिति हो सकती है। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे राजस्थान में भाजपा के लिए बड़ा संकट बनी हुई हैं। पार्टी उनकी जितनी उपेक्षा करेगी उतना ही अधिक भाजपा को चुनाव में नुकसान उठाना पड़ेगा। प्रदेश की राजनीति में आज भी वसुंधरा राजे समर्थकों का एक बड़ा वर्ग है जो वसुंधरा राजे की उपेक्षा को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। कुल मिलाकर भाजपा के पास प्रदेश में ऐसा कोई सर्वमान्य चेहरा नहीं है जिसके नाम व नेतृत्व में सभी नेता एकजुट होकर चुनाव लड़ सकें। यही भाजपा की सबसे कमजोर कड़ी साबित होगी।

जटिल होता जल संकट

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान दुनिया को चेता चुके हैं कि उन्हें इस बात का डर है कि आगामी वर्षों में पानी की कमी गंभीर संघर्ष का कारण बन सकती है। अगर पृथ्वी पर जल संकट इसी कदर गहराता रहा तो इसे निश्चित मानकर चलना होगा कि पानी हासिल करने के लिए विभिन्न देश आपस में टकराने लगेंगे और दो अलग-अलग देशों के बीच युद्ध की नौबत भी आ सकती है। पानी के मसले पर ग्लोबल कमीशन आन द इकोनोमिक्स आफ वाटर (जीसीईडब्लू) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह चौंकाने वाला तथ्य दुनिया के समक्ष रखा गया है कि दुनियाभर में इस दशक के अंत तक ताजे पानी की आपूर्ति की मांग चालीस फीसद तक बढ़ जाएगी और पानी की कमी के साथ ही निरंतर बढ़ती गर्मी के कारण आगामी दो दशकों में खाद्यान्न उत्पादन काफी घट जाएगा।

इस रिपोर्ट के मुताबिक, भारत को भी इस वजह से खाद्य आपूर्ति में सोलह फीसद से अधिक की कमी का सामना करना पड़ेगा, जिससे खाद्य असुरक्षित आबादी में पचास फीसद से ज्यादा की वृद्धि होगी। रिपोर्ट के अनुसार भारत में जल आपूर्ति की उपलब्धता 1,100 से 1,197 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) के बीच है और पानी की मांग भारत में 2010 के मुकाबले 2050 तक दोगुनी होने की उम्मीद है। वास्तविकता यही है कि जल संकट अब दुनिया के लगभग सभी देशों के साथ भारत के लिए भी एक विकट समस्या बन चुका है। यहां गर्मी के मौसम की शुरूआत के साथ ही स्थिति बिगड़ने लगती है। भारत में वैश्विक जनसंख्या का करीब अठारह फीसदी हिस्सा निवास करता है, जबकि भारत को केवल चार फीसदी जल संसाधन ही उपलब्ध हैं। हालांकि देश के सात राज्यों की 8,220 ग्राम पंचायतों में भूजल प्रबंधन के लिए अटल भूजल योजना चल रही है, लेकिन भूजल के गिरते स्तर के मद्देनजर इसे पूरी गंभीरता के साथ देशभर में चलाए जाने की दरकार है। हाल ही में न्यूयार्क में करीब पांच दशक बाद ताजे पानी के संबंध में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुतारेस ने दुनिया और भारत में पानी की स्थिति के बारे में भयावह चित्र प्रस्तुत किया।

नदियों को भारत की जीवनरेखा माना जाता रहा है, लेकिन इस सम्मेलन में कहा गया कि गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र जैसी विशाल नदियों में पानी कम होता जाएगा और 2050 तक पानी की उपलब्धता जरूरत से एक तिहाई कम रह जाएगी। करीब ढ़ाई हजार किलोमीटर लंबी गंगा देश की सबसे प्रमुख नदी है, जिस पर कई राज्यों के करोड़ों लोग निर्भर करते हैं। हिमालय में 9,575 हिमनद यानी ग्लेशियर हैं और नदियों में पानी हिमनदों से आता है। केवल उत्तराखंड

में ही 968 हिमनद हैं, लेकिन मौसम के असाधारण परिवर्तन के कारण हिमनद तेजी से पिघलने लगे हैं। पिछले 87 वर्षों में 30 किलोमीटर लंबे गंगोत्री हिमनद का 1.75 किलोमीटर हिस्सा पिघल गया है। हिमनदों के तेजी से पिघलने से देश में पानी की भयावह किल्लत पैदा होने के अनुमान लगाए जा रहे हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र की सीएसई रिपोर्ट में चेताते हुए कहा गया है कि भारत में गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी नदियां करोड़ों लोगों को पानी देती हैं, लेकिन नई वैज्ञानिक रिपोर्ट के मुताबिक भारत की दस नदियों के सूखने का खतरा पैदा हो गया है।

एक आकलन के अनुसार, दुनियाभर में इस समय करीब दो अरब लोग ऐसे हैं, जिन्हें स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा और इसके कारण लाखों लोग बीमार होकर असमय काल का ग्रास बन जाते हैं। हालांकि पृथ्वी का करीब तीन चौथाई हिस्सा पानी से लबालब है, लेकिन धरती पर मौजूद पानी के विशाल स्रोत में से महज एक-डेढ़ फीसदी पानी ही ऐसा है, जिसका उपयोग पेयजल या दैनिक क्रियाकलापों के लिए किया जाना संभव है। इंटरनेशनल एटमिक एनर्जी एजेंसी का कहना है कि पृथ्वी पर उपलब्ध पानी की कुल मात्रा में से मात्र तीन प्रतिशत पानी ही स्वच्छ बचा है और उसमें से भी करीब दो प्रतिशत पानी पहाड़ों और ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा है, जबकि शेष एक प्रतिशत पानी का उपयोग ही पेयजल, सिंचाई, कृषि और उद्योगों के लिए किया जाता है। बाकी पानी खारा होने या अन्य कारणों से उपयोगी या जीवनदायी नहीं है। पृथ्वी पर उपलब्ध पानी में से इस एक प्रतिशत में से भी करीब 95 फीसदी पानी भूमिगत जल के रूप में पृथ्वी की निचली परतों में है और बाकी पृथ्वी पर सतही जल के रूप में तालाबों, झीलों, नदियों या नहरों में और मिट्टी में नमी के रूप में उपलब्ध है। स्पष्ट है कि पानी की हमारी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति भूमिगत जल से ही होती है, लेकिन इसकी मात्रा इतनी नहीं है कि इससे लोगों की आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

इस समय दुनियाभर में करीब तीन बिलियन लोगों के समक्ष पानी की समस्या मुंह बाए खड़ी है और विकासशील देशों में तो यह समस्या कुछ ज्यादा ही विकराल हो रही है, जहां करीब 95 फीसदी लोग इस समस्या को झेल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान दुनिया को चेता चुके हैं कि उन्हें इस बात का डर है कि आगामी वर्षों में पानी की कमी गंभीर संघर्ष का कारण बन सकती है। अगर पृथ्वी पर जल संकट इसी कदर गहराता रहा तो इसे निश्चित मानकर चलना होगा कि पानी हासिल करने के लिए विभिन्न देश आपस में टकराने लगेंगे और दो अलग-अलग देशों के बीच युद्ध की नौबत भी आ सकती है। जैसी कि आशंकाएं जताई जा रही है कि अगला विश्व युद्ध भी पानी की वजह से लड़ा जा सकता है। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच पानी के मुद्दे को लेकर तनातनी चलती रही है। उत्तरी अफ्रीका के कुछ देशों के बीच भी पानी की वजह से झगड़े होते रहे हैं। इजराइल और जार्डन, मिस्र और इथोपिया जैसे कुछ अन्य देशों के बीच भी पानी को लेकर काफी गर्मागर्मी देखी जाती रही है। अपने ही देश में विभिन्न राज्यों के बीच पानी के बंटवारे के मामले में पिछले कुछ दशकों से गहरे मतभेद बरकरार हैं और वर्तमान में भी जल वितरण का मामला लगातार अधर में लटका रहने से कुछ राज्यों में जलसंकट की स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। इसलिए बेशकीमती पानी की महत्ता को समय रहते समझना होगा।

यूपी निकाय चुनाव में भाजपा नेताओं ने कई जगह 'जेबी' लोगों को टिकट देकर कार्यकर्ताओं का हक मार दिया

भारत के राजनीतिक गलियारों में 'भारतीय जनता पार्टी' की देश के आम मतदाता के बीच एक विशेष पहचान बनी हुई है, वह अपने अनुशासन, आदर्श, सरलता व सभ्यता के लिए पहचानी जाती है। हालांकि देश में मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग भी 'भाजपा' को एक तरफ तो सनातन धर्म व संस्कृति और हिन्दुत्व विचारधारा के कट्टर समर्थक के तौर पर देखना चाहता है, वहीं दूसरी तरफ वह उसे राजनीति में ईमानदारी, शुचिता व सभ्यता के सिद्धांतों पर चलने वाली एक कैडर आधारित पार्टी भी मानता है। वैसे धरातल पर देखा जाए तो इसके चलते ही देश में लंबे समय से सार्वजनिक मंचों से 'भारतीय जनता पार्टी' का शीर्ष नेतृत्व ताल ठोंक कर के 'भाजपा' की इस विशेषता को बता कर के देश के मतदाताओं को अपने पक्ष में लुभाने का कार्य भी निरंतर करता रहता है। वैसे भी बड़ी संख्या में देश के आम जनमानस का भी यह मानना है कि 'भाजपा' अपनी इस विशेष पहचान व राजनीतिक शुचिता के अपने सिद्धांतों पर चलते हुए ही आज देश की अन्य पार्टियों के जनाधार के बीच भी तेजी के साथ मजबूत पैठ बनाने का कार्य करती जा रही है, जो भाजपा के लिए एक अच्छा संकेत है।

लेकिन हाल ही में चल रहे उत्तर प्रदेश नगर निकाय के चुनावों में टिकट वितरण के बाद जिस तरह से घमासान हुआ वह पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को चिंतित कर देना वाला है। 'भाजपा' के शीर्ष नेतृत्व की नगर निकाय के चुनावों के टिकट वितरण में हस्तक्षेप ना करने की लाख चेतावनियों के बावजूद भी जिस तरह से नेताओं ने खुलेआम अपने लोगों की पैरवी करने का कार्य किया है, उससे टिकट वितरण में पार्टी के कार्यकताओं का हक बड़े पैमाने पर मारा गया है। प्रदेश स्तरीय नेताओं ने कार्यकताओं की जगह अपने जेबी लोगों को टिकट दिलवाने के चक्कर में जिस तरह से 'साम दाम दण्ड भेद' की नीति को अपनाकर के पार्टी का अहित करने का कार्य किया है, उसने स्थिति को धरातल पर खराब करने का कार्य किया है। चंद राजनेताओं के द्वारा कार्यकताओं की जगह केवल अपने-अपने समर्थकों को टिकट दिलवाने की इस अंधाधुंध होड़ में ही जगह-जगह टिकट वितरण पर नाम घोषित होने के बाद जमकर हंगामा बरपा है। नगर निकाय के टिकट वितरण विवाद के इस घमासान पर नजर डालें, तो उससे धरातल पर आम जनमानस की 'भाजपा' के संदर्भ में बनाई गई सकारात्मक छवि की धारणा को जबरदस्त नुकसान पहुंचाने का कार्य पार्टी के ही चंद राजनेताओं के द्वारा अपने-अपने क्षणिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए किया गया है। वहीं इन नेताओं की हरकतों ने पार्टी के आम कार्यकताओं का हक मारकर उनको निराश करने का कार्य किया है। टिकट वितरण के बाद उत्पन्न आक्रोश और नारेबाजी बंद कमरों और पार्टी कार्यालय तक तो ठीक थी, लेकिन आक्रोश को कुचलने के लिए जिस तरह से मीडिया के सामने व पार्टी के दिग्गज राजनेताओं के सामने ही चंद राजनेताओं के इशारों पर उनके गुर्गों ने कार्यकताओं के साथ गाली-गलौज, धक्का-मुक्की व मारपीट करने की घटनाओं को घटित करने का दुस्साहस किया है, यह स्थिति पार्टी के लिए आज के समय के साथ-साथ भविष्य के लिहाज से भी बेहद नुकसानदायक है और आम जनमानस के बीच पार्टी की छवि को नकारात्मक रूप से प्रदर्शित करने का कार्य बखूबी कर रही है, जो कि पार्टी के जनाधार को बढ़ाने के हित में बिल्कुल भी उचित नहीं है। वहीं साथ ही इन लोगों की हरकत 'भाजपा' को सबसे अलग व अनुशासित पार्टी बताने के दावे पर भी प्रश्नचिन्ह लगाने का कार्य कर रही है। इन चंद राजनेताओं को समय रहते समझना चाहिए कि राजनीति में हमारे आपस में मतभेद हो सकते हैं, लेकिन यह कभी भी मनभेद में तब्दील नहीं होने चाहिए, क्योंकि आपस में मनभेद होना पार्टी व व्यक्ति दोनों के हित में ही उचित नहीं है।

जिस तरह से यूपी नगर निकाय के दूसरे चरण के चुनावों के नामांकन के अंतिम दिन गाजियाबाद में आपस में मार-पिटाई हुई है, वह 'भाजपा' के लिए उचित नहीं है। इस पूरे घटनाक्रम पर नजर डालें तो जब शीर्ष नेतृत्व के द्वारा खोड़ा नगर पालिका परिषद के सभासद पद हेतु घोषित उम्मीदवारों को पार्टी का सिंबल देने में ना-नुकुर की गयी, तो इस विवाद के समाधान के लिए देश के पूर्व सेनाध्यक्ष, केन्द्रीय राज्यमंत्री व गाजियाबाद के सांसद जनरल डॉक्टर वी.के. सिंह की बेटी भाजपा के चुनाव कार्यालय पर पहुंची, जहां पर राजनीतिक विरोध में अंधे हो चुके चंद राजनेताओं व उनके गुर्गों ने एक महिला के सामने कैसे बात की जाती है, इस गरिमा तक का जरा भी ध्यान ना रखते हुए जमकर के गाली-गलौज करने का कार्य किया, हालांकि बाद में टकराव वाली यह स्थिति मार-पिटाई की शर्मनाक घटना में बदल गई। लेकिन विचारणीय तथ्य यह है कि देश के एक बेहद सम्मानित परिवार की बेटी के सामने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देना बेहद शर्मनाक आपराधिक कृत्य है, वहीं इस स्थिति पर वहां पर उपस्थित अन्य राजनेताओं का तमाशबीन बन करके खड़े रहना बिलकुल ही समझ से परे है। हालांकि बाद में काफी छिछालेदर होने के बाद भाजपा को अपनी बपौती मानकर बैठे इन चंद मठाधीशों को खोड़ा नगर पालिका के उन सभी सभासद पद के प्रत्याशियों को पार्टी का सिंबल देना ही पड़ा, तब कहीं जाकर यह विवाद शांत हुआ। लेकिन चुनावी माहौल होने के चलते मार-पिटाई की इस घटना की वीडियो बहुत ही तेजी से वायरल होने के चलते, उसने वहां उत्पन्न स्थिति की पोल देश व दुनिया के सामने खोलने का कार्य करते हुए, पार्टी की छवि को बट्टा लगाने का कार्य तब तक कर दिया। वैसे इस स्थिति पर विचारणीय तथ्य यह है कि किस तरह से 'भाजपा' के संगठन में बैठे चंद लोग अपने क्षणिक स्वार्थ के लिए दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी 'भाजपा' की छवि को पलीता लगाने का कार्य कर रहे हैं और शीर्ष नेतृत्व की पार्टी को मजबूत करने के लिए की जा रही मेहनत को खराब करने का दुस्साहस कर रहे हैं।

चोरी की मोटरसाईकिल और इन्वर्टर सेट सहित दो गिरफ्तार

प्रखर केराकत जौनपुर। कोतवाली थाना क्षेत्र की सरकी पुलिस चौकी प्रभारी विनोद कुमार अंचल ने बुधवार को चोरी में संलिप्त दो अभियुक्तों को पकड़ कर चालान भेजा। पकड़े गए का नाम राम जनम यादव और विकास यादव है। रामजनम केराकत थाना क्षेत्र के अतरौरा, और विकास सूरतपुर गांव का रहने वाला है। सीओ गौरव शर्मा ने बताया कि दोनों को केराकत थाना क्षेत्र के डेहरी गांव के मोड़ से पकड़ा गया। रामजनम के पास से चोरी की बिना नंबर की हीरो एच एफ डीलक्स मोटरसाईकिल और एक इन्वर्टर बैटरी तथा विकास के पास से एक मोटरसाईकिल और एक इन्वर्टर मशीन बरामद हुआ है। दोनों का चालान भेज दिया गया।

फर्जी आधार कार्ड लेकर वोट देने वाले को होगी जेल

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। नगर निकाय निर्वाचन को सकुशल शांतिपूर्ण निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न कराए जाने के उद्देश्य से जिला निर्वाचन अधिकारी आर्य का अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह ने सभी उप जिलाधिकारी सीओ, एसओ आरओ एवं चुनाव से संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर अति संवेदनशील एवं संवेदनशील बूथों की स्थलीय समीक्षा की जानकारी ली।

जिलाधिकारी ने क्षेत्राधिकारी गाजीपुर, दिलदारनगर, सैदपुर एवं सादात के कई बूथों पर असंवेदनशील स्थल को लगातार एम चेकिंग किए जाने के निर्देश दिए। जितने भी आपराधिक मामले हैं उनकी गहन समीक्षा की जाए और उस पर विशेष निगरानी रखी जाए। पार्टियों के प्रत्याशियों द्वारा बिना अनुमति के प्रचार वाहन नहीं चलना चाहिए तथा प्रत्याशी द्वारा बिना अनुमति प्रचार वाहन का प्रयोग होता है तो तत्काल गाड़ी को सीज किया जाएगा। शासन द्वारा नामित प्रचार वाहन ही चल सकेंगे। डीएम ने वरिष्ठ कोषाधिकारी को निर्देशित किया की प्रचार प्रसार में धनराशि का जो खर्च हो रहा है उसकी गंभीरता से समीक्षा कर एक एक लेखा अधिकारी बैठाया जाए। चुनाव के दौरान बूथ स्थल पर जाने वाले रास्तों की जानकारी ली और यह बताया कोई भी रास्ता अवरोध पूर्ण न हो, जहां रास्ते खराब है उन्हें तत्काल ठीक कराया जाए। साथ ही यह निर्देश दिया कि जितने बूथ से नजदीक शराब की दुकानें हैं उसके आसपास लगातार चेकिंग की जा रही है। यह निर्देशित किया की बूथ से 8 किलोमीटर की दूरी तक ठेके या शराब की दुकानों को लगातार चेक कर प्रतिदिन रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। उन्होंने निर्देशित किया जितने भी बूथ संदेह जनक हैं उस पर बायोमेट्रिक स्थापित कर हर व्यक्ति का आधार कार्ड चेक किया जाए। उसके उपरांत ही उसे वोट स्थल तक भेजा जाए। यदि कोई भी व्यक्ति फर्जी आधार कार्ड या दूसरे का आधार कार्ड लेकर वोट देने जाता है तो उसे चेक कर जेल भेजा जाएगा। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी, अपर जिलाधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

सर्वाधिक नंबर पाकर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले छात्रों के घर पहुंचे प्रिंसिपल

प्रखर केराकत जौनपुर। हाईस्कूल और इंटर मीडिएट बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक नंबर पाकर कालेज का नाम रोशन करने वाले पांच छात्रों ने अपने विद्यालय, गांव और परिवार का नाम रोशन किया है। हाईस्कूल के चार छात्रों रितू, प्रतिभा गौतम, प्रिया यादव और अंकित कुमार और इंटर मीडिएट की सुस्मिता जैसवार डोभी ब्लॉक क्षेत्र के भारतीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विशुनपुर लेबरुआ के छात्र हैं। सर्वाधिक नंबर पाने की जानकारी होने पर विद्यालय के प्रबंधक अरविंद सिंह,प्रधानाचार्य हरिश्चंद यादव, सहायक अध्यापक रियालुद्दीन, सुशील सिंह,अनील कुमार व कमलेश यादव ने छात्रों के घर पहुंच उन्हें माला पहनाकर व मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दी। विद्यालय की छात्रा रितु ने 91%, प्रतिभा गौतम ने 93%, प्रिया यादव ने 92% और अंकित कुमार ने 90% और इसी विद्यालय की इंटर मीडिएट की छात्रा सुष्मिता जैसवार ने 93% अंक पाकर विद्यालय, गांव और परिवार का नाम रोशन किया है। छात्रों के उत्कृष्ट प्रदर्शन से उनके परिजन शिवनारायण समेत सतेंद्र,अमरनाथ मास्टर, और पूर्व ग्राम प्रधान रमेश कुमार, अमरदेव,ऋषभ मेहता, चौधीरी, विनोद कुमार आदि गदगद रहे।

तमंचे के साथ खेतासराय में बदमाश धराया

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। पुलिस अधीक्षक डॉक्टर अजय पाल शर्मा के निर्देशन में नगर निकाय चुनाव के दृष्टिगत जिले की पुलिस टीम अपराधियों के खिलाफ ताबड़तोड़ कार्रवाई कर रही है। शाहगंज के तेजतर्रार डिप्टी एसपी चोब सिंह के निर्देशन में खेतासराय थाना की पुलिस ने ऐसी ही कार्रवाई की है । पुलिस ने तमंचे के साथ एक बदमाश को गिरफ्तार कर लिया। उसपर कई आपराधिक मुकदमे दर्ज है। मीडिया सेल पुलिस के अनुसार बुधवार सुबह 9:30 बजे खेतासराय चौराहा के पास पुलिस संदिग्ध व्यक्तियों व वाहनों की चेकिग कर रही थी। पुलिस को देखकर एक युवक भागने लगा। पुलिस कर्मियों ने उसे दौड़ाकर पकड़ लिया। तलाशी में आरोपित इरफान पुत्र अब्दुल सलाम उर्फ नाटे निवासी चितारा महमूदपुर थाना दीदारगंज जनपद आजमगढ़ के पास से तमंचा व कारतूस मिला। संबंधित थानों की पुलिस ने आ?र्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर आरोपितों का चालान कर दिया। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसओ यजुर्वेन्द्र सिंह के साथ उपनिरीक्षक महंगू यादव, हेड कॉन्स्टेबल संजय पांडेय, कॉन्स्टेबल संदीप सिंह समेत अन्य पुलिस कर्मी शामिल रहे। उधर एसपी सिटी डॉ बृजेश कुमार गौतम ने पत्रकारों को बताया कि पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर नगर निकाय चुनाव के मद्देनजर अपराधियो के खिलाफ ऑपरेशन चलाया जा रहा है। अपराधी खुले में नही जेल के सलाखों में होंगे । अपराध के खिलाफ ऑपरेशन जारी रहेगा।

तेज हवा में मकान पर गिरा पेड़, हुआ धराशायी

प्रखर चंदवक जौनपुर। स्थानीय क्षेत्र के मुर्खा गाँव में शाम तेज हवा व बारिश ने क्षेत्र के कई जगहों पर कहर बरपाई है कही किसी का छप्पर ही तेज हवा में उड़ गए तो कही किसी के घर पर पेड़ गिरकर कहर बरपाया है ऐसी ही एक सुनने व देखने को मिल रही है हम बात कर रहे हैं डोभी विकास खण्ड अंतर्गत मुर्खा गांव की जहां पर तेज हवा के कारण पास ही बने कच्चे मकान पर गिर गया आलम ये रहा कि जिस समय यह हादसा हुआ था उस समय पूरा परिवार बगल में बने दूसरे घर में था।पीड़िता निशा पत्नी जोखन राम ने बताया कि घर पर पेड़ गिरने से घर में रखा गृहस्थी का सारा सामान नष्ट हो जाने से परिवार ने खाने पीने को लेकर समस्या उत्पन्न हो गई है घटना की सूचना ग्राम प्रधान व राजस्व विभाग को दे दी गई है।

श्री आदित्य नारायण सिंह इंटरमीडिएट कॉलेज महेशपुर के बच्चों ने हाईस्कूल व इंटर में अच्छा नंबर लाकर विद्यालय व जिले का नाम किया रोशन

प्रखर दानगंज वाराणसी। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा कक्षा 10वीं एवं 12वीं वर्ष 2023 का परिणाम घोषित किया गया जिसमें श्री आदित्य नारायण सिंह इण्टरमीडिएट कालेज महेशपुर धरसौना चोलापुर वाराणसी का कक्षा 10वीं एवं कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय के कक्षा 10वीं एवं 12वीं के निम्नलिखित बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

जिसमे कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम 100% रहा। 1. देवेश विश्वकर्मा (93.%) 2. मृत्युंजय विश्वकर्मा (87.83%) 3. आदर्श पाल (86.8%) 4. राहुल यादव (85.66%) 5. अंतिमा वर्मा (85.5%) 6. नीलू पटेल (85%) 7. अंजली पाल (84.16%) 8. विपीन शर्मा (83.66%) हासिल किये। वही कक्षा 12 का परीक्षा परिणाम (100%) 1 दीक्षा पाण्डेय (90%) 2 इमरान अली (88.60%) 3 श्रृष्टि श्रीवास्तव (84.40%) 4 प्रतिक्षा पटेल (79.20%) 5 आरती पाल (78.80%) 6 सत्यम प्रजापति 7 विजय कन्नौजिया (78.%) 8 वंदना पाल (78.80%) रही ।विद्यालय के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य ने समस्त अभिभावको शिक्षकों तथा कर्मचारियों को धन्यवाद दिया तथा छात्र एवं छात्राओं को बधाई दिया एवं उज्जवल भविष्य की कामना किया।

दीवार के नीचे दबने से महिला की मौत

प्रखर जौनपुर। सरायख्वाजा थाना क्षेत्र के आलमगीरपुर गांव में तेज तूफान के चलते दीवार ढह गई। इस दौरान दीवार के मलबे में दबकर एक 50 वर्षीय महिला गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसका इलाज के दौरान जिला अस्पताल में मौत हो गई। सरायख्वाजा थाना क्षेत्र के आलमगीरपुर गांव के निवासी रामशिला 50 वर्षीय पत्नी स्वर्गीय महेंद्र कुमार सोमवार शाम करीब 7 बजे अपने घर के समीप राशन लेने के लिए किराना स्टोर पर गई हुई थी सामान लेकर जब वह घर को वापस आ रही थी इसी दौरान सड़क के समीप बनी रामधारी निषाद के घर की दिवारी तेज तूफान के चलते ढह गई और दीवार के मलबे में रामशिला दबकर बुरी तरह जख्मी हो गई। स्वजनो ने बताया कि जैसे ही उनको जानकारी हुई कि रामशिला मलबे मे दब गई है तो लोग ने मिलकर किसी तरह से रामशिला को मलबे से बाहर निकाला, हालत बिगड़ते देख परिजनों ने आनन-फानन में रामशिला को इलाज के लिए जिला अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सकों ने इलाज के दौरान रामशीला को मृत घोषित कर दिया, मौत की खबर लगते ही परिजनों में हाहाकार मच गया।

पति के गुजर जाने के बाद पत्नी मजदूरी करके बच्चों का कर रही थी भरण पोषण– परिजनों की मानें तो मृतक रामशिला के तीन लड़के वह एक लड़की है। करीब 10 साल पहले पिता के गुजर जाने के बाद से ही बच्चों का भरण पोषण की जिम्मेदारी मां में उठा रही थी। बच्चों के भरण-पोषण के लिए रामशिला मजदूरी करके किसी तरह से घर का खर्चा चला रही थी मौत की खबर सुनते ही बच्चों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

वसूली के लिए प्रत्याशियों को ब्लैकमेल कर रहें फेसबुकिया

प्रखर जौनपुर। नगर निकाय चुनाव में वसूली गैंग की सक्रियता पूरे शबाब पर चल रही है। जिले की नगर पालिका परिषद शाहगंज में इस गैंग से जुड़े लोग पैसे कमाने के लिए हर दिन नए.नए हथकंडे खोज रहे हैं। इनमें कुछ तो मीडिया बनकर विपक्षी दलों से सेटिंग गेटिंग करके अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। और कुछ तो जेब गर्म न होती देख नगर के गली नुक्कड़ए चौराहों और चाय पान की दुकानों पर बैठकर प्रत्याशी के खिलाफ अनर्गल बयानबाजी भी कर रहे हैं। तथाकथित पत्रकार और मोबाइल मीडिया के नाम पर बिना रजिस्ट्रेशन के पोर्टल चलाने वाले इस वसूली गैंग से जुड़े लोगों की टीम सुबह ही नगर में पहुंच जाती है। इस संबंध में सूत्रों का कहना है कि इस पूरे खेल में भाजपा प्रत्याशी के खिलाफ शाहगंज नगर के कुछ विपक्षी पार्टी से जुड़े लोग बड़ी सेटिंग कटिंग करके उनकी छवि को खराब करने में लगे हुए हैं। इस तरह की गंभीर शिकायतों पर शाहगंज कोतवाली पुलिस ने भी अपनी पैनी निगाहें लगा दी है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि ऐसे लोगों के खिलाफ शिकायत मिली है शीघ्र ही कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल मामला जो भी हो लेकिन मीडिया के नाम पर प्रत्याशियों के खिलाफ एक तरफा चलाई जा रही बाइट से यह साबित होता है कि इस पर्दे के खेल के पीछे कुछ ना कुछ तो जरूर गड़बड़ है। जो निष्पक्ष पत्रकारिता की छवि पर सवाल उठना लाजमी है।

विवाहित महिला संग छेड़छाड़, जान से मारने की धमकी, चोलापुर थाने में दर्ज हुआ मुकदमा

प्रखर दानगंज वाराणसी। चोलापुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासिनी विवाहिता संग हुए छेड़छाड़ एवं दुर्व्यवहार किये जाने तथा विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दिए जाने के मामले में चोलापुर पुलिस ने एक अज्ञात समेत आधा दर्जन लोगों के विरुद्ध मंगलवार को मुकदमा दर्ज किया। जानकारी के अनुसार चोलापुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासिनी विवाहिता ने संविदा विद्युत कर्मी अपने सहयोगियों की संग अपनी जमीन पर साफ सफाई कर रही महिला संग छेड़छाड़ व दुर्व्यवहार किया। महिला द्वारा विरोध करने पर परिवार सहित जान से मारने की धमकी भी दी। मंगलवार को पीड़िता ने चोलापुर थाने पर मदद की गुहार लगाई। चोलापुर पुलिस ने आरोपी संविदा विद्युतकर्मी रोशन यादव पुत्र जयकिशुन यादव, राजकुमार उर्फ पप्पू यादव पुत्र सिधारी यादव निवासी गोसाईपुर मोंहाव समेत आधा दर्जन के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच में जुटी है।

वाराणसी में सीएम योगी की जनसभा 30 अप्रैल को भरेंगे जीत की हुंकार

प्रखर दानगंज वाराणसी। उत्तर प्रदेश में होने वाले निकाय चुनाव को लेकर प्रदेश में बीजेपी के प्रत्याशियों की जीत के लिए अब सीएम योगी आदित्यनाथ ने कमान संभाल ली है। सीएम यूपी के नगर निकाय चुनाव को लेकर ताबातोड़ कैंपेन में जुट गए हैं। इसी क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में सीएम योगी आदित्यनाथ जनता से बीजेपी के पक्ष में वोट करने के लिए जनसभा करेंगे। जानकारी के अनुसार सीएम योगी आदित्यनाथ 30 अप्रैल को शिवपुर स्थित मिनी स्टेडियम में जनसभा को संबोधित करेंगे। सीएम के जनसभा को लेकर वाराणसी में बीजेपी कार्यकर्ता तैयारियों में जुट गए हैं। बीजेपी पदाधिकारियों की माने तो सीएम योगी आदित्यनाथ वाराणसी में जनसभा के दौरान पूर्वांचल में एक बड़ा संदेश देंगे। वहीं सीएम योगी आदित्यनाथ के जनसभा से पहले डिप्टी सीएम वाराणसी में 28 अप्रैल को पहुंच विभिन्न कार्यक्रम में शामिल होंगे। वहीं माना जा रहा है कि बीजेपी प्रत्याशी के पक्ष में वोट की अपील के लिए सांसद रवि किशन और दिनेश लाल यादव भी प्रचार कर सकते है।

समाजसेवी की नेक पहल संक्रमण से बचाव के लिए ब्लीचिंग पाउडर का किया छिड़काव

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मलेरिया और डेंगू वायरस के संक्रमण को रोकने को लेकर बुधवार को जखनिया ब्लाक के धामूपुर गांव में एक समाजसेवी के द्वारा ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव कराया गया। सृजन फाउंडेशन ट्रस्ट सेवा संस्थान के अध्यक्ष अनिकेत चौहान के नेतृत्व में गांव स्थित सभी गली व नालियों में ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया। इस दौरान समाजसेवी अनिकेत चौहान ने बताया की गांव में मलेरिया डेंगू वायरस का संक्रमण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अभी तक गांव में दवा का छिड़काव नही हुआ है। इस संक्रमण से बचने का एक मात्र उपाय अपने घरों आस पास नालियों को समय समय से साफ सफाई पर ध्यान देना होगा। इसलिए हम सभी लोग इसका पालन करें। घर के सामने बने नालियों गढ्डों में फिनायल तथा बिलीचीग पाउडर से मच्छरों के अंडे मर जाएंगे जिससे मच्छरों का प्रकोप कम बढ़ेगा, घरों से बाहर या खुले में सोने से पहले मच्छरदानी का प्रयोग जरूर करें।

समाजसेवी अनिकेत चौहान के माध्यम से सफाई कर्मचारी धर्मेंद्र चौहान, धनंजय कुमार, छविनाथ ने गांव धामूपुर के विभिन्न घरों व मोहल्लों और सभी राजस्व गावों में खड़े पानी में टोमीफास दवा का छिड़काव कर डेंगू व मलेरिया के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। समाजसेवी अनिकेत चौहान ने कहा कि खड़े हुए पानी में टोमीफास दवा का छिड़काव करने के साथ ही छतों पर पड़े लोगों के कूलर, रेफ्रिजरेटर, गमले और कचरे के सामान से भी पानी साफ कर रही है, ताकि डेंगू और मलेरिया के मच्छर पनप न सकें। विभाग की टीम ने आम लोगों को डेंगू और मलेरिया से बचाने के लिए जरूरी जानकारी भी दी।

सफाई कर्मचारी की टीम द्वारा गांव के सभी लोगों को जानकारी देते हुए बताया कि "घर में पानी इकट्ठा न होने दें, जमा हुए पानी में मच्छर पैदा होते हैं, मच्छरों के काटने से मलेरिया, टायफाइड व डेंगू जैसी जानलेवा बीमारियां होती हैं। इस अवसर पर गांव के गुड्डु, राजकुमार, राजू, अंकित, गोपाल आदि मौजूद रहे।

आकाशीय बिजली की चपेट में आकर मृतक किसान के घर पहुंचे किसान नेता

प्रखर मिजार्पुर। क्षेत्र के ग्राम मदनपुर खजुरौल, में अकाशीय बिजली की वजह से दिनांक 21/04/2023 को रात मे कल्लू सिंह का आकस्मिक निधन होने से स्वर्गीय कल्लू सिंह के आवास पर पहुंच कर भारतीय किसान यूनियन के लोग जनपद मिजार्पुर जिला अध्यक्ष कंचन सिंह फौजी के नेतृत्व, में प्रह्लाद सिंह प्रदेश महासचिव के साथ पहुंच कर शोकाकुल परिवार को शोक संवेदना व्यक्त करते हुए उनके बड़े पुत्र धर्मराज पटेल व छोटे पुत्र शिवाजी पटेल और उनके छोटे भाई रामनरेश सिंह व परिवार से मिलकर ढाढस बंधाया। और शासन से मांग किया की किसान के परिवार को किसान बीमा और मुख्यमंत्री राहत कोष से मुआवजा दिलाया जाय। साथ में मंडल अध्यक्ष अनिल सिंह, जिला महासचिव वीरेंद्र सिंह, धर्मेंद्र सिंह जिला मीडिया प्रभारी, महिला मोर्चा अध्यक्ष सावित्री देवी, डॉक्टर पंचम सिंह जिला सचिव , रामवृक्ष सिंह ब्लॉक अध्यक्ष नारायणपुर, अरविंद सिंह तहसील सचिव राम सूरत सिंह, जगदीश सिंह प्रधान ,लक्ष्मण सिंह , शिव कुमारी देवी, राधेश्याम सिंह , राममूरत सिंह बाबाजी, कृष्णदेव सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे।

हौसला बुलंद चोरों का आतंक किसान की 6 बकरियां उठा ले गए

प्रखर महराजगंज जौनपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के उमरी खुर्द में बीती रात चोरों ने किसान की 6 बकरियां पिकअप पर लादकर उठा ले गए नींद खुलने पर जब तक किसान शोर मचाते तब तक चोर रफूचक्कर हो गए थे मिली जानकारी के अनुसार उमरी खुर्द निवासी रामचंद्र केवट की 6 बकरियां हौसला बुलंद चोरों ने बीती रात को पिकअप पर लाद कर लेकर चले गए वही महराजगंज थाना अंतर्गत चोरों का आतंक इस कदर है कि लोगों में भय व्याप्त जहां पूर्व क्षेत्र में लगभग दर्जनभर चोरियां हुई लेकिन एक भी चोरी का खुलासा नहीं हो सका है वहीं पीड़ित आरोप लगाते हुए कहा कि थानाध्यक्ष महराजगंज चौकी इंचार्ज एबीएस नगर पर आरोप लगाते हुए कहा कि तहरीर देने गया था तो डांट कर भगा दिया देखना यह है कि प्रशासन ऐसी घटनाओं पर क्या कारवाई करता है।

संक्षिप्त खबरें

पोखरा सहुआइन के आबपासी पर अवैध अतिक्रमण

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। नगर पालिका परिषद के मुहाल पोखरा सहुआइन में साहु परिवार द्वारा निर्मित प्राचीन पोखरा जिस पर अनेक धार्मिक कृत्य यथा विजयादशमी,छठ पूजा,ज्यूतिया, देवदीपावली वगैरह मनाया जाता है। उक्त पोखरे (तालाब) में जल भराव हेतु आबपासी निर्मित है जो राजस्व नक्शे में भी है। किंतु आबपासी के अगल बगल के काश्तकार उक्त नाले को क्षतिग्रस्त कर उस पर अवैधानिक कब्जा किया जा रहा।नगर के मध्य में स्थित इस तालाब पर आस पास और नगर के मरणेत्तर कार्यक्रम एवं अनेकानेक धार्मिक कार्यों को किया जाता है, पशुओं को पीने के लिए पानी भी उपलब्ध करात है।साहु परिवार के समुचित देख रेख के कारण यह अन्य तालाबों की भांति नष्ट होने से बचा हुआ है। नगर में स्थित सभी तालाबों के आबपासी का राजस्व नक्शे से मिलान करने पर सभी पर अवैध कब्जा निर्माण मिलेगा। शासन प्रशासन को संज्ञान में लेकर उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्र के कई मेधावी मेरिट में आने से चुके

प्रखर पिंडरा वाराणसी। क्षेत्र के एक दर्जन इंटर कॉलेजों का हाईस्कूल व इंटर का परिणाम 95 फीसदी से अधिक रहा। वही कई कॉलेजों के छात्र जिले के मेरिट में आने से कुछ अंको से चूक गए। खालिसपुर स्थित सन्त नारायण बाबा इंटर कालेज का परिणाम शत प्रतिशत रहा। स्कूल के छात्र प्रियांशु यादव ने हाईस्कूल में 93.83 अंक प्राप्त किया वही इंटर के छात्र आकाश चौहान ने 92 फीसदी अंक प्राप्त किया। वही देवमूर्ति शर्मा इंटर कालेज दबेथुवा के हाईस्कूल के छात्र अभय यादव ने 93. 67 फीसदी अंक प्राप्त किया। फूलपुर स्थित जय माँ अम्बे चन्द्रावती देवी इंटर कालेज की इंटर की छात्रा सुष्मिता जैसवार ने 92.80 फीसदी तथा हाईस्कूल के छात्र इंद्रप्रकाश ने 93. 66 फीसदी अंक प्राप्त किया। बनारसीपुर कठिराव स्थित श्री गणेश शिवनोहर इंटर कालेज का परिणाम भी 96 फीसदी रहा। आधा दर्जन छात्राये 90 फीसदी के लगभग अंक हासिल की। इसके अलावा खालिसपुर स्थित प्रेमबहादुर सिंह इंटर कालेज, पिंडरा स्थित नेशनल इंटर कालेज का परीक्षा परिमाण भी 95 फीसदी से अधिक रहा।

मेधावियों को आगे की पढ़ाई का खर्चा उठाएगा कॉलेज

पिंडरा वाराणसी। कठिराव स्थित सरयू प्रसाद इंटर कालेज के मेधावी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत करने के साथ उनके अभिभावकों को भी सम्मानित किया गया। कॉलेज परिसर में बुधवार को आयोजित सम्मान समारोह के दौरान जिले के हाईस्कूल की मेरिट में तीसरा स्थान प्राप्त अंकिता देवी के अलावा कॉलेज की छात्रा उर्मिला मौर्या व 12 वी की छात्रा काजल यादव व प्रिया यादव के साथ उनके अभिभावकों को प्रबन्धक आदित्य नारायण दुबे ने अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान प्रबन्धक ने मेधावी छात्रों के आगे की पढ़ाई का खर्चा उठाने का जिम्मा लिया। इस दौरान अभिभावक, शिक्षक व छात्र उपस्थित रहे।

आसमा कॉलेज का हाईस्कूल का रिजल्ट रहा शत प्रतिशत

प्रखर खेतासराय जौनपुर। मंगलवार को यूपी बोर्ड के आये परिणाम में हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के छात्राओं का दबदबा रहा । आसमा कालेज के इंग्लिश मीडियम के हाईस्कूल में अधिकतर छात्र प्रथम श्रेणी में परीक्षा पासकर स्कूल और जनपद का नाम रोशन किया है । जिसमे जैनब ने स्कूल को टॉप किया है । विद्यालय के प्रबंधक ने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें सम्मानित किया। प्रधानाचार्य अम्मार वहीद ने बताया कि जैनब खातून 92% के साथ प्रथम, रुश्दा खान 90% द्वितीय, नेदा अंजुम 89.5% तृतीय के इलावा हाजरा 85%, सालेहा खातून 84.33%, नमीरा कामरान 83%, कहकशां 82%, सना 82%, शारीश 82%, अम्बर नाज 81.66 समेत 40 छात्रों ने प्रथम पोजीशन में परीक्षा उत्तीर्ण की है । प्रबन्धक डॉ अब्दुल वहीद ने छात्रों ने इस सफलता पर शिक्षकों की सराहना की । कहा कि सही मार्गदर्शन और कड़ी मेहनत कभी बेकार नही जाती है । सफलता मिलकर रहती है । कम अंक पाने वाले बच्चे बिल्कुल निराश न हो । उधर यशोदा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जमदहा गांव निवासी मुस्कान गुप्ता ने हाइस्कूल की परीक्षा में 93% प्रतिशत अंक लाकर विद्यालय और गांव का नाम रोशन किया है । घर पहुँचकर लोग बधाई दे रहे है ।

ऐसी प्रतियोगिताएं जरूरी तो नहीं

कभी आपने भी ऐसी प्रतियोगिताएं देखी होंगी, इनके बारे में सुना-पढ़ा होगा, जहां किसी को तयशुदा समय में अधिक से अधिक कीड़े खाने को कहा जाता है। कोई एक साथ पचास अंडे खाता है तो कोई पचास-सौ रोटियां/पूड़ियां तो कोई मिर्च तो कोई सौ रसगुल्ले एक साथ। इन दिनों आम का मौसम है। वैसे भी आम लुभाते भी बहुत हैं। आखिर ऐसा कौन है, जो आम न खाना चाहे। आम के मौसम में जगह-जगह सरकारी, गैरसरकारी तौर पर आम महोत्सव भी आयोजित किए जाते हैं। इसमें भी दिए गए समय में अधिक से अधिक आम खाने पड़ते हैं। इन सब प्रतियोगिताओं में एक बात समान होती है, तय समय में अधिक से अधिक खाना। जरा सोचें कि एक ही व्यक्ति अगर जल्दी-जल्दी पचास अंडे खाए, सौ पूड़ियां या रोटियां अथवा सौ रसगुल्ले और इतने ही आम तो उसका क्या बनेगा। वह कैसे बीमारियों की आफत से बचेगा। कौन सी ताकत उसे बीमार पड़ने से रोक लेगी। लोग बीमार ही नहीं पड़ते, कई बार उनकी मृत्यु तक हो जाती है। लेकिन इस बात से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता न आयोजकों को न प्रतिभागियों को। अपनी ईवेंट को अधिक से अधिक चर्चा में लाना ही ऐसी प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य होता है। प्रतिभागियों को भी मीडिया कवरेज, न्यूज में छा जाने और इनामों की होड़ में देखा जा सकता है।

यही है जिंदगी

■ क्षमा शर्मा

किसी एक व्यक्ति द्वारा इतना अधिक खाने से उसने कितनी कैलोरी खाई, इसका उसके स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ा इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता। ऐसी बातों में

एडवेंचर और चर्चा की भावना इतनी अधिक है कि और किसी बात पर ध्यान ही नहीं दिया जाता। कोई ध्यान भी क्यों दे क्योंकि ये बातें तो पृष्ठभूमि में रह जाती हैं।

आपने भी अपने परिवार वालों से बचपन में ऐसे किस्से सुने होंगे कि फलां को अपने यहां कभी मत बुलाना। अगर बुलाना तो खाना कभी मत खिलाना। अगर खाने बैठ गया तो पूरे परिवार के लिए जितना आटा मांड़ा गया है, अकेला ही खा जाएगा। या फलां आदमी थाल भरकर जलेबी अकेला ही खा जाता है। श्राद्ध या किसी शादी, विवाह, मुंडन आदि अवसरों पर ऐसे प्रतापियों को अकसर याद किया जाता था। अकसर ये बातें हंसी-मजाक के लिए किए जाते थे। इन किस्सों को इस तरह से पेश भी किया जाता था कि लोग हंसते-हंसते लोटपोट हो जाएं। उन दिनों ऐसा वे लोग किस कारण करते थे, क्यों इतना ज्यादा खाते थे, यह पता नहीं लेकिन आजकल तो ये सब बातें किसी प्रतियोगिता के लिए होती हैं।

> कई बार यह भी होता देखा गया है कि जिस खाद्य पदार्थ को एक ही समय में मात्रा में बहुत अधिक खाया, उससे इतनी नफरत हो जाती है, इसका स्वाद इतना उतर जाता है कि फिर जीवन भर उसे खाना तो दूर उसकी तरफ देखना मुश्किल हो जाता है। तो भला क्या फायदा कि जो खाने-पीने की चीजें बहुत अच्छी लगती थीं, उन्हें फिर कभी न खाया जा सके।

ऐसा भी नहीं है कि इन बातों से होने वाले नुकसानों से वे लोग अनिभज्ञ हों, जो इनमें भागीदारी करते हैं। या बड़े पैमाने पर ऐसे आयोजन करते हैं लेकिन जीतने, चर्चा और नाम कमाने की होड़ इतनी ज्यादा है कि सोचा जाता है कि जब कोई मुश्किल आएगी, तो तब की तब देखी जाएगी। कई बार यह भी होता देखा गया है कि जिस खाद्य पदार्थ को एक ही समय में मात्रा में बहुत अधिक खाया, उससे इतनी नफरत हो जाती है, इसका स्वाद इतना उतर जाता है कि फिर जीवनभर उसे खाना तो दूर उसकी तरफ देखना मुश्किल हो जाता है। तो भला क्या फायदा कि जो खाने-पीने की चीजें बहुत अच्छी लगती थीं, उन्हें फिर कभी न खाया जा सके। खाना तो दूर उनकी तरफ देखने भर से परेशानी हो। इसलिए जरूरी है कि ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने से पहले भला-बुरा सोचें। इनाम नहीं भी मिलेगा तो कोई बात नहीं, चर्चा न भी होगी तो भी चलेगा, लेकिन बहुत सी इल्लतों से बचे रहेंगे। जीवन वही अच्छा जो सरल हो। जिसमें मामूली बातों पर हार-जीत न हो। ■

लॉकर की कुंजियां हैंड बैग में

खरी खरी

■ मनीषा

इन दिनों किसी भी बैंक में जाएं, चारों तरफ युवतियां ही नजर आती हैं। नजारा देखकर लगता है मानो फाइनेंस का मसला तेजी से उनके ही कन्धों पर टिकता जा रहा है। लड़कियां कॉमर्स पढ़ रही हैं, बीटेक करने वालियां भी तेजी से फाइनेंस में हाथ आजमा रही हैं। 2006 से 2021 के दरम्यान बैंकिंग व फाइनेंस सेक्टर में औरतों की संख्या में काफी इजाफा नजर आया है। पब्लिक सेक्टर बैंकों में उनकी संख्या 27% तक पहुंच चुकी है। जबकि प्राइवेट व विदेशी बैंकों में यह प्रतिशत साढ़े बाइस व साढ़े इकतीस पर ही पहुंच पाया है। बैंकों की नौकरी सुरक्षित व वेतन बढ़िया है। अपने यहां भरपूर छुट्टियां तो हैं ही। सोचनीय है, यूएस बैंकिंग इंडस्ट्री में (2021) तकरीबन 56% महिला कर्मचारी हैं। कनाडा में 46.7% व फ्रांस में 56, जर्मनी में 51% औरतें हैं। रिजर्व बैंक द्वारा दिये (बेसिक स्टेटिस्टिकल रिर्टन के) आंकड़ों के अनुसार, अपने यहां सभी बैंकों में तकरीबन 24% महिला कर्मचारी (2021-22) हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नैशनल बैंक, आईसीआईसीआई व एचडीएफसी बैंक में टोटल वर्कफोर्स की महिला कर्मचारी एक चौथाई के करीब पहुंच पायी हैं। वित्तीय संस्थानों में सीईओ व सीएफओ जैसे पदों पर दो फीसद औरतें भी काबिज नहीं हैं। लड़कियां कड़े संघर्षों के साथ यहां तक पहुंच रही हैं। आपको शायद ही कभी यह सोचने की जरूरत हुई हो कि फाइनेंस के मामले में औरतें क्यों नहीं कूद पाती। पुराने तमाम अध्ययन कहते रहे हैं कि औरतें आर्थिक मामलों से घबड़ाती हैं। आईएमएफ की निदेशक रहीं क्रिस्टीन लेगार्ड कहती थीं- लेहमैन भाइयों (अमरीकन ग्लोबल फाइनेंसेस सर्विसेज के संस्थापक) की यदि लेहमैन बहनें भी होती, तो आज की आर्थिक स्थितियां बिल्कुल विपरीत ही होती। यह सच है कि वित्त संबंधी क्षेत्रों में काम करने वाली औरतों से भी इस पर गंभीर बात ज्यादा नहीं की जाती। आपको सब कुछ दूर से ही हरा-भरा लग सकता है। यह कहना गलत नहीं है कि इस क्षेत्र में खुद को प्रूव करना कठिन होता है। क्योंकि फाइनेंस क्षेत्र अब तक पूरी तरह पुरुषों के कब्जे में रहा है। आज भी खांटी पुरुष बैंकिंग या फाइनेंस में औरतों की दखलंदाजी से हैरान हैं। सहकर्मी ही नहीं, ग्राहकों के तेवर भी औरतों के प्रति सामान्य नहीं नजर आते।

कुछ बिजनेस विश्लेषक कहती हैं- जब हमने अपने परिवार से बताया कि यह काम चुना है, सब चुप हो गये। तंज में यह भी कहा गया तो अब तुम बैंकर हो गई। विदेशी फाइनेंस कंपनी में कार्यरत स्त्री बताती है, जो 30 के भीतर ही है- कुछ लोग खासकर इस क्षेत्र से बाहर के पुरुष समझते हैं मानो आप कोई राक्षसों से भरे माहौल में काम कर रही हो। शेयर बाजार के लिए एनालिसिस करने वाली युवती बताती है, पुरुष सहयोगियों को लगता है, यह किसी तरह का समझौता है। जैसे हमने उनका काम झपट लिया हो। मेरी बैंकर भौजाई कहती है, कुछ को लगता है कि जैसे मेरा फ्रिज बस पुरानी/बासी, बची-खुची चीजों से ही भरा रहता है। वे सलाह देते हैं कि तुमको अच्छा काम मिल सकता है, जिसे तुम मजे भी कर सको। आर्थिक क्षेत्रों में तमाम अन्य क्षेत्रों की तरह जबरदस्त लैंगिक विषमताएं हैं। दूसरे सेक्टरों की तरह यहां औरतों का स्वागत करने की कोई उतावली नहीं। मेरे कई परिचित बैंकर पुरुष, जो अधेड़ावस्था में हैं या दो-चार साल में रिटायर होने वाले हैं, अपनी सहयोगी युवतियों से आजिज हैं। कई तो अपनी जवान मैनेजर के दबाव में वीआरएस लेने पर आमादा हो रहे हैं। दरअसल उनके भीतर पीओ या ब्रांच मैनेजर पद पर आसीन स्त्री के अधीन काम करने में हीनता भाव पैदा होता है। वे इस हकीकत को गले नहीं उतार पाते और नयी पीढ़ी को कोसने पर उतारू हो जाते हैं। जोड़-घटाव में खुद को अव्वल मानने वाले पुरुषों को सहकर्मी या बॉस के रूप में स्त्री खटकती है। मगर जब अपढ़ों/ बुजुर्गों के साथ वही बैंकर सलीके से पेश आती है तो उन्हें बहुत भला महसूस होता है। मैंने देखा है, इने-गिने मामलों को छोड़ दें तो युवतियां भद्रता से पेश ही नहीं आतीं बल्कि वे सहयोगी भी सिद्ध होती हैं। औरतें सभी क्षेत्रों में हाथ आजमा रही हैं, यह सच है पर अभी मीलों का सफर तय करना है। जरूरी नहीं कि इस चुनाव में उनकी रुचि भी शामिल हो क्योंकि अभी तो नौकरी पाना ही अपने यहां जंग के बराबर है। उस पर उन्हें दूर-दराज ट्रांसफर करने वाले भी कम नहीं हैं। स्त्री सीए को देखते ही वे दिमाग के घोड़े दौड़ाने लगते हैं। जबकि पुरुषों के मुकाबले औरतें बेहतर रिस्क मैनेजर साबित हो रही हैं। नौकरी देने में होने वाले लैंगिक विभेद का नतीजा है कि शैक्षणिक योग्यता व अनुभवों के बावजूद उन्हें समुचित मौके नहीं दिये जाते। बोर्ड में औरतों की भागीदारी बढ़ाने के दबावों के बावजूद झिझक स्पष्ट नजर आती है। जिसका सीधा असर बड़े निर्णयों पर देखने को मिलता है। उच्च पदों पर औरतों को मुनाफिक पद दिये जाने पर प्रबंधन में सुधार आता है, वह बैंकिंग हो फाइनेंस या अन्य कोई भी क्षेत्र। ■

> सोचनीय है, यूएस बैंकिंग इंडस्ट्री में (2021) तकरीबन 56% महिला कर्मचारी हैं। कनाडा में 46.7% व फ्रांस में 56, जर्मनी में 51% औरतें हैं। रिजर्व बैंक द्वारा दिये (बेसिक स्टेटिस्टिकल रिर्टन के) आंकड़ों के अनुसार, अपने यहां सभी बैंकों में तकरीबन 24% महिला कर्मचारी (2021-22) हैं

वनीला कुल्फी

अनिता घोष

सामग्री- फुल क्रीम दूध दो लिटर, मिल्क मेड 50ग्राम, चीनी 500 ग्राम, आधा कप भुना हुआ बादाम, 4-5 केसर, इलायची पाउडर आधा चम्मच।

विधि- मीडियम आंच पर दूध को बर्तन में उबाल लें। जब दूध उबल कर आधा हो जाए तब उसमें चीनी, बादाम, मिल्क मेड, इलायची पाउडर डालकर अच्छे से मिलाएं। जब दूध गाढ़ा होने लगे तो आंच बंद कर दें। कुल्फी का मिश्रण तैयार हो गया। अब इस मिश्रण को कुल्फी के सांचे में डालकर डिप फ्रिज में 7-8 घंटों के लिए जमने रख दें। तय समय के बाद फ्रिज से निकाले। वनीला कुल्फी तैयार है। प्लेट में निकाल कर केसर से सजाकर सर्व करें।

ग्रिल बटर सैंडविच

सामग्री- 8 स्लाइस ब्रेड, दो उबला आलू, एक बड़ा प्याज बारीक कटा हुआ, 3-4 हरी मिर्च बारीक कटी हुई, दो चम्मच कटा हुआ हरा धनिया, 50 ग्राम बटर, 50 ग्राम मायोनीज, नमक स्वादानुसार।

विधि- सबसे पहले ब्रेड में बटर लगाएं। एक पैन में बटर डाल कर गर्म करें। बटर गर्म हो जाने बाद प्याज डाल कर 3-4 मिनट तक भूनें। फिर आलू, हरी मिर्च, नमक, धनिया पत्ता, मायोनीज डाल कर मिश्रण तैयार करें। अब बटर लगाएं ब्रेड में इस मिश्रण को थोड़ा-थोड़ा डालें। दूसरी बटर लगें ब्रेड स्लाइस को ऊपर से कवर करें। सैंडविच को टोस्टर या फिर सैंडविच मेकर में डालकर सेंक लें। प्याज के छल्लें और सॉस के साथ परोसें।

पपीते का हलवा

सामग्री- दूध दो कप, एक कटोरी कद्दूकस किया हुआ कच्चा पपीता, 10-15 काजू के टुकड़े, 20-25 किसमिस, 100 ग्राम खसखस, 10-15 बादाम कटा हुआ, एक कप फ्रेश क्रीम, दो कप चीनी पिसी हुई, इलायची पाउडर एक चम्मच, 2 चम्मच घी।

विधि-सबसे पहले मिक्सी में पपीता और खसखस को पीस कर पेस्ट बना लें। धीमी आंच में फ्राई पैन को गर्म करें। फिर दो चम्मच घी डालें। घी गर्म होते ही इसमें पपीते का पेस्ट डाल दे। अब दस मिनट तक करछुल से चलाते रहें। थोड़े समय के बाद इसमें काजू, किसमिस,बादाम, इलायची पाउडर और दूध डालकर धीमी आंच में लगातार चलाते रहें। जब दूध गाढ़ा होकर करीब सुख जाए तब चीनी और फ्रेश क्रीम मिला दें। पपीते का हलवा तैयार है। फ्रीज में रखकर ठंडा सर्व करें। ■

गर्मियों में रखें आंखों का ख्याल

ब्यूटी

■ शहनाज हुसैन

गर्मियों में न सिर्फ स्किन को धूप से बचाना होता है बल्कि आंखों को भी सूरज की अल्ट्रावायलेट (यूवी) किरणों से बचाना होता है। विशेषज्ञ डॉक्टरों के अनुसार, जिन लोगों की मोतियाबिंद या लेसिक सर्जरी हुई है या जिन्हें रेटिनल संबंधी कुछ विकार हैं, उनमें दूसरों की तुलना में अल्ट्रावायलेट से खतरा अधिक होता है। धूप का चश्मा या टोपी पहनकर आंखों को उसी तरह सुरक्षित रखा जा सकता है, जिस प्रकार सनब्लॉक से स्किन का बचाव होता है। एक और समस्या जो गर्मियों में अक्सर होती है, वह है स्विमिंग पूल में क्लोरीन से आंखों में जलन। क्लोरीन से आंखों में लालिमा और रूखापन और कभी-कभी जलन हो सकती है। नहाने के तुरंत बाद नहाते समय आंखों पर पानी के छींटे मारें। सलाइन आई ड्रॉप भी डाल सकते हैं। तब भी जलन व रूखापन रहता है तो नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श लें।

ठंडे पानी से आंखों पर छींटे मारने से गर्मी में काफी राहत मिलती है। कंट्रास्ट धुलाई से आंखों की थकान और सूजन दूर होती है। गर्म पानी से धो लें इसके बाद आंखों पर ठंडे पानी के छींटे मारें। इससे आंखों में ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और कंजेशन से राहत मिलती है। थकान और सूजन दूर करने के लिए टी बैग्स को आई पैड की तरह इस्तेमाल करें। उन्हें गर्म पानी में डुबोएं, ठंडा होने दें और आंखों के पैड के रूप में इस्तेमाल करें। बहुत पतले कच्चे आलू के स्लाइस को आंखों के ऊपर, आई पैड की तरह इस्तेमाल करें। ये पफनेस को कम करते हैं और स्किन की समस्याओं को रोकते हैं। कुछ नेचुरल तत्व नेचुरल कूलेंट होते हैं। खीरे का रस या कद्दूकस किया खीरा आंखों के आसपास लगाने से आंखों की थकान दूर होती है और आंखों को आराम मिलता है। खीरे के रस में रुई भिगोकर पलकों पर आई पैड की तरह लगाएं। लेटकर 15 मिनट आराम करें। यह गर्मियों में आंखों की थकान से काफी राहत देता है। ठंडा गुलाब जल भी इसी तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

आंखों के आसपास की स्किन बेहद नाजुक होती है। इसमें तेल ग्रंथियां नहीं होती हैं। इससे होने वाली कुछ समस्याओं में डार्क सर्कल्स, पफनेस और फाइन लाइन्स हैं। आंखों के आस-पास विशेष देखभाल और कोमल स्पर्श की आवश्यकता होती है। डार्क सर्कल्स और फाइन लाइन्स के लिए रोजाना बादाम के तेल को आंखों के चारों ओर थोड़ा-थोड़ा करके लगाएं और एक मिनट तक अंगुली से स्किन पर हल्के से मालिश करें। केवल एक साइड में मालिश करें। स्किन को खीचने से बचें। 15 मिनट के लिए छोड़ दें और रूई से पोंछ लें।

खीरे का रस और अंडे का सफेद भाग मिलाएं। रोजाना 20 मिनट तक आंखों के नीचे लगाएं। सादे पानी से धो लें। खीरे का कूलिंग इफेक्ट होता है, यह स्किन को टाइट भी करता है। कुछ आसान घरेलू नुस्खे आजमाएं। बंद आंखों पर बर्फ के पानी या ठंडे दूध का सेक लगाएं, 15 से 20 मिनट के लिए छोड़ दें। रूई के फाहे को ठंडे गुलाब जल में भिगोकर 10 से 15 मिनट के लिए आंखों के नीचे रखें। कद्दूकस किए आलू या आलू के रस को आंखों के आसपास लगाने से भी आंखों की सूजन कम होती है।

आंखों के नीचे सूजन के लिए, डॉक्टर से सलाह लें कि किडनी और साइनस में कोई समस्या तो नहीं है। धूप में निकलने से पहले आंखों के नीचे सनस्क्रीन लोशन लगाएं। हल्का कवरेज देने के लिए, लगाने से पहले इसमें पानी की एक बूंद डालें। पौष्टिक और संतुलित आहार से काले घेरों को रोका जा सकता है। खाने में दही, पनीर, दाल और राजमा के साथ-साथ ताजे फल, सलाद, दही और स्प्राउट्स शामिल करें। दैनिक व्यायाम और गहरी सांस लेने से भी आंखों को राहत मिलती है। ■

टैरो

ऋचा श्रीवास्तव

(26 अप्रैल - 2 मई)

मेष-(21मार्च-20अप्रैल)-भाग्यशाली सितारा, आत्मविश्वास और शक्ति प्रदान कर सकता है। पैसों की कमी नहीं होगी। पेशेवर जीवन में उन्नति मिलने की सम्भावना है। विवाह के योग बन रहे हैं। बिछड़े हुए मित्रों से दोबारा संपर्क हो सकता है। जिन लोगों ने हाल ही में कोई व्यवसाय शुरू किया है, उन्हें जल्द ही निवेश पर अच्छा रिर्टन मिल सकता है।

वृषभ -(21अप्रैल -21मई)- पेशेवर और वित्तीय मोर्चे पर अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना करने के कारण धैर्य की परीक्षा हो सकती है। किसी भी समस्या का सामना करने पर बॉक्स के बाहर सोचने का प्रयास करना अच्छा कदम हो सकता है। खर्च पर नियंत्रण रखें। घाटे को मुनाफे में बदलने में अभी और समय लग सकता है। दिनचर्या में योग अथवा व्यायाम शामिल करें। संगीत सुनें। मन को शांत रखें।

मिथुन-(22मई -21जून)- कुछ रोमांचक नए अवसर लेकर आ सकता है। ईमानदारी और संकल्प के कारण, सफलता का रहस्य मिल सकता है। वित्तीय मुआवज़ा भी मिल सकता है। घर में पारिवारिक अनुष्ठान या समारोह आयोजित करने की सम्भावना है। जो व्यवसाय करते है वे आय के नए स्त्रोत उत्पन्न करने की आशा कर सकते हैं, जो नौकरी पेशा हैं वे वित्त में लाभ की उम्मीद कर सकते हैं।

कर्क-(22जून 22जुलाई)- खुद को फिर से ऊर्जावान बनाने और विश्वास करने की जरूरत है। महत्वकांक्षाओ को साकार करने के लिए नए अवसरों की तलाश शुरू करने का समय है। खुद को साबित करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। वित्त को मजबूत करने के लिए भरोसेमंद लोगों की सलाह लेने की जरुरत है। स्वस्थ्य के प्रति लापरवाही ना बातें।

सिंह-(23जुलाई- 21अगस्त)- महत्वकांक्षी योजनाओं को क्रियान्वित करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। नियमित रूप से योगाभ्यास करें। परिणाम लाभप्रद होंगे। पैसे बचने से आर्थिक स्तिथि में सुधार हो सकता है। नौकरी में सकारात्मक बदलाव मिलने की सम्भावना है। परिवार के किसी सदस्य की बिगड़ती सेहत में सुधार देखने को मिल सकता है।

कन्या-(22अगस्त -23सितम्बर)- ढेर सारी समस्याओं का आसानी से सामना कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सामना किसी ऐसे व्यक्ति से हो सकता है, जिसके विचार जीवन के प्रति दृष्टिकोण बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। व्यस्त कार्यक्रम में से प्रियजनों को समायोजित करने के लिए समय निकालें। खर्च के प्रति सतर्क रहें अन्यथा धन की बचत संभव नहीं होगी।

तुला(24सितम्बर-23 अक्टूबर)- निजी संबंध मधुर होंगे। यात्रा का योग बन सकता है। व्यावसायिक क्षेत्र में रचनात्मकता व कार्यकुशलता से सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। भावनाओं से व्यवसायिक दिशा व निजी निर्णय प्रभावित होते हैं। व्यवसायिक जीवन में योजनाएं फलीभूत होंगी। प्रयास जारी रखें। भौतिक लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

वृश्चिक(24अक्टूबर-22नवंबर)-यदि काबिलियत दिखाने के मौके का इंतजार कर रहे हैं तो समय अनुकूल है। छिपी प्रतिभा दिखाने का मौका है। सामाजिक रूप से, उन दोस्तों से मिल सकते हैं जिन्हें भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होगी। उन्हें सलाह देने से बचें, उनके लिए बने रहें। जो बाहर उद्यम करना चाहते हैं, उन्हें यात्रा के रोमांचक अवसर मिल सकते हैं।

धनु(23नवम्बर-22दिसम्बर)- पेशेवर जीवन के लिहाज से संतुष्टि महसूस नहीं होगी, ऐसे में निरन्तर बदलाव की तलाश में रहेंगे। जॉब प्रोफाइल से नाखुश रहने के कारण नकारात्मक प्रभाव काम पर दिखाई देगा। लगन और शांतिपूर्वक काम करना चाहिए। आर्थिक पक्ष सामान्य रहेगा। फिजूल खर्च से बचें। विचारों का बोझ स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डाल सकता है। मन को शांत रखें, योग एवं ध्यान अपनाएं।

मकर (23दिसम्बर-20जनवरी)- नए अवसर मिलेंगे। विवाह के लिए समय अनुकूल है। विवाह की बात चल सकती है। पारिवारिक सुख बना रहेगा। उन्नति प्राप्त होगी। विदेश से सम्बंधित कार्य सफल होंगे। रुके हुए काम बनेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए शुभ रहेगा। वित्त आगे बढ़ने की उम्मीद है।

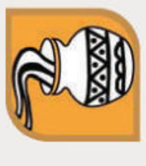

कुम्भ (21 जनवरी-19फरवरी)- कुछ वक्त लगेगा व्यवसाय हो या नौकरी दोनों ही क्षेत्र में उन्नति के द्वार खुलेंगे। आर्थिक निवेश करने के पूर्व जानकारी ले लें अन्यथा हानि उठनी पड़ सकती है। ऐसा कोई काम न करें, जिसमे जोखिम हो अन्यथा परेशानी बढ़ सकती है। मतभेद की सम्भावना है, समझदारी से काम लें। वैवाहिक जीवन में कटुता आ सकती है।

मीन(20फरवरी-20मार्च)- नए मौके और नए प्रस्ताव लेकर आएगा। जिस चीज के बारे में सोच रहे थे, उसके लिए सही दिशा देने में भी सफलता मिलेगी। आगे बढ़ने के प्रयास सफल रहेंगे। खुद का काम करना चाहते हैं तो आगे बढ़ें। सफलता कदम चूमेगी। कार्य को लेकर विदेश यात्रा के भी योग है।

संक्षिप्त खबरें

अनुपम रसायन को मिला 380 करोड़ रुपये का ठेका

नई दिल्ली। विशेष रसायन बनाने वाली कंपनी अनुपम रसायन ने मंगलवार को कहा कि एक अमेरिकी कंपनी को अगले पांच वर्ष तक नए पीढ़ी के विशेष रसायन की आपूर्ति करने के लिए उसे 380 करोड़ रुपये का ठेका मिला है। कंपनी ने अमेरिका की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी को नए पीढ़ी के विशेष रसायन की अगले पांच वर्ष तक आपूर्ति करने के लिए 380 करोड़ रुपये (4.6 करोड़ डॉलर) के आशय-पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस उत्पाद का विनिर्माण कंपनी के बहुउद्देशीय विनिर्माण केंद्रों में किया जाएगा। अनुपम रसायन 71 से अधिक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के लिए उत्पादों का विनिर्माण करती है।

स्मार्टवर्ल्ड डेवलपर्स ने 3500 करोड़ की संपत्तियां बेचीं

नई दिल्ली। रियल एस्टेट कंपनी स्मार्टवर्ल्ड डेवलपर्स ने मंगलवार को कहा कि बीते वित्त वर्ष में उसे 3,500 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग मिली है। कंपनी ने एक बयान में बताया कि 2022-23 में उसने 1,438 आवासीय इकाइयों और 28.7 लाख वर्गफुट क्षेत्र की बिक्री की है। यह कंपनी रियल एस्टेट क्षेत्र के एम3एम समूह का हिस्सा है। कंपनी ने इससे पिछले वित्त वर्ष की बिक्री बुकिंग का आंकड़ा नहीं दिया। कंपनी ने बताया कि उसका लक्ष्य 2023-24 में 7,000 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग हासिल करने का है। वह महंगी और अत्याधुनिक सुविधाओं वाली परियोजनाओं के जरिये दो नए भौगोलिक क्षेत्रों नोएडा और बेंगलुरु में प्रवेश करने वाली है। स्मार्टवर्ल्ड डेवलपर्स के मुख्य मुख्य कार्यकारी अधिकारी विवेक सिंघल ने यह जानकारी दी।

स्टर्लिंग जेनरेटर्स को 510 करोड़ रुपये के ऑर्डर मिले

नई दिल्ली। स्टर्लिंग जेनरेटर्स प्रा. लि. को मिले ऑर्डर का आकार वित्त वर्ष 2022-23 में 510 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया। भारत में जेनसेट कारोबार की अग्रणी स्टर्लिंग जेनरेटर्स ने मंगलवार को बयान में कहा कि 31 मार्च, 2023 को समाप्त हुए वित्त वर्ष में उसे 510 करोड़ रुपये से अधिक के ऑर्डर मिले थे। स्टर्लिंग एंड विल्सन समूह की कंपनी एसजीपीएल ने हाल ही में बड़े ग्राहकों से डेटा केंद्र खंड में तीन ऑर्डर हासिल किए हैं। इनमें से एक मलेशिया और दो भारत में हैं। स्टर्लिंग जेनरेटर्स के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) संजय जाधव ने कहा, 'बिजली उत्पादन में उपयोगी डीजल और गैस इंजन के एक फ्रांसीसी विनिर्माता मोटर्स बौडुऑन के साथ हमारे रणनीतिक गठजोड़ के बाद स्टर्लिंग जेनरेटर्स के लिए ऑर्डर बुक में तेजी आई है।

प्रोमेथियस मप्र में लांच करेगा तीन और प्लांट

नई दिल्ली। ग्वालियर और मध्य प्रदेश में सफलतापूर्वक रीसाइक्लिंग प्लांट लॉन्च करने के बाद प्रोमेथियस मध्य प्रदेश में तीन और नए प्लांट लॉन्च करने जा रहा है ताकि यह मध्य प्रदेश में ई वेस्ट रीसाइक्लेर में नंबर वन बन जाए। यह कंपनी वेस्ट मैनेजमेंट के जिम्मेदार और सस्टेनेबल तरीकों को प्रमोट कर रही है। यह तीन नए लॉन्च भी इसके पर्यावरण सस्टेनेबिलिटी की ओर किए गए दृढ़ निश्चय को दर्शाता है। यह तीन नए प्लांट्स को लॉन्च करना कंपनी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इस प्रकार यह ई वेस्ट इस क्षेत्र में लीडर बन सकती है। वेस्ट मैनेजमेंट की इस तरह की तकनीकों को देख कर बाकी कंपनी भी इस तरह की तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित होंगी। इस प्रकार सभी बड़ी कंपनियां आने वाले भविष्य को ग्रीनर और सस्टेनेबल बनाने में मदद कर पाएंगी।

नुवामा वैल्थ एयूए को 2.5 लाख करोड़ करेगी

नई दिल्ली। एचएनआई और समृद्धों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने वाले नुवामा वैल्थ मैनेजमेंट की निजी वैल्थ शाखा, नुवामा वैल्थ ने अपने एस्सेट अंडर एडवाईस (एयूए) को 5 गुना बढ़ाकर 2028 तक 2.5 लाख करोड़ रु. (30 बिलियन अमेरिकी डॉलर) तक ले जाने के महत्वाकांक्षी उद्देश्य की घोषणा की। यह ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता के एडवाईज़री एवं वैल्थ समाधान उपलब्ध कराने की इसकी बड़ी योजना के अनुरूप है। नुवामा वैल्थ एक ही उत्पाद पर केंद्रित वितरण फ्रैंचाईज़ी से बढ़कर एक पूर्ण सुविधायुक्त वैल्थ मैनेजमेंट संस्थान में विकसित हो गया है। हाईब्रिड सर्विसिंग, मल्टी-प्रोडक्ट एवं सर्विसेज़, और कस्टमाईज़्ड सॉल्यूशंस के अपने मुख्य सिद्धांत के साथ ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करते हुए इसने अपने अंशधारकों के लिए महत्वपूर्ण वैल्यू निर्माण किया है।

गूगल की तत्काल सुनवाई की अर्जी दिल्ली हाईकोर्ट ने ठुकराई

■ नई दिल्ली (भाषा)।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने गूगल की ऐप भुगतान नीति पर एकल पीठ के आदेश के खिलाफ दायर अर्जी पर तत्काल सुनवाई करने से मंगलवार को मना कर दिया। एकल पीठ ने भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) को 26 अप्रैल तक इस मामले पर विचार करने को कहा था।

गूगल की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता संदीप सेठी ने मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ से इस मामले में तत्काल सुनवाई का अनुरोध किया था।

उच्च न्यायालय की एकल पीठ ने सोमवार को सीसीआई से गूगल की नई भुगतान नीति के खिलाफ दायर अलायंस ऑफ डिजिटल इंडिया फाउंडेशन की अर्जी पर 26 अप्रैल तक विचार करने को कहा था। न्यायमूर्ति तुषार राव गडेला ने अपने आदेश में कहा था कि प्रतिस्पर्धा आयोग गूगल की ऐप डाउनलोड एवं भुगतान संबंधी नीति पर 26 अप्रैल तक या उसके पहले विचार करे।

देश में नवाचारी स्टार्टअप कंपनियों के प्रतिनिधि संगठन एडीआईएफ ने कमीशन के आधार पर ऐप में खरीद की छूट और डाउनलोड की सुविधा देने की गूगल की नीति को चुनौती दी है। इसने भुगतान कर डाउनलोड किए जाने वाले ऐप और ऐप के जरिये खरीद में बाहरी भुगतान सुविधा प्रदाताओं को कमीशन के आधार पर मंजूरी देने का विरोध किया है। याची के वकील सेठी ने मुख्य न्यायाधीश की अगुवाई वाली पीठ से गूगल की याचिका पर फौरन सुनवाई करने का अनुरोध करते हुए कहा कि एकल पीठ के आदेश पर प्रतिस्पर्धा आयोग दोपहर के समय एडीआईएफ के अनुरोध पर विचार कर सकता है। लेकिन पीठ इस दलील से सहमत नहीं हुई और उसने फौरन सुनवाई से इनकार कर दिया।

डॉलर के मुकाबले रुपया 81.92 प्रति डॉलर पर स्थिर

मुंबई (भाषा)। विदेशी कोषों की निकासी और कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बीच अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 81.92 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर लगभग अपरिवर्तित रहा।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 81.95 प्रति डॉलर पर खुला। कारोबार के अंत में यह अपने पिछले बंद भाव यानी 81.92 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर अपरिवर्तित बंद हुआ। कारोबार के दौरान रुपये में 81.86 के उच्चस्तर और 81.96 के निचले स्तर के बीच घटबढ़ हुई।

सोमवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 81.92 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। एलकेपी सिक्योरिटीज के शोध विश्लेषक विभाग के उपाध्यक्ष जतिन त्रिवेदी के अनुसार, डॉलर सूचकांक के एक दायरे में रहने के बीच रुपया 81.90 के करीब कारोबार कर रहा था। इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत बढकर 101.40 हो गया।

शेयर बाजार में लगातार दूसरे दिन तेजी, सेंसेक्स 75 अंक चढ़ा

■ मुंबई (भाषा)।

■ बिजली और वित्तीय कंपनियों के शेयरों में लिवाली से बाजार में मजबूती आयी

■ सेंसेक्स 60130.71 अंक पर बंद हुआ

घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को लगातार दूसरे दिन तेजी रही और बीएसई सेंसेक्स 74 अंक से अधिक के लाभ में रहा। बिजली और वित्तीय कंपनियों के शेयरों में लिवाली से बाजार में मजबूती आई। हालांकि, विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी और वैश्विक बाजारों में नरम रुख से लाभ पर अंकुश लगा। उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 74.61 अंक यानी 0.12 प्रतिशत की बढ़त के साथ 60,130.71 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह ऊंचे में 60,268.67 अंक तक गया और नीचे में 60,202.77 अंक तक आया।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 25.85 अंक यानी 0.15 प्रतिशत की बढ़त के साथ 17,769.25 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में बजाज फाइनेंस सबसे ज्यादा 2.38 प्रतिशत मजबूत हुआ। इसके अलावा बजाज फिनसर्व 2.11 प्रतिशत और इंडसइंड बैंक 1.66 प्रतिशत चढे। भारती एयरटेल, एसबीआई, एलएंडटी में क्रमशः 1.60 प्रतिशत, 1.28 प्रतिशत और 0.92 प्रतिशत की तेजी रही।

इसके उलट, नुकसान में रहने वाले शेयरों में एचडीएफसी बैंक, एचडीएफसी लि., टेक महिंद्रा, सन फार्मा, विप्रो और एक्सिस बैंक शामिल है। इनमें 1.47 प्रतिशत तक की गिरावट रही। एशिया के अन्य बाजारों में चीन का शंघाई कम्पोजिट, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और हांगकांग का हैंगसेंग नुकसान में जबकि जापान का निक्की लाभ में रहा।

यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में गिरावट का रुख रहा। अमेरिकी शेयर बाजार में सोमवार को मिला-जुला रुख रहा। अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.29 प्रतिशत की गिरावट के साथ 82.49 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने सोमवार को शुद्ध रूप से 412.27 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर बेचे।

ऑनलाइन गेम को लेकर केंद्र के नियम स्पष्ट

■ नई दिल्ली (भाषा)।

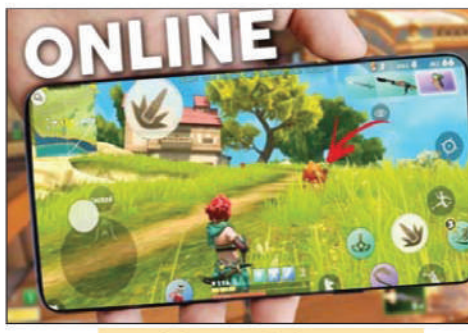

■ अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एन वेंकटरमन ने कहा कि अनिश्चित घटनाक्रमों पर पैसा लगाना दांव है

■ नये ऑनलाइन नियम असली पैसे के खेल पर रोक लगाते हैं

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एन वेंकटरमन का कहना है कि अनिश्चित घटनाक्रमों पर पैसा लगाना दांव है और सरकार के नए नियम पैसा लगाने वाले ऐसे ऑनलाइन गेम पर रोक लगाते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम के तहत जारी नए नियमों के मद्देनजर कुछ कंपनियों द्वारा दांव लगाने को कौशल के खेल के रूप में पेश करने के प्रयासों के बीच सरकार के वरिष्ठ विधि अधिकारी ने कहा कि कुछ राज्य एक दांव के संदर्भ में कौशल के खेल और मौके के खेल के बीच अंतर करने की कोशिश में गलती कर रहे हैं।

उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि नियमों का परीक्षण देश के संविधान, वैधानिक प्रावधानों और सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों के आधार पर किया जाना चाहिए। वेंकटरमन ने मंगलवार को बताया, "केंद्र द्वारा अधिसूचित नए नियम बहुत स्पष्ट हैं। हमारी अदालतों ने माना है कि दांव लगाना अवैध है। इस तरह के व्यवसायों को भारत के अंदर अनुमति नहीं दी जा सकती।" बातचीत के दौरान, उन्होंने बताया कि अनिश्चित और अज्ञात घटनाओं पर पैसा लगाना दांव लगाना है और नए ऑनलाइन नियम असली पैसे के खेल पर रोक लगाते हैं जो भविष्यवाणी या अज्ञात परिणाम की अटकलों के आधार पर विजेताओं की घोषणा करते हैं। नए नियमों में यह अनिवार्य है कि सभी ऑनलाइन गेम जिनमें पुरस्कार शामिल है, स्वयं नियामक संगठनों (एसआरओ) के साथ पंजीकृत होने चाहिए। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

सोना 440 रुपये चढ़ा चांदी 360 रुपये फिसली

■ नई दिल्ली (भाषा)।

वैश्विक बाजारों में बहुमूल्य धातुओं की कीमतों में तेजी के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में मंगलवार को सोने का भाव 440 रुपये के उछाल के साथ 60,580 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 60,140 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ था।

हालांकि, चांदी की कीमत 360 रुपये की गिरावट के साथ 74,240 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के सौमिल गांधी ने कहा कि दिल्ली में सोने की हाजिर कीमत 440 रुपये की तेजी के साथ 60,580 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई।" अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना तेजी के साथ 1,988.80 डॉलर प्रति औंस हो गया, जबकि चांदी मामूली गिरावट के साथ 25.01 डॉलर प्रति औंस रही। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज में जिंस शोध विभाग के वरिष्ठ उपाध्यक्ष - नवनीत दमानी ने कहा, "सुबह के शुरुआती सत्र में सोना लाभ दर्ज करने के बाद स्थिर कारोबार कर रहा है।

कृषि उत्पादन में कमी, महंगाई और भूराजनीतिक परिवर्तन के प्रति सतर्क रहे भारत

■ नई दिल्ली (भाषा)।

आर्थिक समीक्षा

■ वित्त मंत्रालय ने मार्च की अपनी रिपोर्ट में कहा कि चालू वित्त वर्ष के लिए 6.5 फीसद वृद्धि का अनुमान विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक के अनुमानों के अनुरूप है

■ महामारी और भूराजनीतिक संघर्ष के कारण उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था 2022-23 में मजबूत रही

■ कैड में कमी, विदेशी पूंजी की आवक से विदेशी मुद्रा भंडार में हो रही बढ़ोतरी

वित्त मंत्रालय ने अपनी मासिक आर्थिक समीक्षा में मंगलवार को कहा कि भारत को कृषि उत्पादन में कमी, दामों में वृद्धि और भूराजनीतिक परिवर्तन जैसे संभावित जोखिमों के प्रति सतर्क रहने की जरूरत है। मंत्रालय ने मासिक आर्थिक समीक्षा के मार्च संस्करण में कहा कि चालू वित्त वर्ष के लिए 6.5 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के अनुमानों के अनुरूप है लेकिन कुछ कारक ऐसे भी हैं जो वर्तमान की अनुमानित वृद्धि और मुद्रास्फीति के परिणामों के अनुकूल संयोजन को प्रभावित कर सकते हैं।

समीक्षा में कहा गया, 'अल नीनो जिससे सूखे जैसे हालात बन सकते हैं, कृषि उपज में कमी और दामों में वृद्धि, भूराजनीतिक परिवर्तन और वैश्विक आर्थिक स्थिरता जैसे संभावित जोखिमों को देखते हुए सतर्क रहना होगा, यह आवश्यक है।' इसमें कहा गया कि ये तीनों कारक वर्तमान की अनुमानित वृद्धि और मुद्रास्फीति के परिणामों के अनुकूल संयोजन को प्रभावित कर सकते हैं। इसमें कहा गया कि महामारी और भूराजनीतिक संघर्ष के कारण उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था 2022-23 में मजबूत रही है।

रिपोर्ट के मुताबिक, "अर्थव्यवस्था में मजबूती देखी जा रही है, इसके सात प्रतिशत की दर से वृद्धि करने का अनुमान है जो अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि की तुलना में अधिक है। चालू खाता घाटे (कैड) में सुधार, मुद्रास्फीति के दबाव में कमी और नीतिगत दरों में वृद्धि का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूती वाली बैंकिंग प्रणाली से वृहद आर्थिक स्थिरता बढ़ती दिख रही है और इससे वृद्धि दर और भी टिकाऊ बनी है।"

वित्तीय क्षेत्र के बारे में रिपोर्ट में कहा गया कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकिंग क्षेत्र पर निगरानी बढ़ाई है और इसके दायरे में आने वाले संस्थान बढ़े हैं। बैंकों पर दबाव का परीक्षण भी समय-समय पर किया जाता है।

समीक्षा के मुताबिक जमा की तेजी से निकासी होने की आशंका नहीं है क्योंकि 63 प्रतिशत जमा परिवारों द्वारा किए जाते हैं जो निकासी जल्द नहीं करते। इन सब कारकों की वजह से भारत के बैंक अमेरिका और यूरोप के बैंकों से अलग हैं। हालांकि 2021-22 में पूरे वर्ष के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) 5.5 प्रतिशत था जो 2022-23 में बढ़कर 6.7 प्रतिशत पर पहुंच गया लेकिन रिपोर्ट के मुताबिक यह 2022-23 की दूसरी छमाही में 6.1 प्रतिशत पर ही रहा जो पहली छमाही में 7.2 प्रतिशत था। इसमें कहा गया, 'अंतरराष्ट्रीय जिंसों के दामों में नरमी, सरकार के त्वरित कदमों और आरबीआई की मौद्रिक सख्ती ने घरेलू स्तर पर मुद्रास्फीति को काबू करने में मदद दी। परिवारों और व्यवसायों के लिए विभिन्न सर्वेक्षणों में भी ऐसा देखा गया है कि मुद्रास्फीति संबंधी अपेक्षाएं भी स्थिर प्रतीत हो रही हैं।

रिपोर्ट में कहा गया कि चालू खाता घाटे (कैड) के कम होने, विदेशी पूंजी की आवक से विदेशी मुद्रा भंडार में बढ़ोतरी हो रही है।

नेस्ले इंडिया ने 736.64 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया

नई दिल्ली (भाषा)। दैनिक उपभोग का सामान बनाने वाली कंपनी नेस्ले इंडिया लिमिटेड का 31 मार्च, 2023 को समाप्त पहली तिमाही का शुद्ध लाभ 24.69 प्रतिशत बढकर 736.64 करोड़ रुपये रहा है। कंपनी जनवरी-दिसंबर के वित्त वर्ष का अनुसरण करती है। पिछले वर्ष समान तिमाही में उसे 590.77 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। कंपनी ने शेयर बाजारों को बताया कि समीक्षाधीन अवधि में उसकी शुद्ध बिक्री 20.43 प्रतिशत बढकर 4,808.40 करोड़ रुपये रही है जो पिछले वर्ष समान तिमाही में 3,962.84 करोड़ रुपये थी।

नेस्ले इंडिया के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक सुरेश नारायणन ने कहा, 'इस तिमाही में भी बिक्री में अच्छी वृद्धि जारी रही है, जिसका दाम और बिक्री के बीच संतुलन समेत व्यापक आधार है।' बीते दस साल में यह किसी भी तिमाही में नेस्ले इंडिया की सर्वाधिक वृद्धि है। नारायणन ने कहा, "हमारे सभी उत्पाद समूहों ने दहाई अंक में वृद्धि की है जो लगातार चार तिमाहियों से जारी है।"

पनामा में भारतीय कंपनियों के लिए लॉजिस्टिक केंद्र खोलेंगे : जयशंकर

■ पनामा सिटी (भाषा)।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि भारत, पनामा में भारतीय कंपनियों के लिए लॉजिस्टिक केंद्र खोलने पर विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत का लातिनी अमेरिका के साथ व्यापार बढ़ रहा है और यह अब 50 अरब डॉलर के पास पहुंचने वाला है। विदेश मंत्री सोमवार को पनामा पहुंचे। यहां से पहले वह गुयाना के दौरे पर थे। उन्होंने पनामा के राष्ट्रपति नितो कॉर्टिजो से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तरफ से बधाई दी।

कॉर्टिजो ने कहा, बैठक के दौरान उन्होंने पनामा के लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण, प्रभावी और सस्ती दवाएं प्राप्त करने के लिए भारतीय दवा उद्योग के साथ गठबंधन करने की इच्छा के बारे में बात की। उन्होंने ट्वीट में कहा, 'हमारे बीच पनामा के लोगों के लिए गुणवत्ता वाली, सस्ती दवाओं के लिए भारतीय फार्मास्युटिकल उद्योग के साथ गठजोड़ पर चर्चा हुई।" जयशंकर ने पनामा के विदेश मंत्री जनैना तेवने मेंकोमो से भी मुलाकात की और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के तौर-तरीकों पर चर्चा की। बाद में उन्होंने संवाददाताओं से बातचीत की। उन्होंने कहा कि नया भारत और नया पनामा समकालीन युग में मिलकर काम करेंगे। पनामा ने खुद को लातिनी अमेरिका में एक प्रमुख लॉजिस्टिक केंद्र के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि भारत और लातिनी अमेरिका के बीच 50 अरब डॉलर का व्यापार विविधतापूर्ण है। खनन, ऊर्जा, कृषि और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि से इसे और बढ़ावा मिलेगा।

सरकार ई-कॉमर्स कंपनियों की बाजार बिगाड़ने वाली कीमत के खिलाफ

■ नई दिल्ली (भाषा)।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि सरकार ऑनलाइन मंचों पर आकर्षक फ्लैश सेल के खिलाफ नहीं है। हालांकि, इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा बाजार बिगाड़ने वाली कीमत और धोखाधड़ी के तरीके अपनाकर उपभोक्ताओं की पसंद पर 'अंकुश' लगाने के खिलाफ हैं। उन्होंने कहा कि अक्सर आकर्षक सेल का लाभ उठाने के लिए ई-मार्केट मंच पर सामान खरीदने वाले उपभोक्ताओं को ऑनलाइन रिटेलर द्वारा पसंदीदा या प्रचारित संस्थाओं की ओर मोड़ दिया जाता है। यह धोखा है और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नियमों के खिलाफ है। उपभोक्ता मंत्रालय भी गोयल के पास है।

यहां एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, 'अगर कोई छूट देना चाहता है, तो मैं शिकायत क्यों करूं...उपभोक्ताओं को अच्छा सौदा मिल रहा है, हमें कोई दिक्कत नहीं है।"

उन्होंने कहा कि मेरी दो आपत्तियां हैं। पहला उत्पादों की डंपिंग कर बाजार मूल्य बिगाड़ना और दूसरा उपभोक्ताओं के लिए विकल्प को सीमित करना है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, "हम सिर्फ ई-कॉमर्स नीति के तहत सिर्फ उस धोखाधड़ी को रोकना चाहते हैं।" चीन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि बहुत कम कीमत पर लंबे समय तक वस्तुएं डंप करने से घरेलू विनिर्माण खत्म हो जाता है और उपभोक्ता को ऊंची कीमतों पर सामान खरीदना पड़ता है।

BS-6 मानकों के अनुरूप होंगे मारुति-सुजुकी के सभी वाहन

■ नई दिल्ली (भाषा)।

■ कंपनी की कारें अब इलेक्ट्रानिक स्थिरता नियंत्रण प्रणाली से लैस होंगी

■ कंपनी के 15 माडल बाजार में

देश की प्रमुख वाहन कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) के सभी वाहन अब कड़े उत्सर्जन मानकों के अनुरूप होंगे। कंपनी ने भारत चरण-छह (बीएस-छह) व्यवस्था के तहत उत्सर्जन नियमों का कड़ाई से पालन करने के उद्देश्य से अपने सभी श्रेणी के वाहनों को उन्नत किया है। कंपनी ने मंगलवार को बयान में कहा कि सभी हैचबैक, सेडान, एमपीवी (बहु-उद्देश्यीय वाहन), एसयूवी (स्पोर्ट्स यूटिलिटी वेहिकल) और वाणिज्यिक वाहन अब नये बीएस-छह के दूसरे चरण के वास्तविक ड्राइविंग उत्सर्जन नियमन के अनुरूप होंगे। साथ ही यह ई-20 ईंधन यानी 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण वाले ईंधन के भी अनुकूल हैं। बीएस-छह मानकों के दूसरे चरण का मुख्य आधार वास्तविक ड्राइविंग उत्सर्जन नियमन है।

इसमें कहा गया है कि नया वास्तविक ड्राइविंग उत्सर्जन अनुपालन व्यवस्था के तहत मारुति सुजुकी की कारों में उत्सर्जन नियंत्रण प्रणाली की वास्तविक समय पर निगरानी के लिये एक अत्याधुनिक प्रणाली होगी। यह किसी भी गड़बड़ी के मामले में चालकों को सूचित करेगी।

मारुति की कार इलेक्ट्रॉनिक स्थिरता नियंत्रण (ईएससी) प्रणाली से लैस होगी। इस प्रणाली से गाड़ी चलाते समय चालकों का प्रतिकूल परिस्थिति में भी कार पर पूरी तरह से नियंत्रण बना रहता है। कंपनी के मुख्य तकनीकी अधिकारी सी वी रमन ने कहा, 'मारुति सुजुकी में हम अपने वाहनों से उत्सर्जन को कम करने के लिये हमेशा नये उपाय कर रहे हैं। सरकार का नए बीएस-छह दूसरे चरण के मानदंडों को शामिल करने का कदम वाहनों से उनके पूरे जीवनकाल में उत्सर्जन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मारुति सुजुकी फिलहाल देश में 15 मॉडल बेचती है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा ने बोलेरो मैक्स पिक-अप की नई श्रृंखला पेश की

नई दिल्ली (भाषा)। वाहन कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने बोलेरो मैक्स पिक-अप की नई श्रृंखला पेश की है। कंपनी ने मंगलवार को नयी दिल्ली में एक कार्यक्रम में बोलेरो पिक-अप की नई श्रृंखला के तहत आठ नए वाहन पेश किए। इस श्रृंखला में वाहनों की शुरुआती कीमत 7.85 लाख रुपये है। इस श्रृंखला में वाहन दो खंडों- एचडी और सिटी में पेश किए गए हैं। एचडी में एचडी 2.0 एल, 1.7 एल और 1.7, 1.3 वाहन हैं जबकि सिटी खंड में सिटी 1.3, 1.4, 1.5 और सिटी सीएनजी वाहन हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा के ऑटोमोटिव खंड के अध्यक्ष विजय नाकरा ने कहा, 'भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के प्रति समर्पित कंपनी के तौर पर हम न सिर्फ ग्राहक केंद्रित बल्कि देश की आर्थिक वृद्धि के लिए उत्पाद बनाते हैं।' उन्होंने बताया कि नई श्रृंखला में वीएक्सआई खंड अत्याधुनिक आईमैक्स तकनीक से लैस है, जिसमें 50 से ज्यादा 'फीचर्स' हैं, जिन्हें मोबाइल ऐप से संचालित किया जा सकता है। छह भाषाओं में संचालित आईमैक्स से वाहन की निगरानी करने, रास्ता पता करने, खर्च प्रबंधन आदि में मदद मिलेगी।

केकेआर चार हार से निराश, सात मैचों में सिर्फ दो जीत, बेंगलोर से मैच आज

एजेंसी ▸▸ बेंगलुरु

लगातार चार मैचों में हार से आहत कोलकाता नाइट राइडर्स बुधवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के खिलाफ यहां होने वाले आईपीएल मैच में अपना अभियान वापस पटरी पर लाने का प्रयास करेगा।

दो बार के चैंपियन केकेआर ने अभी तक सात मैचों में से केवल दो में जीत दर्ज की है और वह सातवें स्थान पर काबिज है। इससे उसकी आगे की राह काफी कठिन हो गई है। केकेआर को बल्लेबाजों के लचर प्रदर्शन का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। उसे नियमित कप्तान श्रेयस अय्यर और ऑलराउंडर शाकिब अल हसन की कमी भी खल रही है।

सलामी जोड़ी की तलाश

केकेआर अभी तक अदद सलामी जोड़ी नहीं तलाश पाया है। उसने अभी तक सुनील नारायण, जगदीशन, लिटन दास, जेसन रॉय और रहमानुल्लाह गुरबाज को सलामी बल्लेबाज के रूप में आजमाया है। पिछले मैच में जेसन रॉय और रिंकू सिंह ने अर्धशतक जमाए लेकिन इन दोनों के अलावा कोई अन्य बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया। आंद्रे रसेल भी फिनिशर की अपनी भूमिका में खरे नहीं उतर पाए।

फिटनेस चिंता का विषय

केकेआर के लिए उनकी फिटनेस भी चिंता का विषय है क्योंकि इस सत्र में वह अभी तक एक बार भी अपने कोटे के चारों ओवर नहीं कर पाए हैं। केकेआर ने इस सत्र के शुरू में आरसीबी को 81 रन से हराया था और वह उस मैच से प्रेरणा लेकर मैदान पर उतरेगा।

आरसीबी का बढ़ा मनोबल

आरसीबी का हालांकि पिछले मैच में राजस्थान रॉयल पर सात रन की जीत से मनोबल बढ़ा होगा और वह अपना विजय अभियान जारी रखने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। फाफ डुप्लेसी की अगुवाई वाली आरसीबी की टीम ने अभी तक सात में से चार मैच जीते हैं और वह पांचवें स्थान पर है। उसकी तरफ से कुछ खिलाड़ियों ने अभी तक इस सत्र में शानदार प्रदर्शन किया है। डुप्लेसी अभी बेहतरीन फॉर्म में चल रहे हैं और उन्होंने विराट कोहली तथा ग्लेन मैक्सवेल के साथ उपयोगी साझेदारियां निभाई हैं।

बेंगलोर का मध्यक्रम फेल

आरसीबी के लिए हालांकि यह चिंता का विषय होगा कि उसकी तरफ से अधिकतर रन इन तीनों बल्लेबाजों ने बनाए हैं जबकि बाकी बल्लेबाज बड़ा स्कोर बनाने में नाकाम रहे हैं। केकेआर के खिलाफ उसको मध्यक्रम के बल्लेबाजों से ही उपयोगी योगदान की उम्मीद रहेगी। उसके मध्यक्रम में दिनेश कार्तिक, महिपाल लोमरोर, शाहबाज अहमद और सुयश प्रभुदेसाई जैसे बल्लेबाज हैं।

सिराज मचा रहे गदर

गेंदबाजों में मोहम्मद सिराज अपने कॅरियर की सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में चल रहे हैं और उन्होंने आईपीएल के वर्तमान क्षेत्र में अभी तक सर्वाधिक विकेट लिए हैं। सिराज का वायने पर्नेल और हर्षल पटेल अच्छा साथ दे रहे हैं। श्रीलंका के स्पिनर वानिंदु हसरंगा के आने से टीम की गेंदबाजी को मजबूती मिली है। आरसीबी की टीम इस सत्र के शुरू में केकेआर के स्पिनरों के सामने लड़खड़ा गई थी। केकेआर के स्पिनर वरुण चक्रवर्ती, सुयश शर्मा और नारायण फिर से वही प्रदर्शन दोहराने की कोशिश करेंगे।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
चेन्नई	7	5	2	10
गुजरात	7	5	2	10
राजस्थान	7	4	3	8
लखनऊ	7	4	3	8
बेंगलोर	7	4	3	8
पंजाब	7	4	3	8
मुंबई	7	3	4	6
कोलकाता	7	2	5	4
हैदराबाद	7	2	5	4
दिल्ली	7	2	5	4

ऑरेंज कैप
डु प्लेसिस
405 रन

पर्पल कैप
राशिद खान
14 विकेट

खबर संक्षेप

आखिरी चरण से बाहर रह सकते हैं वुड

नई दिल्ली। लखनऊ सुपर जाइंट्स के तेज गेंदबाज आक्रमण के अगुआ मार्क वुड अगले महीने अपने बच्चे के जन्म के कारण इंडियन प्रीमियर लीग के अंतिम चरण से बाहर रह सकते हैं। दाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने अब तक सुपर जाइंट्स की ओर से चार मैच में 11 विकेट चटकाएं हैं और इस दौरान 8.12 रन प्रति ओवर की दर से रन दिए। वह हालांकि बीमार होने के कारण टीम के पिछले दो मैच में नहीं खेल पाए।

पिंडली की चोट के कारण हटी जाबूर

मैड्रिड। गत चैंपियन ऑंस जाबूर बाईं पिंडली में चोट के कारण मैड्रिड ओपन टेनिस टूर्नामेंट से हट गई हैं जिससे उनकी फ्रेंच ओपन की तैयारियों को करारा झटका लगा है। ट्यूनीशिया की विश्व में चौथे नंबर की खिलाड़ी जाबूर ने जर्मनी के स्टुटगार्ट में चल रहे क्ले कोर्ट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में तब मैच से हटने का फैसला किया जब वह विश्व की नंबर एक खिलाड़ी इगा स्वियाटेक के खिलाफ पहले सेट में 0-3 से पीछे चल रही थी। जाबूर ने इसके बाद ट्विटर पर पोस्ट किया कि उनकी पिंडली चोटिल हो गई है और उन्हें कई तरह की जांच करानी पड़ेगी।

चयन ट्रायल के लिए खिलाड़ी आमंत्रित

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन संघ ने आगामी एशियाई खेलों की टीम चुनने के लिए चयन ट्रायल चार से सात मई तक कराने का फैसला किया है। एशियाई खेल शुरुआत में पिछले साल होने थे लेकिन चीन के हांगझोउ में होने वाले इन खेलों को इस साल के लिए स्थगित कर दिया गया और अब ये 23 सितंबर से आठ अक्टूबर तक होंगे। सभी मान्यता प्राप्त राज्य संघों को जारी सर्कुलर के मुताबिक ट्रायल का आयोजन तेलंगाना के ज्वाला गुट्टा अकादमी ऑफ एक्सीलेंस किया जाएगा।

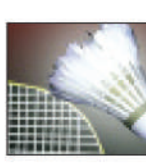

आईपीएल : मुंबई नौवीं बार 200+ का स्कोर चेज करने में नाकाम

गुजरात की 5वीं जीत, इंडियंस को पहली बार 55 रन से हराया

एजेंसी ▸▸ अहमदाबाद

गुजरात टाइटंस ने इंडियन प्रीमियर लीग टी20 मुकाबले में मंगलवार को मुंबई इंडियंस को 55 रन से शिकस्त दी। टाइटंस की मुंबई पर यह पहली जीत है। मैन ऑफ द मैच अभिनव मनोहर ने 21 गेंद में 42 रन की पारी खेली। गुजरात टाइटंस ने छह विकेट पर 207 रन बनाने के बाद मुंबई इंडियंस को नौ विकेट पर 152 रन पर रोक दिया। लीग के इतिहास में मुंबई नौवीं बार 200+ का स्कोर चेज करने में नाकाम हुई है। गुजरात की यह मौजूदा सीजन की 5वीं जीत है, जबकि मुंबई ने चौथा मुकाबला गंवाया है।

- मनोहर ने 21 गेंद में 42 रन की पारी खेलकर बने प्लेयर ऑफ द मैच

इस जीत से गुजरात की टीम सात मैचों में पांच सफलता के साथ अंक तालिका में चेन्नई सुपर किंग्स के बाद दूसरे स्थान पर पहुंच गई। नूर अहमद (तीन विकेट) गुजरात के सबसे सफल गेंदबाज रहे। राशिद खान और मोहित शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। राशिद मौजूदा सत्र में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले की सूची में शीर्ष पर पहुंच गए। उनके नाम अब 14 विकेट है। मुंबई के लिए नेहाल वढेरा ने 21 गेंद में सबसे ज्यादा 40 रन का योगदान दिया।

शुभमन का अर्धशतक

पांचवे नंबर पर आए मिलर और छठे नंबर पर आए अभिनव मनोहर ने 35 बॉल पर 71 रन की पार्टनरशिप की। इस साझेदारी ने गुजरात का स्कोर 200 पार पहुंचाया। इससे पहले, गुजरात ने 101 रन पर 4 विकेट गंवा दिए थे। शुभमन गिल ने टीम को शानदार शुरुआत दी। गिल ने 34 बॉल पर 56 रन बनाए। गिल ने 12 रन पर साहा का विकेट गंवाने के बाद गुजरात को दवाब में आने नहीं दिया। उन्होंने कप्तान हार्दिक पंड्या के साथ 38 और विजय शंकर के साथ 41 रन जोड़े।

तेंदुलकर ने की शानदार गेंदबाजी

मुंबई के लिए पीयूष चावला (चार ओवर में दो विकेट पर 34 रन) सफल गेंदबाज रहे। अर्जुन तेंदुलकर (दो ओवर में नौ रन), जेसन बेहरनडोर्फ (चार ओवर में 37 रन), कुमार कार्तिकेय (चार ओवर में 39 रन) और राइली मेरेडिथ (चार ओवर में 49 रन) को एक-एक सफलता मिली। कैमरून ग्रीन ने दो ओवर में 39 रन लुटा दिए।

स्कोर बोर्ड

गुजरात टाइटंस	रन	गेंद	4	6
साहा का किशन बो अर्जुन	04	07	0	0
गिल का सूर्यकुमार बो कार्तिकेय	56	34	7	1
पंड्या का सूर्यकुमार बो चावला	13	14	1	0
शंकर का डेविड बो चावला	19	16	1	1
मिलर का सूर्यकुमार बो बेहरनडोर्फ	46	22	2	4
मनोहर का बेहरनडोर्फ बो मेरेडिथ	42	21	3	3
राहुल तेवतिया नाबाद	20	05	0	3
राशिद खान नाबाद	02	01	0	0

अतिरिक्त : 05, कुल : 20 ओवर में 207/6
गेंदबाजी : तेंदुलकर 2-0-9-1, बेहरनडोर्फ 4-0-37-1, मेरेडिथ 4-0-49-1, ग्रीन 2-0-39-0, चावला 4-0-34-2, कार्तिकेय 4-0-39-1

मुंबई इंडियंस	रन	गेंद	4	6
रोहित का एवं बो हार्दिक	02	08	0	0
किशन का लिटिल बो राशिद	13	21	1	0
कैमरुन ग्रीन बो नूर	33	26	0	3
तिलक वर्मा पगबाधा राशिद	02	03	0	0
सूर्यकुमार यादव का एवं बो नूर	23	12	3	1
टिम डेविड का मनोहर बो नूर	00	02	0	0
नेहाल वढ़ेरा का शमी बो मोहित	40	21	3	3
पीयूष चावला रन आउट	18	12	1	1
तेंदुलकर का लिटिल बो मोहित	13	09	0	1
जेसन बेहरनडोर्फ नाबाद	03	04	0	0
राइली मेरेडिथ नाबाद	00	02	0	0

अतिरिक्त : 05, कुल : 20 ओवर में 152/9
गेंदबाजी : शमी 4-0-18-0, पंड्या 2-0-10-1, राशिद 4-0-27-2, नूर 4-0-37-3, मोहित 4-0-38-2, जोश लिटिल 2-0-18-0.

रहाणे की भारतीय टीम में वापसी सूर्यकुमार, कुलदीप, किशन बाहर

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

अपनी बल्लेबाजी में आक्रामकता का पुट जोड़ने वाले पूर्व कप्तान अजिंक्य रहाणे ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ सात से 11 जून तक लंदन के ओवल में होने वाले विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिये भारतीय टीम में वापसी की। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने मंगलवार को इस मैच के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू श्रृंखला के लिए टीम में शामिल रहे आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव, स्पिनर कुलदीप यादव और विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन को इस मैच के लिए टीम में नहीं चुना गया है।

- डब्लूटीसी फाइनल के लिए बीसीसीआई ने की टीम की घोषणा

बीसीसीआई की पांच सदस्यीय चयन समिति और सचिव जय शाह के अलावा कप्तान रोहित शर्मा और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने सोमवार की शाम को बैठक में हिस्सा लेकर

टीम को अंतिम रूप दिया। श्रेयस अय्यर के पीठ में चोट के कारण बाहर हो जाने से रहाणे की 15 महीने बाद टीम में वापसी सुनिश्चित थी। एजेंसी ने 10 अप्रैल को रिपोर्ट में कहा था कि रहाणे की टीम में वापसी तय है। 34 वर्षीय रहाणे अभी तक 82 टेस्ट मैच खेले हैं। उन्होंने अपना आखिरी टेस्ट मैच जनवरी 2022 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ केपटाउन में खेला था।

भारतीय टीम : रोहित (कप्तान), शुभमन गिल, पुजारा, कोहली, रहाणे, राहुल, केएस भरत (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, सिराज, उमेश, जयदेव उनादकट।

भरत एकमात्र विकेटकीपर

रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम में किसी को उपकप्तान नियुक्त नहीं किया गया है लेकिन चेतेश्वर पुजारा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अंतिम दो मैचों में यह भूमिका निभाई थी और उन्हें फिर से यह जिम्मेदारी संभालने के लिए कहा जा सकता है। पुजारा अभी काउंटी क्रिकेट में ससेक्स की तरफ से खेल रहे हैं। केएस भरत टीम में शामिल एकमात्र विशेषज्ञ विकेटकीपर है जबकि युवा किशन, कुलदीप और सूर्यकुमार टीम में जगह नहीं बना पाए। केवल एक मैच होने के कारण चयनकर्ताओं ने दूसरे विकेटकीपर का चयन नहीं किया।

ओडिशा बना सुपर कप चैंपियन...

कोझिकोड। ओडिशा एफसी ने सुपर कप फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में मंगलवार को यहां बेंगलुरु एफसी को 2-1 से हराकर पहली बार इस खिताब को अपने नाम किया। बारिश के बीच खेले गए इस मुकाबले में ब्राजील के डिएगो मौरिसियो ने पहले हाफ में ओडिशा के लिए दो गोल दागे। बेंगलुरु के लिए सुनील छेत्री ने 84वें मिनट में पेनल्टी को गोल में बदला। 2018 की विजेता बेंगलुरु एफसी की टीम इस गोल से हालांकि हार के अंतर को ही कम कर पाई।ओडिशा की जीत के साथ उसके कोच क्लिफोर्ड मिरांडा ने भी इतिहास रचा दिया। वह सुपर कप जीतने वाले पहले भारतीय कोच बने।

वॉर्नर पर 12 लाख रुपए का जुर्माना

हैदराबाद। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान डेविड वॉर्नर पर सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ सोमवार को यहां खेले गए इंडियन प्रीमियर लीग मैच में धीमी ओवर गति के लिए 12 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया है। दिल्ली ने इस मैच में सनराइजर्स को सात रन से हराया था। आईपीएल ने बयान में कहा, 'धीमी ओवर गति के लिए आईपीएल आचार संहिता के तहत यह टीम का वर्तमान सत्र में पहला अपराध है इसलिए कप्तान डेविड वॉर्नर पर 12 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया है।'

स्टर्लिंग, कैंफर का शतक, आयरलैंड ने बनाए 492 रन

टेस्ट क्रिकेट की पारी में यह आयरलैंड का सर्वोच्च स्कोर

एजेंसी ▸▸ गॉल

पॉल स्टर्लिंग (103) और कर्टिस कैंफर (111) की पहली शतकीय पारियों से आयरलैंड ने श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन मंगलवार को अपनी पहली पारी में रिकॉर्ड 492 रन बनाए। खराब रोशनी और बारिश के कारण दिन का खेल लगभग आधे घंटे पहले खत्म हुआ। श्रीलंका ने अपनी पहली पारी में बिना किसी नुकसान के 81 रन बनाकर मजबूत शुरुआत की।

बल्लेबाजी के लिए माकूल परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए आयरलैंड के बल्लेबाजों को श्रीलंका के गेंदबाजों के खिलाफ कोई खास परेशानी नहीं हुई। टेस्ट क्रिकेट की पारी में यह टीम का सर्वोच्च स्कोर है। आयरलैंड ने इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ डबलिन में 2018 में दूसरी पारी में 339 रन बनाए थे।

5वें विकेट के लिए जोड़े 99 रन

आयरलैंड ने दिन की शुरुआत चार विकेट पर 319 रन से की। कैंफर और टकर ने पांचवें विकेट के लिए 99 रन जोड़े। इस साझेदारी को विश्वा फर्नांडो ने तोड़ा। इसके बाद बल्लेबाजी के लिए आए स्टर्लिंग ने अपनी पारी 74 रन के आगे से शुरू की। वह सोमवार को इसी स्कोर पर मांसपेशियों में खिंचाव के कारण रिटायर्ड हर्ट हुए थे। स्टर्लिंग दिन के पहले सत्र में विश्व फर्नांडो पर छक्के के साथ अपना शतक पूरा करने के बाद इसी गेंदबाज का शिकार बने।

सिंधू, प्रणय और सेन को स्वर्ण के लिए करना होगा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

एशियन चैंपियनशिप में शीर्ष खिलाड़ी देंगे चुनौती

एजेंसी ▸▸ दुबई

ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पीवी सिंधू सहित भारत के स्टार खिलाड़ी अपने खेल में सुधार करके बुधवार से यहां होने वाली एशिया बैडमिंटन चैंपियनशिप में बेहतर प्रदर्शन करने के उद्देश्य से कोर्ट पर उतरेंगे। यह प्रतिष्ठित महाद्वीपीय प्रतियोगिता मंगलवार को क्वालीफाईंग दौर के साथ शुरू हो गई जबकि मुख्य दौर के मुकाबले बुधवार से शुरू होंगे।

भारत के लिए पदक जीतना आसान नहीं होगा क्योंकि पिछले कुछ समय से उसके शीर्ष खिलाड़ी संघर्ष कर रहे हैं। भारत ने एशिया बैडमिंटन चैंपियनशिप में अभी तक कुल मिलाकर 17 पदक जीते हैं। 1965 में दिनेश खन्ना ने जीता था। उसके लिए एकमात्र स्वर्ण पदक स्वर्ण पदक के इस इंतजार को खत्म करने के लिए सिंधू, एचएस प्रणय और लक्ष्य सेन को वास्तव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। चोट से उबरने के बाद वापसी करने वाली सिंधू अपने अभियान की शुरुआत ताइवान की वेन ची सू के खिलाफ करेंगी। पुरुष एकल में विश्व के नौवें नंबर के खिलाड़ी प्रणय का पहला मुकाबला म्यांमार के फोन प्यारे नाइंग से होगा जबकि किदांबी श्रीकांत बहरीन के अदनान इब्राहिम का सामना करेंगे। पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म में चल रहे राष्ट्रमंडल खेलों के चैंपियन लक्ष्य के लिए पहली चुनौती ही आसान नहीं है। पहले दौर में उनका सामना पूर्व विश्व चैंपियन सिंगापुर के लोह कीन से होगा।

देवी से होगा आकर्षि का सामना

महिला एकल में मालविका बंसोड़ शीर्ष वरीय और पिछले साल फाइनल में जगह बनाने वाली जापान की अकाने यामागुची से भिड़ेंगी, जबकि आकर्षि कश्यप का सामना इंडोनेशिया की कोमांग आयू काह्या देवी से होगा। पुरुष युगल में इस साल के शुरू में स्विस ओपन का खिताब जीतने वाले सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की छठी वरीयता प्राप्त जोड़ी तान कियान मेंग और तान वी किओंग की मलेशियाई जोड़ी के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी। एमआर अर्जुन और ध्रुव कपिला तथा कृष्ण प्रसाद गरगा और विष्णुवर्धन गौड़ पंजाला भी पुरुष युगल में अपनी चुनौती पेश करेंगे।

न्यूजीलैंड की 100वीं जीत पाक को 6 विकेट से हराया

एजेंसी ▸▸ रावलपिंडी

मार्क चैपमैन के कॅरियर के पहले शतक की मदद से न्यूजीलैंड ने पांचवें और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में पाकिस्तान को छह विकेट से हराकर पांच मैचों की श्रृंखला 2-2 के बराबर की। न्यूजीलैंड की टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में यह 100वीं जीत है। न्यूजीलैंड के सामने 194 रन का लक्ष्य था।

चैपमैन ने 57 गेंदों पर 11 चौकों और चार छक्कों की मदद से नाबाद 104 रन बनाए तथा जेम्स नीशम (नाबाद 45) के साथ पांचवें विकेट के लिए नौ ओवर में 121 रन की अटूट साझेदारी की। इससे न्यूजीलैंड ने 19.2 ओवर में चार विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर दिया। पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी का

न्यौता मिलने पर पांच विकेट पर 193 रन बनाए थे। उसकी तरफ से सलामी बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान ने 62 गेंदों पर नाबाद 98 रन बनाए जिसमें सात चौके और चार छक्के शामिल हैं। इस विकेटकीपर बल्लेबाज के अलावा इफ्तिखार अहमद ने 36 और इमाद वसीम ने 31 रन का योगदान दिया।

केदारनाथ के कपाट खुले

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में हिमालय की पर्वत श्रृंखला पर स्थित भगवान शंकर के पांचवें ज्योतिर्लिंग श्री केदारनाथ धाम के कपाट मंगलवार को श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खुल गए। लगभग 10 हजार श्रद्धालु इस पावन अवसर के साक्षी बने , जिन पर हेलीकाप्टर से पुष्प वर्षा भी हुई। पहली पूजा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से की गई।

राष्ट्रपति जो बाइडेन ने शीर्ष पद के लिए दोबारा की अपनी दावेदारी की घोषणा

वाशिंगटन ■ एजेंसी

राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने पूर्ववर्ती डोनाल्ड ट्रम्प को हराने के तीन साल से भी कम समय में एक बार फिर 2024 में शीर्ष पद के लिये अपनी दावेदारी की मंगलवार को घोषणा की। उन्होंने लोकतंत्र को बचाने और 'काम पूरा खत्म करने' के लिए अमेरिकियों से फिर से उन्हें चुनने का आह्वान किया।

डेमोक्रेट बाइडेन (80) ने तीन मिनट के एक प्रचार वीडियो में यह घोषणा की। इस वीडियो की शुरुआत एक शब्द 'फ्रीडम' के साथ होती है। राष्ट्रपति बाइडेन कई दशकों से राजनीति में सक्रिय रहे हैं। वह अमेरिकी इतिहास के सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति हैं। बाइडेन की दलील है कि 2024 में चुनावों में गर्भपात के अधिकार, लोकतंत्र की रक्षा, मतदान के अधिकार और सामाजिक सुरक्षा तंत्र सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक होंगे। उन्होंने कहा कि अमेरिकियों की हर पीढ़ी ने एक ऐसे क्षण का सामना किया है जब उन्हें लोकतंत्र की रक्षा करनी है, हमारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए खड़े होना है, और हमारे मतदान के अधिकार और हमारे नागरिक अधिकारों के लिए खड़े होना है। यह हमारे हैं। वीडियो में बाइडन ने 2024 के चुनाव को रिपब्लिकन अतिवाद के खिलाफ लड़ाई करार दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें राष्ट्र के चरित्र को बहाल करने के लिए अपने संकल्प को पूरी तरह से साकार करने के वास्ते और समय चाहिए। उन्होंने कहा, जब मैं चार साल पहले राष्टपति पद के लिए खड़ा हुआ था, मैंने कहा था कि हम अमेरिका की आत्मा के लिए लड़ रहे हैं। और हम अब भी लड़ रहे हैं। वीडियो छह जनवरी 2021 के उपद्रव और गर्भपात अधिकार कार्यकर्ताओं के अमेरिकी उच्चतम न्यायालय में विरोध की तस्वीरों के साथ शुरू होता है।

गुजरात हाईकोर्ट पहुंचे राहुल गांधी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मोदी सरनेम को लेकर सूरत की अदालत द्वारा दोषी करार दिए जाने के फैसले को अब कांग्रेस के नेता राहुल गांधी हाईकोर्ट में चुनौती देंगे। सूरत कोर्ट के इस फैसले के बाद राहुल गांधी की संसद सदस्यता रद्द कर दी गई थी। संसद सदस्यता रद्द किए जाने के कुछ दिन बाद ही राहुल गांधी को दिल्ली में अपना सरकारी बंगला भी खाली करना पड़ा था। बंगला खाली करते समय राहुल गांधी ने कहा था कि वो सिर्फ सच बोलने की कीमत चुका रहे हैं और वो आगे भी ऐसे ही सच बोलते रहेंगे। भले ही उन्हें इसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

श्रीनगर में शंकराचार्य मंदिर में मत्था टेकने उमड़ी भीड़

श्रीनगर, (एजेंसी)। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में मंगलवार को मनाई जा रही शंकराचार्य जयंती पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मत्था टेका। प्रसिद्ध डल झील के सामने स्थित शंकर आचार्य मंदिर पर मत्था टेकने के लिए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों सहित पर्यटकों को मंदिर में प्रवेश की प्रतीक्षा करते देखा गया। शंकराचार्य जयंती को सनातन धर्म में महत्वपूर्ण उत्सवों में से एक माना जाता है, जो 8वीं शताब्दी के भारतीय दार्शनिक और धर्मशास्त्री आदि शंकर जी के जन्म के दिन को चिह्नित करता है।

सुप्रीम कोर्ट में तेलंगाना-केंद्र के वकील लड़ पड़े

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को तेलंगाना सरकार की राज्यपाल के खिलाफ शिकायत पर सुनवाई हुई। तेलंगाना सरकार की पैरवी सीनियर वकील दुष्यंत दवे कर रहे थे और केंद्र की ओर से एसजी तुषार मेहता दलीलें दे रहे थे। इस दौरान दोनों एक-दूसरे से लड़ पड़े। दुष्यंत दवे ने कहा कि 40 साल में इतना खराब एसजी नहीं देखा। तुषार मेहता ने जवाब दिया कि मैं इनकी तरह नहीं चिल्ला सकता।

प.बंगाल के कालियागंज में फिर हिंसा, थाना फूंका

कोलकाता, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के उत्तरी दिनाजपुर के कालियागंज में एक बार फिर हिंसा भड़क उठी है। गुस्साए लोगों ने कालियागंज थाने में आग लगा दी। भीड़ ने नाबालिग बच्ची की मौत से गुस्सा होकर यह कदम उठाया। कुछ दिन पहले भी इस घटना को लेकर लोगों ने प्रदर्शन किया था। आग लगाने की घटना के बाद कलियागंज थाने के आसपास बड़ी संख्या में पुलिस बल की तैनाती कर दी गई है। मंगलवार को यह घटना उस वक्त हुई जब रायगंज में भाजपा द्वारा आयोजित विरोध प्रदर्शन के दौरान लोग पुलिस अधीक्षक कार्यालय का घेराव करने के पहुंचे थे।

आज का इतिहास

- 1654: यहूदियों को ब्राजील से निकाला गया।
- 1755: रूस का पहला विश्वविद्यालय राजधानी मॉस्को में खोला गया।
- 1828: यूनान की आजादी के समर्थन में रूस की तुर्की के खिलाफ युद्ध की घोषणा।
- 1903: गांधी जी ने दक्षिण अफीका में वकालत शुरू की और वहां ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की।
- 1920: महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम का निधन।
- 1959: क्यूबा ने पनामा पर आक्रमण किया।
- 1962: अंतरिक्ष यान रेंजर-4 ने चांद की सतह पर कदम रखा। चांद तक पहुंचने वाला यह पहला अमेरिकी अंतरिक्ष यान था। तकनीकी गड़बड़ी के कारण इसका संपर्क पृथ्वी से टूट गया और यह चांद की सतह के चित्र नहीं भेज सका।

देश को मिली पहली वाटर मेट्रो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केरल में पहले डिजिटल साइंस पार्क की नींव रखी, केरल की पहली वंदे भारत ट्रेन को दिखाई हरी झंडी

कोच्चि ■ एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को केरल की पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। इसके अलावा उन्होंने देश के पहले वाटर मेट्रो सर्विस का उद्घाटन किया।

मोदी ने तिरुवनंतपुरम में डिजिटल साइंस पार्क की आधारशिला रखी और विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। पीएम सबसे पहले सुबह 11 बजे तिरुवनंतपुरम सेंट्रल रेलवे स्टेशन पहुंचे और तिरुवनंतपुरम-कासरगोड के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को विदा किया। यह ट्रेन तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, कोट्टायम, एर्नाकुलम, त्रिशूर, पलक्कड़, पठानमथिट्टा, मलप्पुरम, कोझिकोड जैसे 11 जिलों को कवर करेगी। पीएम ने डिंडीगुल-पलानी-पलक्कड़ सेक्शन के रेल इलेक्ट्रिफिकेशन का भी उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने तिरुवनंतपुरम में देश के पहले डिजिटल साइंस पार्क की आधारशिला रखी। यह प्रोजेक्ट कुल 1515 करोड़ का है। पहले फेज में इसमें 200 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। इसके अलावा पीएम ने देश की पहली वाटर मेट्रो सर्विस का भी उद्घाटन किया। पोर्ट सिटी कोच्चि में तैयार की गई मेट्रो कोच्चि सिटी से आस-पास के 10 टापुओं को जोड़ेगी।

हम भारतीय रेल के स्वर्णिम युग की तरफ बढ़ रहे

पीएम मोदी ने कहा कि भारत की बढ़ती हुई शक्ति का लाभ विदेश में रहने वाले प्रवासियों को भी मिल रहा है। बीते 9 वर्षों से भारत में कनेक्टिविटी के इंफ्रास्ट्रक्चर पर अभूतपूर्व स्पीड से और अभूतपूर्व स्केल पर काम किया जा रहा है। आज हम देश के पब्लिक ट्रांसपोर्ट और लॉजिस्टिक सेक्टर का पूरी तरह से कायाकल्प कर रहे हैं। हम भारतीय रेल के स्वर्णिम युग की तरफ बढ़ रहे हैं। सड़क हो, रेल हो, ये अमीर-गरीब, जाति-मत-पंथ का भेद नहीं करते। सभी इसका उपयोग करते हैं। यही सही विकास है। यही एक भारत श्रेष्ठ भारत के भाव को सशक्त करता है और यही हम आज भारत में होते हुए देख रहे हैं।

क्या फायदा होगा

वाटर मेट्रो कोच्चि में और उसके आसपास के 10 द्वीपों को जोड़ेगी। इससे पॉल्यूशन कम करने में मदद मिलेगी और कोच्चि झील के किनारे बसे परिवारों का मेन मार्केट तक पहुंचना आसान हो जाएगा। वाटर मेट्रो से द्वीप पर रहने वाले एक लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। वाटर मेट्रो से कोच्चि के इर्द-गिर्द अनेक द्वीपों पर रहने वाले लोगों को सस्ता और आधुनिक ट्रांसपोर्ट मिलेगा। केरल में हो रहा यह प्रयोग देश के अन्य राज्यों के लिए भी मॉडल बनेगा।

क्या हैं खासियत

यह कटमैन फैरी डिजाइन्ड बोट है। इसकी लंबाई 24.8 मीटर है। इसमें एक बार में 100 पैसेंजर ट्रैवल कर सकते हैं। इसमें लिथियम टाइटनेट ऑक्साइड बैटरी लगी है। बैटरी की कैपेसिटी 122 केडब्ल्यूएच है। ये बैटरी नई टेक्नोलॉजी की है। इसे 10 से 15 मिनट में चार्ज किया जा सकता है। चुनिंदा स्थानों पर फ्लोटिंग जेटी में सुपर-चार्जर लगाए गए हैं। बोट में जनरेटर बैक-अप भी है। ये बोट्स पूरी तरह से एयर-कंडीशन्ड हैं। इनकी बड़ी खिड़कियों से पैसेंजर बाहर के नजारें देख सकते हैं।

आईएनएस सुमेधा 278 भारतीयों को लेकर स्वदेश के लिए रवाना

नई दिल्ली/जेद्दा ■ एजेंसी

हिंसाग्रस्त सूडान में 72 घंटे के सीजफायर के बाद भारतीयों की निकासी का अभियान शुरू हो गया है। भारत वहां से भारतीयों की निकासी के लिए ऑपरेशन कावेरी चला रहा है। इस अभियान के तहत सूडान में फंसे भारतीयों का पहला जत्था सूडान से रवाना हुआ। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने इसके बारे में जानकारी दी।

सूडान में फंसे भारतीयों की वापसी के लिए ऑपरेशन कावेरी शुरू

उन्होंने बताया कि ऑपरेशन कावेरी के तहत आईएनएस सुमेधा 278 लोगों को लेकर पोर्ट सूडान से जेद्दा के लिए रवाना हो गया है। इससे पहले, हिंसाग्रस्त दक्षिण अफ्रीकी देश सूडान के दोनों जनरल 72 घंटे के सीजफायर के लिए सहमत हुए थे। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने इस बारे में जानकारी दी। करीब 10 दिनों की लड़ाई, सैंकड़ों मौतों और बड़ी संख्या में विदेशी लोगों के पलायन के बाद यह सीजफायर होने जा रहा है। इससे पहले भी दोनों पक्षों में सीजफायर कराने की कोशिश की गई थी लेकिन वह नाकाम रहीं। ब्लिंकन ने एलान करते हुए कहा कि बीते 48 घंटे की सघन बातचीत के बाद सूडान आर्म्ड फोर्सेस और रैपिड सपोर्ट फोर्सेस राष्ट्रव्यापी सीजफायर करने के लिए रजामंद हो गई हैं। यह सीजफायर 24 अप्रैल की आधी रात से शुरू होकर अगले 72 घंटे तक चलेगा।

24 को निकाले थे पांच भारतीय

इससे पहले, सोमवार को फ्रांसीसी वायु सेना की उड़ान के जरिए पांच भारतीय नागरिकों को सूडान से बाहर निकाला गया था। फ्रांस के राजनयिक सूत्र ने इसके बारे में जानकारी दी थी। उन्होंने बताया था कि तीन उड़ानों के जरिए करीबन 500 लोगों को जिबूती में फ्रांस के सैन्य अड्डे पर लाया गया है। इन लोगों में भारतीय के साथ ही 28 से अधिक अन्य राष्ट्रीयताओं के लोग शामिल हैं।

सूडान में अभी कितने भारतीय फंसे हैं

देश में हिंसा, तनाव और असुरक्षित हवाईअड्डों के कारण विदेशी नागरिकों को निकालना मुश्किल हो रहा है। इस बीच अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (आरएसएफ) राजधानी खार्तूम में मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर नियंत्रण करने की कोशिश कर रहा है। फंसे हुए विदेशी नागरिकों में लगभग 3,000 भारतीय हैं। वहीं, केरल के 48 वर्षीय अल्बर्ट ऑगस्टाइन की गोली लगने से मौत हो चुकी है।

सूडान में हालात बेहद खराब

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी के अनुसार, सूडान में हुई हिंसा में अभी तक 427 लोगों की मौत हुई है और 3700 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। मरने वालों में खार्तूम में मौजूद मिस्त्र के दूतावास के एक अधिकारी भी शामिल हैं, जो अपने कार्यालय से घर लौटते समय हिंसा की चपेट में आ गए।

10वीं में प्रियांशी सोनी तो 12वीं में शुभ बने टॉपर

उप्र बोर्ड परीक्षा परिणाम जारी

लखनऊ, (ब्यूरो)। यूपी बोर्ड के 10वीं और 12वीं का परीक्षा परिणाम जारी हो चुका है। लड़कियों का दबदबा रहा है। हाईस्कूल में 89.78 फीसदी परीक्षार्थी पास हुए जबकि इंटरमीडिएट में 75.52 फीसदी परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की। हाईस्कूल में बालकों के उत्तीर्ण का प्रतिशत 86.64 फीसदी रहा जबकि बालिकाओं का प्रतिशत 93.34 फीसदी रहा। यूपी बोर्ड के निदेशक डॉ. महेन्द्र देव और यूपी बोर्ड के सचिव दिव्य कांत शुक्ल ने परीक्षा परिणाम घोषित किया।

सीतापुर की प्रियांशी बनीं 10वीं की टॉपर :10वीं की टॉपर सीतापुर की प्रियांशी सोनी हैं। उन्होंने कुल अंक 600 में से 590 अंक हासिल किए। दूसरे नंबर पर कानपुर देहात के कुशाग्र पांडे और अयोध्या की मिसखत नूर रहीं। दोनों ने 97.83 प्रतिशत मार्क्स स्कोर किया है। थर्ड पोजिशन को तीन टॉपर स्टूडेंट ने मिलकर साझा किया है। मथुरा के कृष्णा झा, पीलीभीत के अर्पित गंगवार और सुल्तानपुर की श्रेयांसी सिंह ने 97.67 मार्क्स हासिल कर संयुक्त रूप से तीसरा पायदान हासिल किया। पांच छात्रों ने 97.50 अंक हासिल कर संयुक्त रूप से चौथा स्थान पाया है।

शुभ छापरा 12वीं में बने टॉपर:12वीं के नतीजों में लड़कों ने बाजी मारी, टॉप थ्री में सिर्फ दो छात्राओं को जगह मिली है। चरखारी के शुभ छापरा 97.80 पर्सेंट मार्क्स स्कोर किया। उन्हें कुल अंक 500 में से 489 अंक मिले। दूसरे स्थान पर 97.20 प्रतिशत अंकों के साथ दो स्टूडेंट्स ने जगह बनाई।

सात महिला पहलवानों की याचिका पर दिल्ली सरकार को दिया नोटिस

यौन शोषण के आरोप

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा सांसद व भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ यौन शोषण के आरोपों पर एफआईआर दर्ज न किए जाने का आरोप लगाने वाली सात महिला पहलवानों की याचिका पर मंगलवार को दिल्ली सरकार व अन्य को नोटिस जारी किए।

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ व न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा की पीठ ने वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल की दलीलों पर संज्ञान लिया कि यौन शोषण के आरोपों के बावजूद कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गयी है। पीठ ने कहा, नोटिस जारी किया जाता है। इसे शुक्रवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करें। उसने पहचान जाहिर न करने के लिए न्यायिक रिकॉर्ड से सात शिकायतकर्ता पहलवानों के नाम हटाने का निर्देश भी दिया। शीर्ष महिला पहलवानों ने आरोप लगाया है कि उनका डब्ल्यूएफआई चुनावों से कोई लेना-देना नहीं है और वे अपने उन आरोपों की उचित जांच की मांग पर जोर देती रहेंगी कि सिंह ने महिला एथलीटों का यौन शोषण किया है। कई राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता पहलवान सरकार से सिंह के खिलाफ यौन शोषण के आरोपों की जांच करने वाली समिति के नतीजों को सार्वजनिक करने की मांग को लेकर जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे हैं।

चीनी रक्षा मंत्री शांगफू एससीओ बैठक में हिस्सा लेने के लिए 27 को आएंगे भारत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। चीन ने मंगलवार को कहा कि रक्षा मंत्री जनरल ली शांगफू 27 अप्रैल से एससीओ के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए इस सप्ताह भारत का दौरा करेंगे। दौरे के दौरान ली की रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ वार्ता होने की उम्मीद है। चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के करीबी सहयोगी माने जाने वाले जनरल ली की भारत यात्रा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह मई 2020 से पूर्वी लद्दाख में भारत और चीन की सेनाओं के मध्य तनावपूर्ण गतिरोध के बीच हो रही है। चीन के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा, कि आमंत्रण पर चीनी स्टेट काउंसलर और रक्षा मंत्री जनरल ली शांगफू 27-28 अप्रैल से नई दिल्ली में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देशों के रक्षा मंत्रियों की परिषद् की बैठक में भाग लेंगे। बयान में कहा गया कि बैठक के दौरान, जनरल ली सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

ब्रिटेन में चीनी भाषा सिखाने वाले इंस्टीट्यूट की फंडिंग होगी बंद

इस पर हर साल करीब 2.75 अरब रुपए होते हैं खर्च

लंदन । ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की सरकार देश में चीन की मंदारिन भाषा सिखाने वाले इंस्टीट्यूट्स की फंडिंग बंद करने जा रही है। पिछले साल जुलाई में इलेक्शन कैम्पेन के दौरान सुनक ने कन्फ्यूशिस इंस्टीट्यूट्स की फंडिंग रोकने का वादा किया था।

माना जा रहा है कि बुधवार को इस फैसले पर अमल का ऐलान किया जा सकता है। ब्रिटिश सरकार इन इंस्टीट्यूट्स को हर साल करीब 27 लाख पाउंड (करीब 2.75 अरब रुपए) देती है। सुनक के इस फैसले से चीन भड़क सकता है। 'द गार्डियन' की एक रिपोर्ट के मुताबिक- सुनक सरकार के इस फैसले का ऐलान फॉरेन मिनिस्टर जेम्स क्लेवर्ले करेंगे। फिलहाल, मंदारिन सिखाने वाले कन्फ्यूशिस इंस्टीट्यूट्स को बंद नहीं किया जा रहा है। अभी इनकी फंडिंग रोकने का ही ऐलान होगा। ये तमाम इंस्टीट्यूट्स मंदारिन और चीन के कल्चर को बहुत एक्टिवली प्रमोट करते हैं।

ब्रिटेन में 30 ब्रांच

रिपोर्ट के मुताबिक- ब्रिटेन में कन्फ्यूशिस इंस्टीट्यूट्स की कुल 30 ब्रांच हैं, जो ब्रिटेन जैसे छोटे देश के लिए काफी ज्यादा मानी जाती हैं। इंस्टीट्यूट्स का एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ ब्रिटिश होता है, जबकि तमाम प्रोफेसर चीन के होते हैं। चीन और ब्रिटेन की सरकारें एक-एक कोडायरेक्टर अपॉइंट करते हैं। ब्रिटेन सरकार को लगता है कि कन्फ्यूशिस इंस्टीट्यूट्स ब्रिटेन की हायर एजुकेशन और सोसायटी में दखल बढ़ा रहे हैं। ब्रिटिश मीडिया कई बार सवाल उठा चुका है कि ब्रिटेन में चीन के कल्चर को प्रमोट करने की जरूरत क्यों है।

केजरीवाल की सुरक्षा में चूक आवास के पास दिखा ड्रोन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की सुरक्षा में बड़ी चूक का मामला सामने आया है। मुख्यमंत्री आवास के पास नो फ्लाई जोन में मंगलवार को एक ड्रोन उड़ता हुआ दिखा। मुख्यमंत्री के आवास पर तैनात सुरक्षाकर्मियों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलने के बाद दिल्ली पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस ड्रोन उड़ाने वाले व्यक्ति की तलाश में जुट गई है। हालांकि, अभी इस मामले में किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

हाई सिक्योरिटी जोन : जहां पर यह ड्रोन देखा गया है वह हाई सिक्योरिटी जोन है और इस इलाके में ड्रोन उड़ाना मना है। ड्रोन उड़ाने की घटना को दिल्ली पुलिस ने काफी गंभीरता से लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

गौरतलब है कि कुछ माह पहले जसोला विहार में मेट्रो के ट्रैक पर भी एक ड्रोन मिला था। तब जांच में पता चला था कि वह ड्रोन एक मेडिकल कंपनी का था, जो कोई सैंपल लेकर जा रहा था और तकनीकी खराबी के कारण वह मेट्रो के ट्रैक पर गिर गया था। पुलिस जांच कर रही है कि कहीं यह ड्रोन भी तो कोई लॉजिस्टिक ड्रोन तो नहीं है।

एक्शन

फॉक्स न्यूज ने 2020 के यूएस प्रेसिडेंट इलेक्शन पर उठाए थे सवाल

एंकर ने नौकरी छोड़ी, चैनल को हुआ 41 हजार करोड़ का घाटा

नई दिल्ली। अमेरिका के सबसे बड़े न्यूज चैनलों में से एक फॉक्स न्यूज में प्राइम टाइम शो लाने वाले टीवी होस्ट टकर कार्लसन ने इस्तीफा दे दिया है। टकर को डोनाल्ड ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी का समर्थक माना जाता है। फॉक्स मीडिया नेटवर्क ने बताया कि शुक्रवार को टकर ने अपना आखिरी शो होस्ट किया था।

टकर कार्लसन के फॉक्स न्यूज से बाहर होने के बाद चैनल की पेरेंट कंपनी के शेयरों में 5.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। यानी उसे एक दिन में 41 हजार करोड़ का घाटा हुआ है। वहीं, अब तक न तो टकर और न ही फॉक्स न्यूज ने इस्तीफे की वजह बताई है। हालांकि, टकर का इस्तीफा उस समय आया है जब पिछले हफ्ते फॉक्स ने मानहानि के केस में एक वोटिंग मशीन कंपनी को 64 हजार करोड़ रुपए देकर सेटलमेंट किया था।

राष्ट्रपति चुनाव पर सवाल खड़े किए थे: अलजजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक फॉक्स न्यूज ने 2020 के राष्ट्रपति चुनाव के दौरान धोखाधड़ी होने के दावे किए थे। ये दावे करने में फॉक्स न्यूज के टीवी होस्ट कार्लसन टकर भी शामिल थे। दरअसल, फॉक्स न्यूज ने 20 ऐसे दावे किए थे, जिनमें वोटिंग मशीन में गड़बड़ी करने के आरोप थे। इन दावों के बाद ट्रम्प के समर्थकों ने 6 जनवरी 2020 को व्हाइट हाउस पर हमला किया था।

वायरल मैसेज पर हुआ था विवाद

2021 में फॉक्स न्यूज के खिलाफ वोटिंग मशीन कंपनी डोमिनियन ने मामला दर्ज कराया था। उस समय टकर कार्लसन समेत कंपनी में काम करने वाले कई लोगों के प्राइवेट मैसेज भी लीक हुए थे। इसमें खुद कंपनी के लोगों ने माना था कि चुनाव में कोई गड़बड़ी नहीं हुई थी। टकर कार्लसन का एक मैसेज काफी वायरल हुआ था जिसमें उन्होंने ट्रम्प के बारे में लिखा था- मैं उससे नफरत करता हूं। इससे काफी विवाद खड़ा हुआ था।

रूसी टीवी चैनल ने की नौकरी की पेशकश

रूस के जाने-माने टीवी प्रजेंटर व्लादिमीर सोलोवोव की अगुवाई वाली टीवी प्रोजेक्ट टीम ने यूएसए के प्रसिद्ध टीवी होस्ट टकर कार्लसन को नौकरी देने की पेशकश की है। श्री सोलोवोव ने कहा कि सोलोविएव लाइव टीवी चैनल ने यूएस टीवी होस्ट टकर कार्लसन को नौकरी की पेशकश की है। दरअसल कार्लसन ने प्रसिद्ध टीवी चैनल फॉक्स न्यूज को छोड़ दिया था। इससे पहले, फॉक्स न्यूज ने बताया था कि इसके सबसे प्रसिद्ध मेजबानों में से एक, कार्लसन, जो यूएस राष्ट्रपति जो बाइडेन की आलोचना के लिए जाने जाते है, चैनल छोड़ रहे हैं।

मीडिया कर्मियों की मांगों को लेकर होगा राष्ट्रव्यापी आंदोलन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देश के मीडियाकर्मियों के अधिकार और हितों के लिए संघर्ष करने वाले सात सशक्त संगठनों ने कन्फेडरेशन ऑफ न्यूजपेपर्स एंड न्यूज एजेंसीस इम्पलाइज आर्गनाइजेशन के झंडे तले वर्किंग जर्नलिस्ट्स एक्ट, वेज बोर्ड को लागू कराने, इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट में संशोधन और जर्नलिस्ट्स प्रोटेक्शन एक्ट बनाने की मांग को लेकर राष्ट्रव्यापी आंदोलन करने का फैसला किया है। कन्फेडरेशन के चंडीगढ़ में आयोजित मे दो दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुख्य अतिथि के तौर पर पधारे हरियाणा में भाजपा के सीएम मनोहर लाल खट्टर, हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस के सीएम सुखविन्दर सिंह और पंजाब में आप के सीएम सरदार भगवंत मान ने मीडियाकर्मियों की मांग को समर्थन करते हुए लागू करने का आश्वासन दिया है।

सोशल एंटरप्रेन्योर के रास्ते करोड़ों का हेरफेर करने वाले संजय शेरपुरिया को एसटीएफ ने किया गिरफ्तार

प्रखर लखनऊ/ गाजीपुर। कहते है कि सपने सिर्फ राजनीति ही नहीं दिखाती है, ठगों के दिखाए सपने भी बड़ी हसीन होते हैं । ठगों के सपनों की चहारदीवारी इतनी मजबूत होती है कि उसे भेदने में समाज को वर्षों का समय लग जाता है। तब तक ठग समाज में अपनी पैठ इतनी मजबूत कर लेता है कि उसके बारे में सही कहने की हिम्मत भी किसी में शेष नहीं रहती। मामला गाजीपुर के शेरपुर गांव से जुड़ा हुआ है जहां का रहने वाला संजय राय उर्फ संजय शेरपुरिया ने अपने आप को गुजरात के गांधीधाम का बड़ा कारोबारी बताकर गाजीपुर में अपनी राजनीतिक जमीन तैयार कर रहा था। कहते हैं ना कि कर्म आपका पीछा नहीं छोड़ता चाहे आप भूलोक में ही जाकर क्यों ना छुप जाएं? उत्तर प्रदेश की एसटीएफ ने संजय शेरपुरिया को लखनऊ के विभूति खंड इलाके से गिरफ्तार किया है। संजय पर आरोप है कि उसने संस्था बनाकर करोड़ों रुपए की ठगी की है और उसके ठगी का नेटवर्क सिर्फ उत्तर प्रदेश या गुजरात नहीं बल्कि पूरा भारत है। अपने आप को बीजेपी नेताओं का करीबी बताने वाला संजय पर आरोप है कि वह खुद को प्रधानमंत्री कार्यालय का करीबी बताने वाला वह शातिर है जिसने अपने घर में लगाई गई वाईफाई को प्रधानमंत्री आवास का नाम दे रखा है। साथ ही उसने खुद को सरकार का करीबी दिखाने के लिए कई मंत्रियों और बीजेपी के कई बड़े नेताओं के साथ अपनी फोटो भी एडिट करवा रखी है । उत्तर प्रदेश पुलिस एसटीएफ के हत्थे चढ़ा संजय शेरपुरिया खुद को समाजसेवी और सोशल एंटरप्रेन्योर बताकर समाज में सेवा के साथ अपना रुतबा भी मजबूत करता था । उसी

की आड़ में बड़े-बड़े फ्रॉड कर संजय ने गाजीपुर में अपनी राजनीतिक जमीन तैयार करने का बड़ा प्रयास किया । इसी कड़ी में रोजगार के नाम पर पिछले साल नंदगंज थाना अंतर्गत सहेड़ी ग्राम सभा में इसने एक बड़ा प्रोग्राम भी कराया था। उत्तर प्रदेश एसटीएफ के सूत्रों का कहना है कि संजय शेरपुरिया को पुख्ता सबूतों के आधार पर उठाया गया है । उसके ऊपर करोड़ों की ठगी करने का आरोप है । अरबों की संपत्ति बना चुका यह सफेदपोश खुद को समाज का हितेषी बताता रहा है। सारा खेल उसने समाज सेवा की आड़ में किया है ।गाजीपुर से लोकसभा के रास्ते संसद में पहुंचने का सपना पालने वाले संजय शेरपुरिया को यह आभास तक नहीं था कि उसने अपने निजी हित के लिए कितने लोगों को ठगने का काम किया है। मोहम्मदाबाद तहसील के शेरपुर का रहने वाले संजय ने खुद के लिए तमाम कहानियां गढ़ रखी है। जिसकी कहानी में जितने पात्र हैं उतनी कहानियां भी हैं। संजय ने अपने आसपास ऐसे लोगों का एक बड़ा मजबूत आधार तैयार कर रखा है जो उसके इस पूरे षड्यंत्र के साथी हैं । संजय ने अगरबत्ती उद्योग से लेकर मसाला उद्योग और लकड़ी बैंक से लेकर ठेला गाड़ी तक लोगों को उपलब्ध कराने का काम करता रहा है।

उसने बड़े ही शातिराना ढंग से एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया है जो सिर्फ और सिर्फ ठग और फरेब पर टिका हुआ है । अब आने वाला समय ही तय करेगा कि संजय शेरपुरिया की कहानी यहीं खत्म होती है या फिर इसके आगे कोई नया रास्ता निकलता है।

मलेरिया से बचने के लिए आसपास रखें साफ-सुथरा : दीपक शुक्ल

प्रखर भदोही। मलेरिया दिवस के अवसर पर लोगों को मलेरिया से बचाव के उपाय बताए गए। उपस्थित लोगों से कहा गया कि बचाव और सुरक्षा ही मलेरिया से बचने का आसान उपाय है। आसपास साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें और गंदा पानी न जमा होने पाए। भदोही जनपद के दुगार्गंज के सेमरा गांव में आयोजित कार्यक्रम में काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे। इस दौरान एजअह्युमन ट्रस्ट के अध्यक्ष दीपक शुक्ला ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मलेरिया गंदे पानी से फैलता है और इसके मच्छर गंदे पानी में है पैदा होते हैं। लापरवाही बस कभी-कभी यह जानलेवा और घातक हो जाता है। जहां हम रहते हैं वहां आसपास साफ-सफाई का विशेष ध्यान देना चाहिए। गंदी नालियों में पानी नहीं

जमा होना चाहिए। अगर कहीं जलजमाव है हमें वहां दवा या अन्य रासायनिक चीजों का छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मलेरिया से बचने के लिए आप रात में सोते समय मच्छरदानी में सोएं। मच्छरदानी से आप बिल्कुल स्वस्थ रहेंगे और स्वास्थ्य पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। संस्था की तरफ से तरफ से इस दौरान मौजूद लोगों को मच्छरदानी का वितरण किया गया। जरूरतमंदों को मच्छरदानी देने के बाद बताया गया कि आप रात में सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करेंगे तो मच्छर आपके पास नहीं आएंगे। इस दौरान संस्था ने तकरीबन 100 लोगों को मच्छरदानी वितरित किया गया।

वायरस संक्रमण रोकने को समाजसेवी ने कराया ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव

प्रखर दुल्लहपुर गाजीपुर। मलेरिया और डेंगू जैसे घातक बिमारियों के वायरस संक्रमण को रोकने के लिए बुधवार को क्षेत्र के धामूपुर गांव में सृजन फाउंडेशन ट्रस्ट सेवा संस्थान के अध्यक्ष युवा समाजसेवी अनिकेत चौहान के नेतृत्व में गांव की सभी गलियों एवं नालियों में ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव कराया गया। समाजसेवी अनिकेत चौहान ने बताया की गांव में मलेरिया डेंगू वायरस का संक्रमण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अभी तक स्वास्थ्य विभाग द्वारा गांव में दवा का छिड़काव नही कराए जाने से संक्रामक बिमारियों के प्रकोप का खतरा बढ़ने की आशंका जताई जा रही थी। इसलिए इस संक्रमण से बचने का एक मात्र उपाय यह भी है कि अपने घरों तथा आस पास की नालियों को साफ सुथरा रखें समय

समय पर दवाओं का घोल बनाकर छिड़काव करें। जिससे मच्छरों के प्रकोप से बचा जा सके, घरों से बाहर या खुले में सोने से पहले मच्छरदानी का प्रयोग जरूर करें। सहयोग में सफाई कर्मचारी धर्मेंद्र चौहान, धनंजय कुमार, छविनाथ आदि ने गांव धामूपुर के विभिन्न घरों व मोहल्लों सहित सभी राजस्व गावों में पानी में टोमीफास दवा का छिड़काव कर डेंगू व मलेरिया के प्रति लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि ठहरे हुए पानी में टोमीफास दवा का छिड़काव करने के साथ ही छतों पर पड़े लोगों के कूलर, रेफ्रिजरेटर, गमले और कचरे के सामान से भी मच्छरों से उत्पन्न होने वाली बिमारी का खतरा बना रहता है।समय समय पर पानी को साफ करते रहना चाहिए। ताकि डेंगू और मलेरिया के मच्छर पनप न सकें। इस मौके पर गांव के गुड्डू, राजकुमार, राजू, अंकित, गोपाल आदि मौजूद थे।

गंगा पुष्कर महोत्सव में आये व्यक्ति को आई गम्भीर चोट, एनडीआरएफ की मेडिकल टीम ने किया उपचार

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। गंगा पुष्कर महोत्सव में दक्षिण भारत से श्रद्धालु बड़ी तादाद में वाराणसी पहुँच रहें हैं गंगा घाटों पर स्नान एवं पूजन आदि के लिए लोगों की संख्या सामान्य मौकों से अधिक बढ़ गई है जिसके चलते घाटों पर एनडीआरएफ वाराणसी की अतिरिक्त टीमें उप महानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के निर्देशन में तैनात की गई हैं। बुधवार को गंगा पुष्कर महोत्सव के दौरान एक व्यक्ति को नारद घाट की सीढ़ियों से पैर फिसलने के कारण सर एवं पीठ में गंभीर चोटें आ गई और सर से खून बहने लगा। घटना की सूचना मिलते ही एनडीआरएफ के बचाव कर्मी मेडिकल टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और तत्काल रक्त स्त्राव को रोक कर ड्रेसिंग और बेन्डेज कर दिया गया व्यक्ति का नाम प्रसाद शर्मा आयु 73 वर्ष, जिला रंगारेड्डी, तेलंगाना के रहने वाले हैं। एनडीआरएफ द्वारा दिए गए प्राथमिक उपचार के बाद व्यक्ति की हालत बिलकुल ठीक है। गंगा पुष्कर महोत्सव में दक्षिण भारतीय श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की सुविधा- सुरक्षा को देखते हुए एनडीआरएफ के बचावकर्मी तेलुगू भाषा के माध्यम से घाटों पर स्नान एवं अन्य गतिविधियों के लिए आए लोगों को नियंत्रण कक्ष और मोटर बोट के माध्यम से आवश्यक निर्देश दे रहे हैं इसके साथ ही दशाश्वमेध घाट पर एनडीआरएफ का निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगातार लोगों को मेडिकल सुविधा भी प्रदान कर रहा है।

बॉस बल्ली के सहारे बिजली जला रहे उपभोक्ताओं ने लगाई गुहार

प्रखर पिंडरा वाराणसी। पिंडरा विद्युत उपकेंद्र से सम्बद्ध बेलवा बड़ेपुर स्थित एक पुरवे में विद्युतीकरण न होने से आज भी बॉस बल्ली व केबल के सहारे बिजली जलाने को विवश है। जिससे क्षुब्ध ग्रामीणों ने बुधवार को एसडीएम से गुहार लगाई। एसडीएम पिंडरा अंशिका दीक्षित को दिए प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया कि दीनदयाल उपाध्याय विद्युतीकरण योजना के तहत गावो में विद्युतीकरण किया गया लेकिन 100 मीटर दूरी पर चार कनेक्शन वर्षो पहले से लेकर बॉस बल्ली व केबल के सहारे विद्युत जलाने को विवश हैं।जबकि उस समय पोल गिरा भी था लेकिन विद्युत कर्मी उठा ले गए। एसडीएम ने ग्रामीण विनय कुमार, रामजियावन, संजू व संतोष व राजेश पाल की शिकायत पर एसडीओ को उक्त पुरवे में विद्युतीकरण के निर्देश दिया।

एसबी पब्लिक इंटरमीडिएट कालेज के विद्यार्थियों ने बोर्ड परीक्षा में लहराया परचम

हाई स्कूल में संध्या यादव ने 94.50% अंक विद्यालय में प्रथम स्थान तथा इंटर में छात्र श्रेयश जायसवाल ने 95% अंक हासिल कर जिले में पांचवां स्थान किया हासिल

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। एसबी पब्लिक इंटर मीडिएट कालेज चौका, मुर्दहाँ वाराणसी के प्रधानाचार्य संजीव सिँह ने मीडिया से बताया की बोर्ड परीक्षा 2023 के परीक्षा परिणाम लगभग 100% बना है जिसमें की हाई स्कूल की छात्रा संध्या यादव ने 94.50% अंको के साथ विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया है तथा इंटर के छात्र श्रेयश जायसवाल ने 95% अंक हासिल कर जिले में पांचवां स्थान हासिल किया है। प्रबंधक रमाशंकर सिंह एवं प्रधानाचार्य संजीव सिंह ने दोनो बच्चों को माल्यार्पण एवं मिठाई खिलाकर और मोमेंटो देकर सम्मान किया। सम्मान समारोह के बाद एसबी पब्लिक इण्टरमीडिएट कालेज के हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट के छात्र छात्राओं ने जो अच्छे अंकों के साथ अपने कालेज का नाम रोशन किया है कालेज के छात्र - छात्राओं को कालेज के टीचर और प्रधानाचार्य संजीव सिँह और प्रबन्धक रमाशंकर सिँह ने हमेशा इसी तरह अच्छे से पढ़ाई करने

और कालेज और अपने माँ पिताजी का नाम रौशन करने का दिया आशीर्वाद। एसबी इण्टरमीडिएट कालेज के प्रधानाचार्य संजीव सिँह ने बताया की हमलोग अपने कालेज में पढ़ने वाले गरीब छात्र - छात्राओं की पढ़ाई सरलता से हो सके इसका विशेष ख्याल रखते है और बहुत हीं कम शुल्क में बच्चों की पढ़ाई हो सके इसके लिये बच्चों से और स्कूल कालेज की तुलना बहुत हीं कम शुल्क लिया जाता है जिसमें की हिन्दी और इंगलिश मीडियम के बच्चों को कम शुल्क लिया जाता है जिससे बच्चों को पढ़ाई करने में सुविधा हो सके।

स्कूल चलो अभियान को सफल बनाने हेतु ईट भट्ठो, मलिन बस्तियो व आंगनबाड़ी केंद्रो आदि पर चला विशेष नामांकन अभियान

प्रखर वाराणसी। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा अरविन्द कुमार पाठक के निर्देशन मे स्कूल चलो अभियान के अंतर्गत हर बच्चे का स्कूलो मे नामांकन सुनिश्चित करने तथा परिषदीय विद्यालयो मे अधिक से अधिक नामांकन करने की दृष्टि से 24 व 25 अप्रैल को चोलापुर के सभी ग्राम सभा मे नामांकन महा अभियान चलाया गया। इस अभियान मे गांव के प्रत्येक बस्ती व प्रत्येक घर तक शिक्षको ने संपर्क कर बच्चो का नामांकन किया। हर बार की तरह इस बार भी ईट भट्ठे मलिन बस्ती आदि के श्रमिक वर्ग के बच्चो के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया गया। इसी क्रम मे कम्पोजिट विद्यालय चोलापुर पर नामांकन महा अभियान खंड शिक्षा अधिकारी चोलापुर ब्रजेश राय के दिशा-निर्देश मे तथा राज्य संदर्भ समूह सदस्य डा कुंवर भगत सिंह संकुल शिक्षक ज्योति प्रकाश व प्रधानाध्यापक लालजी के नेतृत्व मे चलाया गया। अभियान के

दौरान घर घर संपर्क किया गया जिसमे ईट भट्ठो पर कार्य करने वाले मजदूरो के बच्चो के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया गया। इस दौरान राज्य संदर्भ समूह सदस्य डा कुवर भगत सिंह ने गाव मे उपस्थित अभिभावको व जन प्रतिनिधियो के समूह को बेसिक शिक्षा विभाग मे आये परिवर्तन तथा विगत दिनो मे प्राप्त उपलब्धियो के विषय मे बताया तथा अधिक से अधिक नामांकन कराने के लिए प्रेरित करते हुआ कहा कि आज परिषदीय विद्यालय निजी विद्यालयो से किसी मामले मे पीछे नही है यहा हर सुविधाये उपलब्ध है। संकुल शिक्षक ज्योति प्रकाश ने अभिभावकों को सरकारी विद्यालयो मे आये बदलाव तथा उच्च स्तरीय व्यवस्थाओ के विषय मे विस्तार से बताया। इस दौरान अभिभावको व बच्चों में सरकारी स्कूलों में नामांकन कराने के प्रति उत्साह देखा गया। इस अभियान मे कई बच्चो का नामांकन विद्यालय मे किया गया। नामांकन अभियान में राज्य संदर्भ समूह सदस्य डा कुंवर भगत सिंह संकुल शिक्षक ज्योति प्रकाश के साथ प्रधानाध्यापक लालजी राम, शिक्षक दयाराम, अनिल सिंह, रिनू मौर्या, शमा परवीन आदि लोगों ने गाव में भ्रमण कर नामांकन अभियान मे सहयोग दिया।

मेकअप एंड हेयरस्टाइल वर्कशॉप एवं मास्टर क्लास अवार्ड शो का हुआ आयोजन

इंटरनेशनल मेकअप आर्टिस्ट भावना सिंह ने दिया आधुनिक मेकअप के बारे में जानकारी

प्रखर पूर्वांचल वाराणसी। ब्यूटी मावेन द्वारा मंगलवार को कैंट स्थित होटल प्लाजा इन में मेकअप एंड हेयरस्टाइल वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य बनारस में भी एडवांस मेकअप टेक्नोलॉजी को प्रारंभ कर लोगो की स्किन को सुरक्षित करना है। कार्यक्रम के आयोजन में विभिन्न जिलों से 100 से ज्यादा मेकअप आर्टिस्ट ने प्रतिभाग किया। इस वर्कशॉप में दिल्ली से आई इंटरनेशनल मेकअप आर्टिस्ट भावना सिंह ने रॉयल ब्राइडल लुक,बोल्ड कॉकटेल लुक,एयर ब्रश

मेकअप एवं लेटेस्ट प्रोडक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी दी,सहयोगी अर्जुन सिंह ने लेटेस्ट हेयर स्टाइल के तरीके समझाए। भावना सिंह इसके पूर्व पूरे भारत में ढाई सौ से ज्यादा वर्कशॉप करा चुकी है। आयोजन सचिव सुमन सिंह ने बताया कि बनारस में इस प्रकार का ये पहला वर्कशॉप है, समापन में 20 मेकअप आर्टिस्ट को मास्टर क्लास अवार्ड देकर एवं इस वर्कशॉप को आयोजित करने में विशेष योगदान के लिए एस के इंटरप्राइजेज के निदेशक शानू को सम्मानित किया गया। वर्कशॉप का संचालन अंजली सिंह ने एवं धन्यवाद प्रकाश गणेश सिंह ने किया।

संक्षिप्त खबरें

श्री आदित्य नारायण सिंह इंटरमीडिएट कॉलेज के बच्चों ने मारी बाजी

हाईस्कूल व इंटर में अच्छा नंबर लाकर विद्यालय व जिले का नाम किया रोशन

प्रखर वाराणसी। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा कक्षा 10वीं एवं 12वीं वर्ष 2023 का परिणाम घोषित किया गया जिसमें श्री आदित्य नारायण सिंह इण्टरमीडिएट कालेज महेशपुर धरसौना चोलापुर वाराणसी का कक्षा 10वीं एवं कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय के कक्षा 10वीं एवं 12वीं के निम्नलिखित बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जिसमे कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम 100% रहा। 1. देवेश विश्वकर्मा (93.%) 2. मृत्युंजय विश्वकर्मा(87.83%) 3. आदर्श पाल (86.8%) 4. राहुल यादव (85.66%) 5. अंतिमा वर्मा (85.5%) 6. नीलू पटेल (85%) 7. अंजली पाल(84.16%) 8. विपीन शर्मा (83.66%) हासिल किये। वही कक्षा 12 का परीक्षा परिणाम (100%) 1 दीक्षा पाण्डेय (90%) 2 इमरान अली (88.60%) 3 श्रृष्टि श्रीवास्तव(84.40%) 4 प्रतिक्षा पटेल(79.20%) 5 आरती पाल (78.80%) 6 सत्यम प्रजापति 7 विजय कन्नौजिया (78.%) 8 वंदना पाल (78.80%) रही ।विद्यालय के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य ने समस्त अभिभावको शिक्षकों तथा कर्मचारियों को धन्यवाद दिया तथा छात्र एवं छात्राओं को बधाई दिया एवं उज्जवल भविष्य की कामना किया।

यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम में आजमगढ़ के स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज के बच्चों ने लहराया परचम

प्रखर आजमगढ़। हाल ही में हुए उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा बोर्ड परीक्षा के घोषित परिणाम में आजमगढ़ जिले के उचहुवा स्थित स्वामी विवेकानंद इंटर कालेज के बच्चों ने जिले में अपना नाम रोशन किया है। बताते चलें की उचहुवा बाजार से लगभग तीन सौ मीटर की दूरी पर दक्षिण में स्थित स्वामी विवेकानंद इंटर कालेज पढ़ाई के मामले में अव्वल दर्जे का विद्यालय है।जिसमें पढ़ने वाले होनहार विद्यार्थी कक्षा दसवीं में अर्पित कुमार ने 600 में से 569 अंक प्राप्त करके 94.83 प्रतिशत के साथ विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।वहीं दूसरे स्थान पर सोनू कुमार 554 अंक प्राप्त कर 92.33 प्रतिशत के साथ विद्यालय में दूसरा स्थान तथा अंकित यादव 532 अंक प्राप्त करके 88.67 प्रतिशत के साथ विद्यालय में तीसरा स्थान हासिल किया है । विद्यालय के प्रबंधक श्री लल्लन यादव ने बताया की पिछड़े गांव का रहने वाला छात्र अर्पित पढ़ने में बहुत अच्छा है, और हमारे यहां के कुशल शिक्षकों के द्वारा सुदृढ़ता से शिक्षा दिए जाने के करना यह संभव हो पाया है।उन्होंने कहा कि हम और मेरा विद्यालय परिवार इन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

कार्मिकों की सुविधा के लिए आवश्यक जानकारी देने वाले साइनेज उचित स्थान पर लगाये जायें

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। जिलाधिकारी जिला निर्वाचन अधिकारी एस राजलिंगम ने अपर पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) एस.चन्नप्पा, मुख्य विकास अधिकारी, उप जिला निर्वाचन अधिकारी, विभिन्न निर्वाचन कार्यों के नोडल अधिकारी सहित नगर निगम तथा पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों संग पोलिंग पार्टियों को रवाना करने के लिए निर्धारित स्थल पुलिस लाइन मैदान, एलटी कालेज परिसर व टैफिक पुलिस लाइन का निरीक्षण किया` बसों को सुव्यवस्थित रूप से खड़ा करने के लिए नक्शा तैयार करने का निर्देश दिया गया उन्होंने कहा कि परिसर में सभी खाली स्थानों का उपयोग, जहां पर 30 से 40 सीटर बसों का संचालन सुगमता से हो सके, किया जाये इसके अलावा कार्मिकों व अधिकारियों की बाइक व गाड़ियां खड़ी करने के लिए भी स्थल चिन्हित किये गये` कुछ स्थलों को समतल करने और झाड़ियां आदि साफ कराने के लिए पीडब्ल्यूडी व नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया गया` पुलिस लाइन से बसों को मुख्य मार्ग पर निकलने के लिए परिसर की बाउंड्री को उचित स्थान पर अस्थाई रूप से खोला जायेगा` कार्मिकों को ड्यूटी आवंटन और ईवीएम मशीन वितरण के लिए काउंटर बनाने हेतु सुविधाजनक स्थान चिन्हित किए जाने के साथ वहीं पर कार्मिकों को जोंन, वार्ड, बूथ से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी के साइनेज लगाने का निर्देश दिया `पहड़िया मण्डी में मतगणना से सम्बन्धित तैयारियों का निरीक्षण करते हुए स्ट्रांग रूम देखा जहां पर पोल्ड ईवीएम मशीने कड़ी सुरक्षा में रखी जायेंगी उन्होंने स्ट्रांग रूम के रोशनदान और अन्य पांच शटर गेट प्लाईवुड लगा कर बंद किये जाने हेतु निर्देशित किया सौ वार्ड के लिए सौ टेबल पहड़िया मण्डी में ईवीएम जमा करने के लिए लगाये जायेंगे। मेयर और पार्षदों की मतगणना हेतु की जा रही व्यवस्थाओं की जानकारी उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा दी गयी।

नमो घाट के सिक्योरिटी के एमडी ने किया निरीक्षण

प्रखर वाराणसी। एमडी बिनोद कुमार पांडेय ने नमो घाट का निरीक्षण किया तथा सारे सिक्योरिटी सुपरवाइजर व गार्ड को निर्देशित किया कि पर्यटक स्थल है यहा की सुरक्षा में कोई चुक नहीं होनी चाहिए। सभी गार्ड सुपरवाइजर के निर्देशन में कार्य करें। यदि कोई गार्ड सुपरवाइजर का बात नहीं मानता है तो उसको दस दिन के लिए ड्यूटी से बाहर कर दिया जाएगा यदि दस दिन के बाद भी उस गार्ड में सुधार नहीं हुआ तो उसको परमानेंट के लिए बाहर कर दिया जाए।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं